

॥ नवग्रह स्तोत्रम् ॥

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियंगुकलिकारयामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषां मारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन-	17 December 2021 (Friday)	सांपातिक काल-	22:55:34 hrs
जन्म समय-	05:31:22PM	सूर्योदय-	07:10:19AM
जन्म स्थान-	New Delhi , INDIA	सूर्यास्त-	05:24:04PM
रेखांश-	077:13:00E	अयनांश-	N.C.Lahiri (024:09:50)
अक्षांश-	028:39:00N	विक्रम संवत्-	2078
समयक्षेत्र-	-05:30:00 hrs	शक संवत्-	1943
समय संशोधन-	00:00:00 hrs	संवत्सर-	प्लव
जीएमटी. समय-	12:01:22 hrs	संवत्सर अधिपति-	पितर
स्थानीय समय संस्कार-	-00:21:08 hrs		
स्थानीय समय-	17:10:14 hrs		

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	मिथुन
लग्नाधिपति :	बुध
राशि (चन्द्रमा) :	वृष
राशिपति :	शुक्र
नक्षत्र :	रोहिणी
नक्षत्रपति :	चन्द्र
नक्षत्र चरण :	2
पाया :	लौह
ऋतु :	हेमन्त
मास :	मार्गशीर्ष
पक्ष :	शुक्ल
तिथि :	चतुर्दशी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता
तिथि पति :	शुक्र
करण :	गरिज
करण श्रेणी :	चर
करणपति :	वासुदेव
गण :	मनुष्य
वर्ण :	वैश्य
योनि :	सर्प (पु०)
सूर्य सिद्धान्त योग :	साध्य
रज्जु :	कंठ
वश्य :	चतुश्पद
तत्त्व :	पृथ्वी
तत्त्वाधिपति :	बुध
नाडी पद :	मध्य
नाडी :	अन्त
विहग :	भार्यक
वेध :	स्वाती
आद्याक्षर :	वा

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	कन्या
मास :	अग्रहण
तिथि :	5,10,15
वार :	शनिवार
नक्षत्र :	हस्ता
प्रहर :	4
लग्न :	वृष
सूर्य सिद्धान्त योग :	सुकर्मन
करण :	शकुनि
शासक ग्रह (क० म० पद्धति के अनुसार)	
वारेण :	शुक्र
लग्नेश :	बुध
लग्न नक्षत्र स्वामी-	मंगल
लग्न उप स्वामी :	शुक्र
चन्द्र राशि स्वामी :	शुक्र
चन्द्र नक्षत्र स्वामी त्र	चन्द्र
चन्द्र उप स्वामी :	शुक्र
फॉरच्युना(क० प०)	225:12:54
अयनांशं (क० प०) :	024:04:02

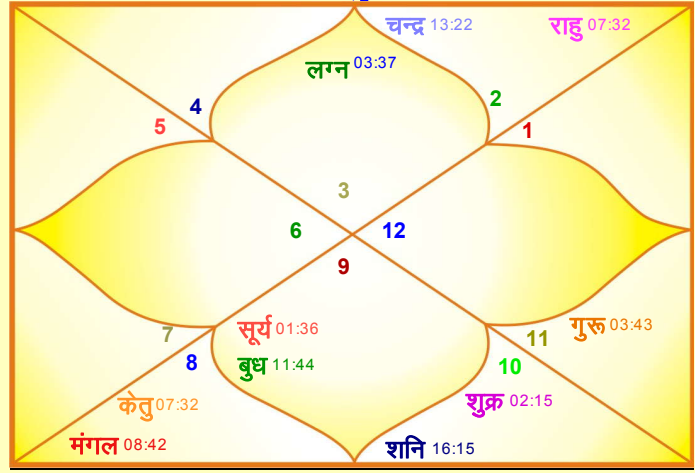
पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि-	धनु
देकानेट-	3
फेस :	VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	मिथुन
लग्न (पाश्चात्य) :	मिथुन
सूर्य का अवधिपति :	मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति :	गुरु
अवधि बदलाव :	(मंगल, गुरु), (गुरु, मंगल)

ग्रह स्थिति

लग्न	मिथुन	03:37:02	मृगशिर (४)
सूर्य	धनु	01:36:05	मूल (९)
चन्द्र	वृष	13:22:00	रोहिणी (२)
मंगल	वृश्चिक	08:42:09	अनुराधा (२)
बुध	धनु	11:44:56	मूल (४)
गुरु	कुम्भ	03:43:57	धनिष्ठा (४)
शुक्र	मकर	02:15:16	उत्तराषाढ (२)
शनि	मकर	16:15:22	श्रवण (२)
राहु व	वृष	07:32:53	कृत्तिका (४)
केतु व	वृश्चिक	07:32:53	अनुराधा (२)
हर्षल व	मेष	17:05:32	भरणी (२)
नेपच्यून	कुम्भ	26:19:01	पूर्वाभाद्रपद (२)
प्लूटो	मकर	01:19:35	उत्तराषाढ (२)

लग्न कुण्डली



लग्न आधारित रत्न

भाग्यवर्धक रत्न

नीलम

भाग्यवर्धक एवं धनदायक रत्न

पुखराज

संतान, शिक्षा एवं ख्यातिदायक रत्न

हीरा

इन रत्नों को धारण करने से बचें

मूंगा और माणिक



नीलम



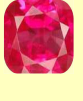
पुखराज



हीरा

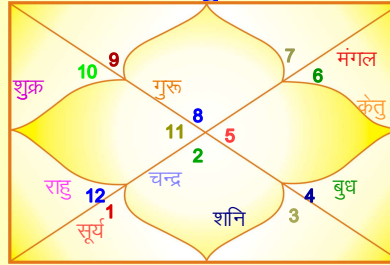


मूंगा

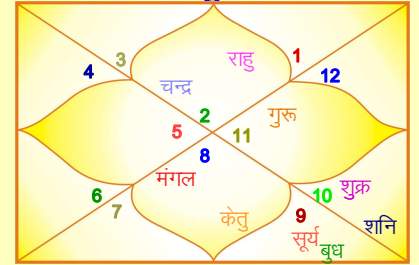


माणिक

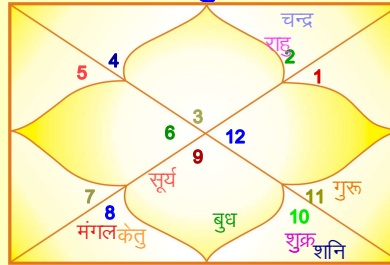
नवांश कुण्डली



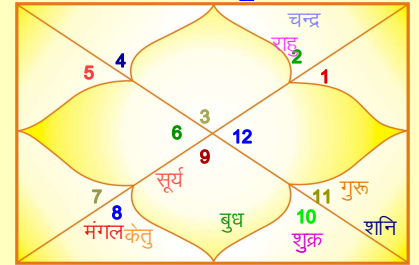
चन्द्र कुण्डली



गोचर कुण्डली



भाव चलित कुण्डली



नवतारा चक्र

जन्म	रोहिणी	क्षेम	पुनर्वसु	निधन	मघा
सम्पत	मृगशिर	प्रत्यरि	पुष्य	मित्र	पूर्वाफाल्गुनी
विपत	आर्द्रा	साधक	आश्लेषा	अतिमित्र	उत्तराफाल्गुनी

विंशोत्तरी दशा

गेय दशा : चन्द्र (7 व 5 मा 21 दि)

दशा	अवधि	से — तक
चन्द्र दशा	7 व 5 मा 21 दि	17:12:2021 -- 09:06:2029
मंगल दशा	7 व 0 मा 0 दि	09:06:2029 -- 08:06:2036
राहु दशा	18 व 0 मा 0 दि	08:06:2036 -- 09:06:2054
गुरु दशा	16 व 0 मा 0 दि	09:06:2054 -- 09:06:2070
शनि दशा	19 व 0 मा 0 दि	09:06:2070 -- 09:06:2089
बुध दशा	17 व 0 मा 0 दि	09:06:2089 -- 09:06:2106
केतु दशा	7 व 0 मा 0 दि	09:06:2106 -- 09:06:2113
शुक्र दशा	20 व 0 मा 0 दि	09:06:2113 -- 09:06:2133
सूर्य दशा	6 व 0 मा 0 दि	09:06:2133 -- 09:06:2139

चन्द्र दशा

17:12:2021 — 09:06:2029

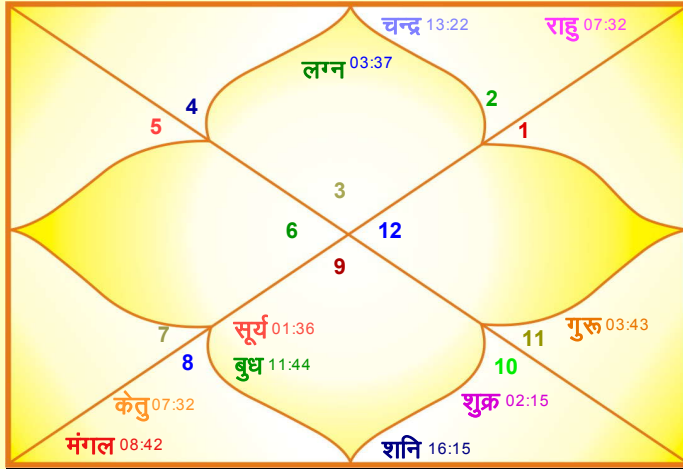
अन्तर्दशा	आरम्भ	प्रत्यन्तर्दशा	आरम्भ
चन्द्र			
मंगल			
राहु	17:12:2021		
गुरु	09:05:2022		
शनि	08:09:2023		
बुध	09:04:2025		
केतु	08:09:2026		
शुक्र	09:04:2027		
सूर्य	08:12:2028		

भाव मध्य			भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
1	मिथुन	003:37:02	वृष	16:04:32	मिथुन	16:04:32
2	कर्क	028:32:01	मिथुन	16:04:32	कर्क	10:59:30
3	सिंह	023:26:59	कर्क	10:59:30	सिंह	05:54:29
4	कन्या	018:21:58	सिंह	05:54:29	कन्या	05:54:29
5	तुला	023:26:59	कन्या	05:54:29	तुला	10:59:30
6	वृश्चिक	028:32:01	तुला	10:59:30	वृश्चिक	16:04:32
7	धनु	003:37:02	वृश्चिक	16:04:32	धनु	16:04:32
8	मकर	028:32:01	धनु	16:04:32	मकर	10:59:30
9	कुम्भ	023:26:59	मकर	10:59:30	कुम्भ	05:54:29
10	मीन	018:21:58	कुम्भ	05:54:29	मीन	05:54:29
11	मेष	023:26:59	मीन	05:54:29	मेष	10:59:30
12	वृष	028:32:01	मेष	10:59:30	वृष	16:04:32

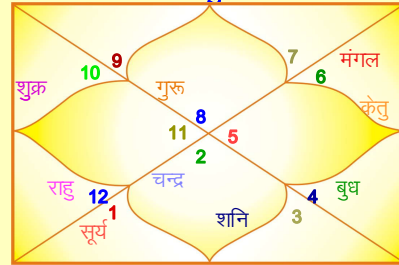
ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र - चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न	मिथुन	बुध 03:37:02	मृगशिरा.4	मंगल
☉	सूर्य	धनु	गुरु 01:36:05	मूल.1	केतु	दारा	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
☾	चन्द्र	वृष	शुक्र 13:22:00	रोहिणी.2	चन्द्र	अमात्य	मूलत्रिकोन	दुष्ट ग्रह के साथ
♂	मंगल	वृश्चिक	मंगल 08:42:09	अनुराधा.2	शनि	मात्रि	स्वग्रही	ग्रसित
♃	बुध	धनु	गुरु 11:44:56	मूल.4	केतु	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♄	गुरु	कुम्भ	शनि 03:43:57	धनिष्ठा.4	मंगल	अपत्या	तटस्थ भाव में	---
♃	शुक्र	मकर	शनि 02:15:16	उत्तराषाढ़.2	सूर्य	ज्ञाति	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♄	शनि	मकर	शनि 16:15:22	श्रवण.2	चन्द्र	आत्म	स्वग्रही	शुभ ग्रह के साथ
♅	राहु व	वृष	शुक्र 07:32:53	कृत्तिका.4	सूर्य	...	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
♆	केतु व	वृश्चिक	मंगल 07:32:53	अनुराधा.2	शनि	...	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♁	हर्षल व	मेष	मंगल 17:05:32	भरणी.2	शुक्र	...	---	---
♆	नेपच्यून	कुम्भ	शनि 26:19:01	पूर्वाभाद्रपद.2	गुरु	...	---	शुभ ग्रह के साथ
♆	प्लूटो	मकर	शनि 01:19:35	उत्तराषाढ़.2	सूर्य	...	---	शुभ ग्रह के साथ

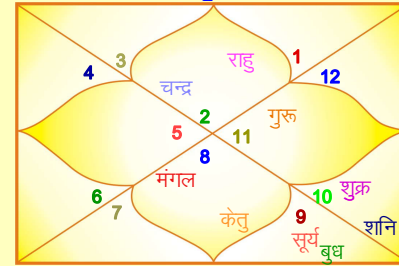
लग्न कुण्डली



नवांश कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

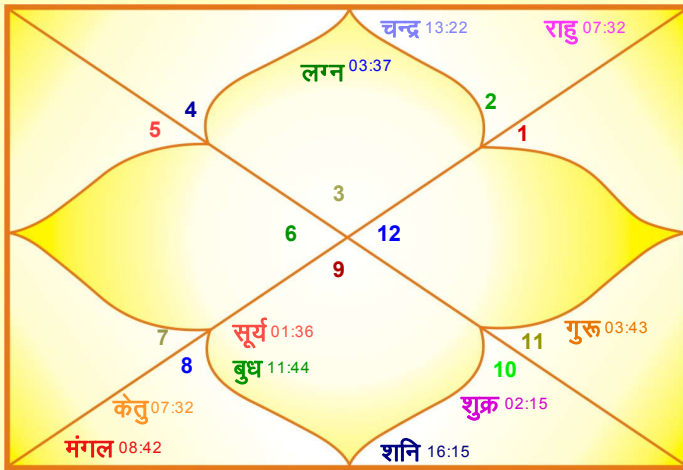
	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	178	340	155	188	240	209	223	334	154	313	263	208
सूर्य	182	---	162	337	10	62	31	45	156	336	135	85	30
चन्द्र	20	198	---	175	208	260	229	243	354	174	334	283	228
मंगल	205	23	185	---	33	85	54	68	179	359	158	108	53
बुध	172	350	152	327	---	52	21	35	146	326	125	75	20
गुरु	120	298	100	275	308	---	329	343	94	274	73	23	328
शुक्र	151	329	131	306	339	31	---	14	125	305	105	54	359
शनि	137	315	117	292	325	17	346	---	111	291	91	40	345
राहु	26	204	6	181	214	266	235	249	---	180	340	289	234
केतु	206	24	186	1	34	86	55	69	180	---	160	109	54
हर्षल	47	225	26	202	235	287	255	269	20	200	---	309	254
नेपच्यून	97	275	77	252	285	337	306	320	71	251	51	---	305
प्लूटो	152	330	132	307	340	32	1	15	126	306	106	55	---

0,1,359	कन्जक्वर्शन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181	अपोजीसन

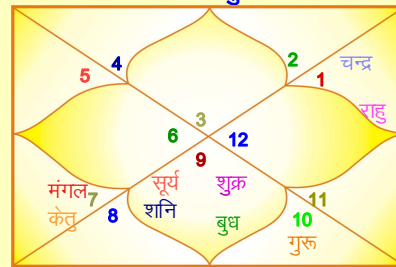
भाव स्फूट और कुण्डली

भाव संख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	मिथुन	003:37:02	वृष	16:04:32	मिथुन	16:04:32
II	कर्क	028:32:01	मिथुन	16:04:32	कर्क	10:59:30
III	सिंह	023:26:59	कर्क	10:59:30	सिंह	05:54:29
IV	कन्या	018:21:58	सिंह	05:54:29	कन्या	05:54:29
V	तुला	023:26:59	कन्या	05:54:29	तुला	10:59:30
VI	वृश्चिक	028:32:01	तुला	10:59:30	वृश्चिक	16:04:32
VII	धनु	003:37:02	वृश्चिक	16:04:32	धनु	16:04:32
VIII	मकर	028:32:01	धनु	16:04:32	मकर	10:59:30
IX	कुम्भ	023:26:59	मकर	10:59:30	कुम्भ	05:54:29
X	मीन	018:21:58	कुम्भ	05:54:29	मीन	05:54:29
XI	मेष	023:26:59	मीन	05:54:29	मेष	10:59:30
XII	वृष	028:32:01	मेष	10:59:30	वृष	16:04:32

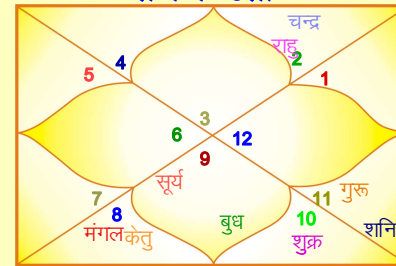
भाव कुण्डली



भाव चलित कुण्डली



लग्न कुण्डली



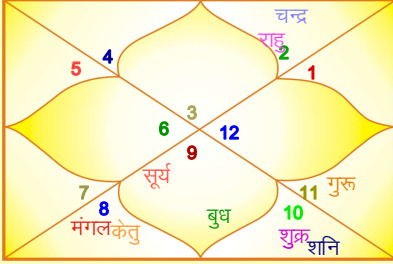
ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	178	340	155	188	240	209	223	334	154	313	263	208
दूसरा भाव	153	315	130	163	215	184	198	309	129	289	238	183
तीसरा भाव	128	290	105	138	190	159	173	284	104	264	213	158
चादिर	103	265	80	113	165	134	148	259	79	239	188	133
पाँचवा भाव	68	230	45	78	130	99	113	224	44	204	153	98
छठवा भाव	33	195	10	43	95	64	78	189	9	169	118	63
सातवा भाव	358	160	335	8	60	29	43	154	334	133	83	28
आठवा भाव	333	135	310	343	35	4	18	129	309	109	58	3
नवा भाव	308	110	285	318	10	339	353	104	284	84	33	338
एम सी	283	85	260	293	345	314	328	79	259	59	8	313
ग्यारहवा भाव	248	50	225	258	310	279	293	44	224	24	333	278
बाह्रवा भाव	213	15	190	223	275	244	258	9	189	349	298	243

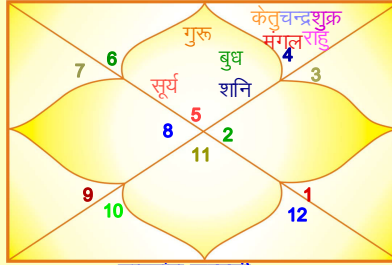
0,1,359 0,9,३५६ कन्जक्शेन 59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल 89,90,91,269,270,271 स्कवायर
 119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं 179,180,181 अपोजीसन

षोडश वर्ग

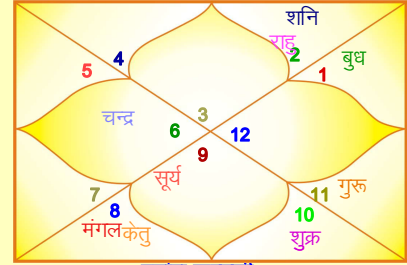
लग्न(जन्म) कुण्डली



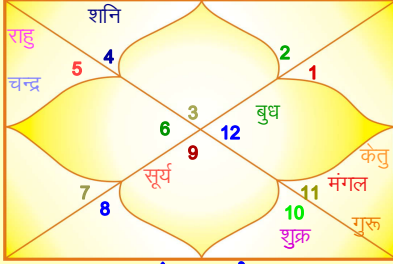
होरा कुण्डली



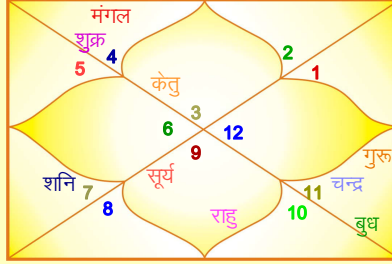
द्रेष्काण कुण्डली



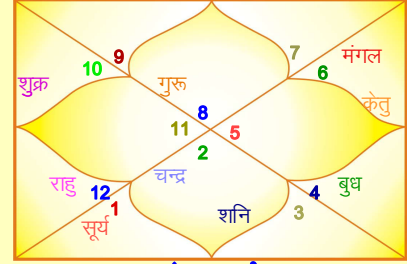
चतुर्थांश कुण्डली



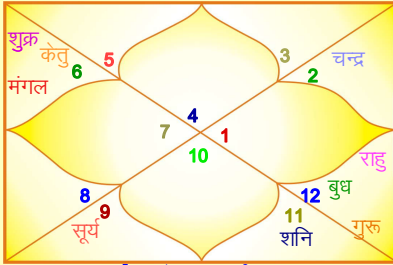
सप्तमांश कुण्डली



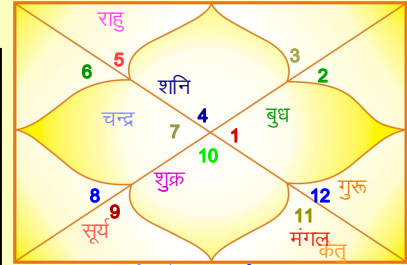
नवांश कुण्डली



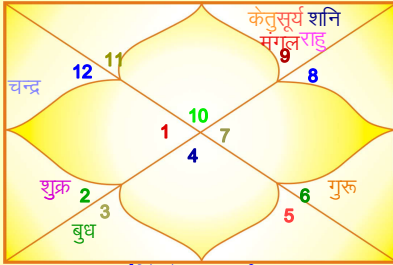
दशमांश कुण्डली



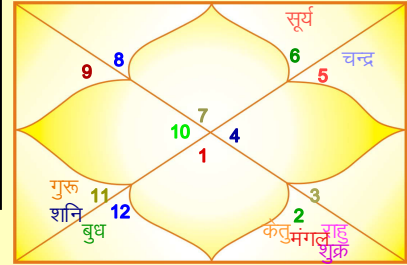
द्वादशांश कुण्डली



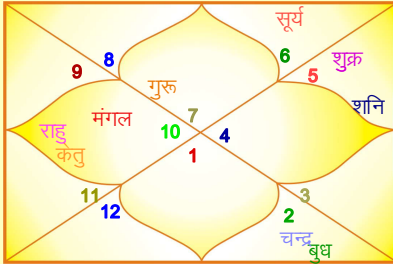
षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली



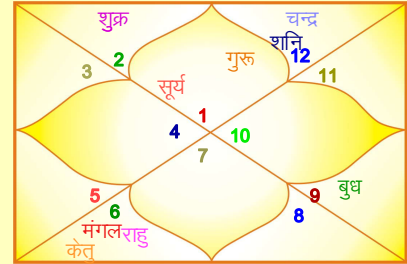
चतुर्विंशांश कुण्डली



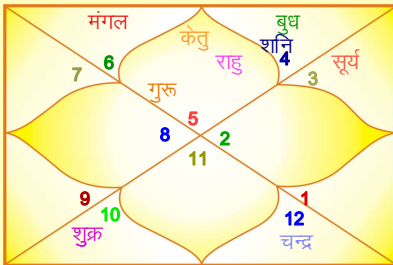
सप्तविंशांश कुण्डली



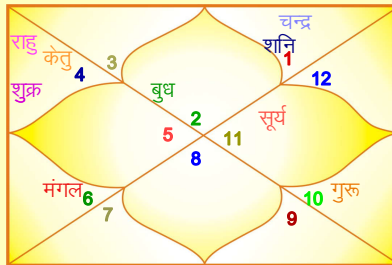
त्रिंशांश कुण्डली



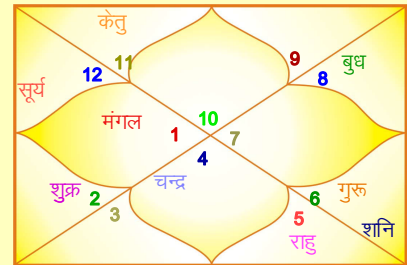
खवेदांश कुण्डली



अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठांश कुण्डली



- D1 मुख्य कुण्डली, सभी मूद्रों के लिए
- D2 धन दौलत के लिए
- D3 सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
- D4 भाग्य और रिहायशी मकान
- D7 संतान और उनकी संतान
- D9 जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
- D10 करियर और किसी भी कार्य में सफलता
- D12 माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
- D16 वाहन से संबंधित बातें
- D20 अध्यात्मिक रुझान
- D24 शिक्षा, ज्ञान और समझ
- D27 ताकत और दुर्बलता
- D30 दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्गति
- D40 शूभ-अशूभ घटनाएं
- D45 सभी मूद्रों के लिए
- D60 सभी मूद्रों के लिए

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.20	56.54	33.57	31.08	09.58	31.75	31.25
सप्त वर्ग बल	165.00	108.75	105.00	84.38	142.50	63.75	76.88
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	00.00	15.00	15.00	30.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	15.00	15.00	60.00	15.00	30.00	30.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	15.00	00.00	15.00
स्थान बल	287.20	210.29	168.57	205.46	197.08	155.50	153.12
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	174.06	158.12	175.59	124.52	119.44	116.92	159.50
दिग बल	34.41	28.33	26.78	02.71	20.04	15.37	45.79
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	98.32	56.67	89.26	07.74	57.25	30.74	152.62
नतोन्नत बल	33.83	26.17	26.17	33.83	00.00	33.83	26.17
पक्ष बल	06.08	53.92	06.08	06.08	53.92	53.92	06.08
त्रिभाग बल	00.00	60.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00
होरा बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	02.60	03.55	58.62	14.25	03.41	51.54
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	40.21	142.69	65.80	98.53	188.17	91.16	143.78
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	35.90	142.69	98.21	87.98	168.01	91.16	214.60
चेष्टा बल	00.30	53.92	30.00	00.00	30.00	45.00	45.00
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	179.74	75.00	00.00	60.00	150.00	112.50
नैसर्गिक बल	60.00	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	08.57
द्रिक बल	12.99	-12.58	03.60	11.07	-06.40	05.86	00.23
कुल षड्बल	435.11	474.08	311.89	343.49	463.17	355.75	396.50
षड्बल (रूप में)	7.25	7.90	5.20	5.72	7.72	5.93	6.61
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	111.57	131.69	103.96	81.78	118.76	107.80	132.17
तुलनात्मक स्थिति	3	1	7	6	2	5	4
इष्ट फल	04.93	55.22	31.73	00.00	16.95	37.80	37.50
कष्ट फल	55.07	04.78	28.27	60.00	43.05	22.20	22.50
दिप्ति बल	100.00	53.92	07.63	21.74	20.71	39.13	14.88

भावबल

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	343.49	343.49	474.08	435.11	343.49	355.75	463.17	463.17	396.50	396.50	463.17	311.89
भाव दिग्बल	60.00	40.00	10.00	30.00	20.00	50.00	00.00	20.00	20.00	00.00	50.00	40.00
भाव दृष्टि बल	20.10	-01.05	07.27	00.48	04.18	16.18	17.52	03.17	00.06	-02.70	-00.33	00.82
भाव बल का योग	423.59	382.44	491.35	465.59	367.66	421.94	480.69	486.34	416.55	393.79	512.84	352.71
भाव बल (रूप में)	7.06	6.37	8.19	7.76	6.13	7.03	8.01	8.11	6.94	6.56	8.55	5.88
तुलनात्मक स्थिति	6	10	2	5	11	7	4	3	8	9	1	12

मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु
♃	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	सम
♄	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र
♅	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
♆	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
♁	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
♂	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
☾	चन्द्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♃	बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♄	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
♅	शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
♆	शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
♁	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
♂	केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु

पचंधा मैत्री

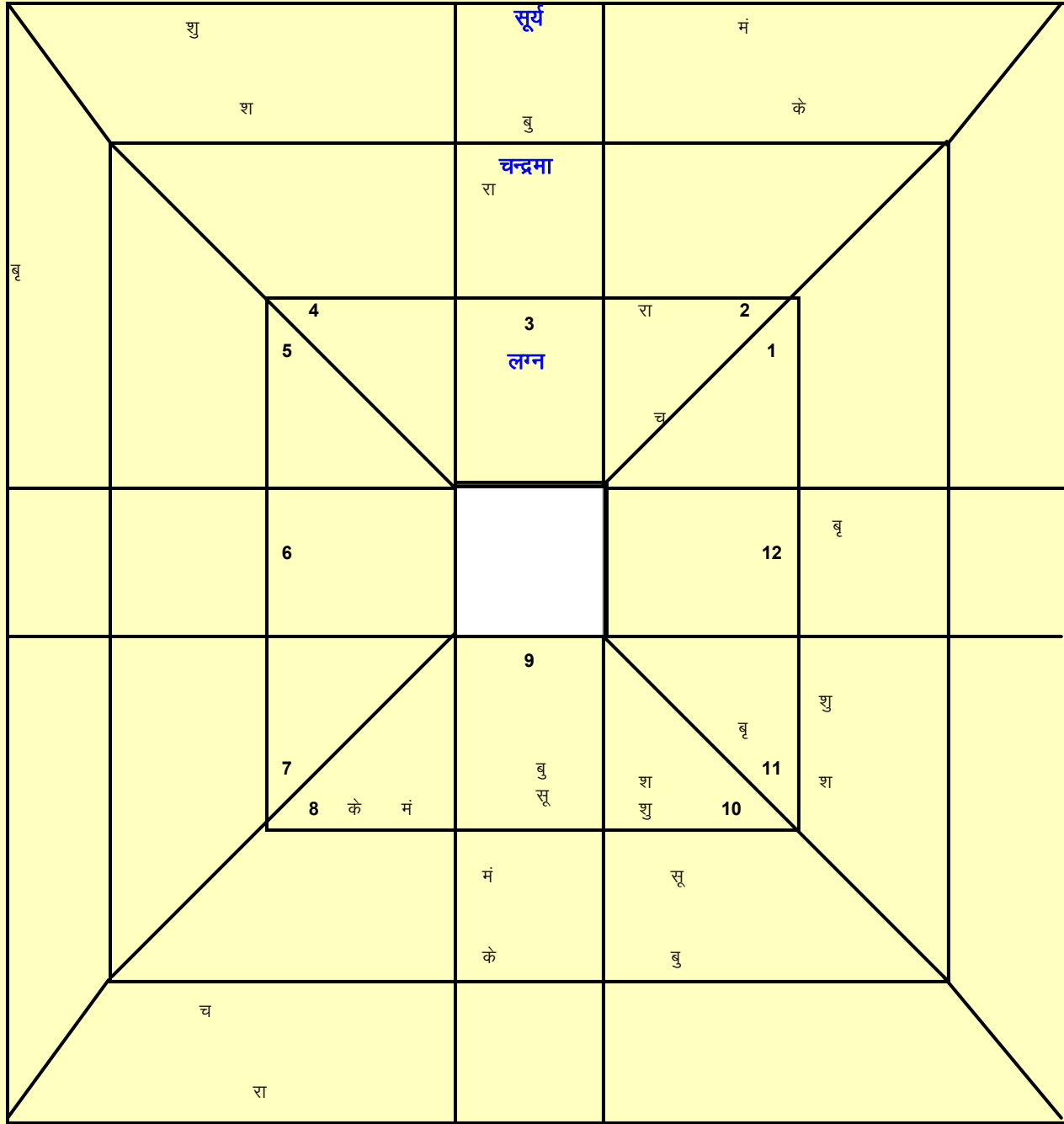
ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	सम	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु
☾	चन्द्र	सम	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु
♂	मंगल	अधिमित्र	सम	सम	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु
♃	बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अधिमित्र	मित्र	शत्रु
♄	गुरु	अधिमित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	सम	मित्र	अधिमित्र
♅	शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	मित्र	सम	सम
♆	शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	मित्र	सम	सम
♁	राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	सम	सम
♂	केतु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	शत्रु

सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110

1/13/25/37/49/61/73/85/97/109

12/24/36/48/60/72/84/96/108/120



6/18/30/42/54/66/78/90/102/114

7/19/31/43/55/67/79/91/103/115

8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र बुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होंगे।
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सूर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	2	2	5	4	3	4	4	4	3	3	0	5	39
बृहस्पति	3	5	6	2	4	7	4	5	6	3	5	6	56
मंगल	4	3	3	3	4	3	4	5	3	2	3	2	39
सूर्य	3	3	4	6	5	5	5	4	4	2	4	3	48
शुक	6	4	3	4	5	6	7	4	2	4	3	4	52
बुध	5	4	3	4	6	6	4	6	4	4	5	3	54
चन्द्रमा	4	5	3	5	3	5	4	5	3	2	4	6	49
योग	27	26	27	28	30	36	32	33	25	20	24	29	337
लग्न	5	4	2	3	4	4	5	5	2	4	4	7	49
राहु	2	5	3	6	1	4	3	4	5	4	4	3	44

तत्त्व चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	82	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	82	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	83	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	90	उत्तर

)विशेष - सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पू, द, प और उ)। अगर दोनों भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं, तो शुभ दिशा (उ पू, दपू, उ प और दप) होगी।)

भुवन चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव-राशि	112.33	117	मेहनत और लगन
पनफरा भाव-राशि	112.33	107	आर्थिक स्थिति
अपविल्म भाव-राशि	112.33	113	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	83	बन्धु -बान्धवों से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	90	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	82	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	82	दुर्भाग्य और हानि

गोचर शनि
(शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत्।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	ताम्र
द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	
तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	08:08:2029	05:10:2029	0 y.1 m.27 d.	स्वर्ण
	वृष	17:04:2030	31:05:2032	2 y.1 m.14 d.	
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	31:05:2032	13:07:2034	2 y.1 m.12 d.	रूपया
	सिंह	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	सिंह	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र
द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले)	वृष	28:05:2059	11:07:2061	2 y.1 m.13 d.	स्वर्ण
तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	13:02:2062	07:03:2062	0 y.0 m.22 d.	
	मिथुन	11:07:2061	13:02:2062	0 y.7 m.4 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	07:03:2062	24:08:2063	1 y.5 m.18 d.	
	सिंह	13:10:2065	03:02:2066	0 y.3 m.21 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	सिंह	03:07:2066	30:08:2068	2 y.1 m.28 d.	
	धनु	16:01:2076	11:07:2076	0 y.5 m.24 d.	ताम्र
	धनु	11:10:2076	15:01:2079	2 y.3 m.4 d.	
शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	मेष	21:05:2086	10:11:2086	0 y.5 m.21 d.	ताम्र
द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले)	मेष	08:02:2087	18:07:2088	1 y.5 m.8 d.	
तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	18:07:2088	31:10:2088	0 y.3 m.13 d.	स्वर्ण
	वृष	05:04:2089	19:09:2090	1 y.5 m.15 d.	
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	19:09:2090	25:10:2090	0 y.1 m.6 d.	रूपया
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	मिथुन	21:05:2091	02:07:2093	2 y.1 m.11 d.	
	सिंह	18:08:2095	11:10:2097	2 y.1 m.23 d.	ताम्र
	सिंह	02:05:2098	20:06:2098	0 y.1 m.18 d.	
	धनु	29:11:2105	25:02:2108	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
	धनु	29:07:2108	23:11:2108	0 y.3 m.25 d.	

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी ग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 0२४:0६:५0) : चन्द्र : 7 व 5
मा 21 दि

क्र० सं०	ग्रह दशा	अवधि	से ----- तक
1	चन्द्र महादशा	7 y.5 m.21 d.	17:12:2021 --- 09:06:2029
2	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	09:06:2029 --- 08:06:2036
3	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	08:06:2036 --- 09:06:2054
4	गुरु महादशा	16 y.0 m.0 d.	09:06:2054 --- 09:06:2070
5	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	09:06:2070 --- 09:06:2089
6	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	09:06:2089 --- 09:06:2106
7	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	09:06:2106 --- 09:06:2113
8	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	09:06:2113 --- 09:06:2133
9	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	09:06:2133 --- 09:06:2139

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्र दशा		मंगल दशा		राहु दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
चन्द्र		मंगल	09:06:2029 - 05:11:2029	राहु	08:06:2036 - 19:02:2039
मंगल		राहु	05:11:2029 - 23:11:2030	गुरु	19:02:2039 - 15:07:2041
राहु	17:12:2021 - 09:05:2022	गुरु	23:11:2030 - 30:10:2031	शनि	15:07:2041 - 21:05:2044
गुरु	09:05:2022 - 08:09:2023	शनि	30:10:2031 - 08:12:2032	बुध	21:05:2044 - 08:12:2046
शनि	08:09:2023 - 09:04:2025	बुध	08:12:2032 - 05:12:2033	केतु	08:12:2046 - 26:12:2047
बुध	09:04:2025 - 08:09:2026	केतु	05:12:2033 - 03:05:2034	शुक्र	26:12:2047 - 26:12:2050
केतु	08:09:2026 - 09:04:2027	शुक्र	03:05:2034 - 03:07:2035	सूर्य	26:12:2050 - 20:11:2051
शुक्र	09:04:2027 - 08:12:2028	सूर्य	03:07:2035 - 08:11:2035	चन्द्र	20:11:2051 - 21:05:2053
सूर्य	08:12:2028 - 09:06:2029	चन्द्र	08:11:2035 - 08:06:2036	मंगल	21:05:2053 - 09:06:2054

गुरु दशा		शनि दशा		बुध दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
गुरु	09:06:2054 - 27:07:2056	शनि	09:06:2070 - 12:06:2073	बुध	09:06:2089 - 05:11:2091
शनि	27:07:2056 - 07:02:2059	बुध	12:06:2073 - 19:02:2076	केतु	05:11:2091 - 02:11:2092
बुध	07:02:2059 - 15:05:2061	केतु	19:02:2076 - 31:03:2077	शुक्र	02:11:2092 - 02:09:2095
केतु	15:05:2061 - 21:04:2062	शुक्र	31:03:2077 - 30:05:2080	सूर्य	02:09:2095 - 09:07:2096
शुक्र	21:04:2062 - 20:12:2064	सूर्य	30:05:2080 - 12:05:2081	चन्द्र	09:07:2096 - 08:12:2097
सूर्य	20:12:2064 - 08:10:2065	चन्द्र	12:05:2081 - 11:12:2082	मंगल	08:12:2097 - 05:12:2098
चन्द्र	08:10:2065 - 07:02:2067	मंगल	11:12:2082 - 20:01:2084	राहु	05:12:2098 - 24:06:2101
मंगल	07:02:2067 - 14:01:2068	राहु	20:01:2084 - 26:11:2086	गुरु	24:06:2101 - 29:09:2103
राहु	14:01:2068 - 09:06:2070	गुरु	26:11:2086 - 09:06:2089	शनि	29:09:2103 - 09:06:2106

केतु दशा		शुक्र दशा		सूर्य दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
केतु	09:06:2106 - 05:11:2106	शुक्र	09:06:2113 - 08:10:2116	सूर्य	09:06:2133 - 26:09:2133
शुक्र	05:11:2106 - 05:01:2108	सूर्य	08:10:2116 - 08:10:2117	चन्द्र	26:09:2133 - 28:03:2134
सूर्य	05:01:2108 - 12:05:2108	चन्द्र	08:10:2117 - 09:06:2119	मंगल	28:03:2134 - 02:08:2134
चन्द्र	12:05:2108 - 11:12:2108	मंगल	09:06:2119 - 08:08:2120	राहु	02:08:2134 - 27:06:2135
मंगल	11:12:2108 - 09:05:2109	राहु	08:08:2120 - 09:08:2123	गुरु	27:06:2135 - 14:04:2136
राहु	09:05:2109 - 28:05:2110	गुरु	09:08:2123 - 09:04:2126	शनि	14:04:2136 - 28:03:2137
गुरु	28:05:2110 - 03:05:2111	शनि	09:04:2126 - 09:06:2129	बुध	28:03:2137 - 01:02:2138
शनि	03:05:2111 - 11:06:2112	बुध	09:06:2129 - 08:04:2132	केतु	01:02:2138 - 09:06:2138
बुध	11:06:2112 - 09:06:2113	केतु	08:04:2132 - 09:06:2133	शुक्र	09:06:2138 - 09:06:2139

विंशोत्तरी दशा

चन्द्र महादशा (17:12:2021 से 09:06:2029)

				<u>राहु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
				शुक्र	17:12:2021
				सूर्य	24:01:2022
				चन्द्र	21:02:2022
				मंगल	07:04:2022

<u>गुरु अन्तर्दशा</u>		<u>शनि अन्तर्दशा</u>		<u>बुध अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
गुरु	09:05:2022	शनि	08:09:2023	बुध	09:04:2025
शनि	13:07:2022	बुध	08:12:2023	केतु	21:06:2025
बुध	28:09:2022	केतु	28:02:2024	शुक्र	21:07:2025
केतु	06:12:2022	शुक्र	02:04:2024	सूर्य	15:10:2025
शुक्र	04:01:2023	सूर्य	08:07:2024	चन्द्र	10:11:2025
सूर्य	26:03:2023	चन्द्र	06:08:2024	मंगल	23:12:2025
चन्द्र	19:04:2023	मंगल	23:09:2024	राहु	23:01:2026
मंगल	30:05:2023	राहु	27:10:2024	गुरु	10:04:2026
राहु	27:06:2023	गुरु	22:01:2025	शनि	18:06:2026

<u>केतु अन्तर्दशा</u>		<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>		<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	08:09:2026	शुक्र	09:04:2027	सूर्य	08:12:2028
शुक्र	20:09:2026	सूर्य	19:07:2027	चन्द्र	17:12:2028
सूर्य	26:10:2026	चन्द्र	19:08:2027	मंगल	02:01:2029
चन्द्र	05:11:2026	मंगल	08:10:2027	राहु	12:01:2029
मंगल	23:11:2026	राहु	13:11:2027	गुरु	09:02:2029
राहु	06:12:2026	गुरु	12:02:2028	शनि	05:03:2029
गुरु	07:01:2027	शनि	04:05:2028	बुध	03:04:2029
शनि	04:02:2027	बुध	08:08:2028	केतु	29:04:2029
बुध	10:03:2027	केतु	03:11:2028	शुक्र	09:05:2029

विंशोत्तरी दशा

मंगल महादशा (09:06:2029 से 08:06:2036)

<u>मंगल अन्तर्दशा</u>		<u>राहु अन्तर्दशा</u>		<u>गुरु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
मंगल	09:06:2029	राहु	05:11:2029	गुरु	23:11:2030
राहु	17:06:2029	गुरु	01:01:2030	शनि	07:01:2031
गुरु	10:07:2029	शनि	21:02:2030	बुध	02:03:2031
शनि	30:07:2029	बुध	23:04:2030	केतु	20:04:2031
बुध	22:08:2029	केतु	16:06:2030	शुक्र	09:05:2031
केतु	12:09:2029	शुक्र	09:07:2030	सूर्य	05:07:2031
शुक्र	21:09:2029	सूर्य	11:09:2030	चन्द्र	22:07:2031
सूर्य	16:10:2029	चन्द्र	30:09:2030	मंगल	20:08:2031
चन्द्र	23:10:2029	मंगल	01:11:2030	राहु	09:09:2031

<u>शनि अन्तर्दशा</u>		<u>बुध अन्तर्दशा</u>		<u>केतु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शनि	30:10:2031	बुध	08:12:2032	केतु	05:12:2033
बुध	02:01:2032	केतु	28:01:2033	शुक्र	14:12:2033
केतु	28:02:2032	शुक्र	19:02:2033	सूर्य	08:01:2034
शुक्र	23:03:2032	सूर्य	20:04:2033	चन्द्र	15:01:2034
सूर्य	29:05:2032	चन्द्र	08:05:2033	मंगल	28:01:2034
चन्द्र	19:06:2032	मंगल	07:06:2033	राहु	05:02:2034
मंगल	23:07:2032	राहु	28:06:2033	गुरु	28:02:2034
राहु	15:08:2032	गुरु	22:08:2033	शनि	19:03:2034
गुरु	15:10:2032	शनि	09:10:2033	बुध	12:04:2034

<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>		<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>		<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शुक्र	03:05:2034	सूर्य	03:07:2035	चन्द्र	08:11:2035
सूर्य	13:07:2034	चन्द्र	09:07:2035	मंगल	26:11:2035
चन्द्र	03:08:2034	मंगल	20:07:2035	राहु	08:12:2035
मंगल	08:09:2034	राहु	27:07:2035	गुरु	09:01:2036
राहु	03:10:2034	गुरु	16:08:2035	शनि	06:02:2036
गुरु	06:12:2034	शनि	02:09:2035	बुध	11:03:2036
शनि	31:01:2035	बुध	22:09:2035	केतु	10:04:2036
बुध	09:04:2035	केतु	10:10:2035	शुक्र	23:04:2036
केतु	08:06:2035	शुक्र	17:10:2035	सूर्य	28:05:2036

विंशोत्तरी दशा

राहु महादशा (08:06:2036 से 09:06:2054)

<u>राहु अन्तर्दशा</u>		<u>गुरु अन्तर्दशा</u>		<u>शनि अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राहु	08:06:2036	गुरु	19:02:2039	शनि	15:07:2041
गुरु	03:11:2036	शनि	16:06:2039	बुध	27:12:2041
शनि	15:03:2037	बुध	02:11:2039	केतु	23:05:2042
बुध	18:08:2037	केतु	05:03:2040	शुक्र	23:07:2042
केतु	05:01:2038	शुक्र	25:04:2040	सूर्य	12:01:2043
शुक्र	03:03:2038	सूर्य	19:09:2040	चन्द्र	05:03:2043
सूर्य	14:08:2038	चन्द्र	02:11:2040	मंगल	31:05:2043
चन्द्र	03:10:2038	मंगल	14:01:2041	राहु	31:07:2043
मंगल	24:12:2038	राहु	06:03:2041	गुरु	03:01:2044

<u>बुध अन्तर्दशा</u>		<u>केतु अन्तर्दशा</u>		<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	21:05:2044	केतु	08:12:2046	शुक्र	26:12:2047
केतु	30:09:2044	शुक्र	31:12:2046	सूर्य	26:06:2048
शुक्र	23:11:2044	सूर्य	04:03:2047	चन्द्र	20:08:2048
सूर्य	28:04:2045	चन्द्र	24:03:2047	मंगल	20:11:2048
चन्द्र	13:06:2045	मंगल	25:04:2047	राहु	23:01:2049
मंगल	30:08:2045	राहु	17:05:2047	गुरु	06:07:2049
राहु	23:10:2045	गुरु	13:07:2047	शनि	29:11:2049
गुरु	12:03:2046	शनि	02:09:2047	बुध	21:05:2050
शनि	14:07:2046	बुध	02:11:2047	केतु	24:10:2050

<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>		<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>		<u>मंगल अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	26:12:2050	चन्द्र	20:11:2051	मंगल	21:05:2053
चन्द्र	12:01:2051	मंगल	05:01:2052	राहु	13:06:2053
मंगल	08:02:2051	राहु	06:02:2052	गुरु	09:08:2053
राहु	27:02:2051	गुरु	28:04:2052	शनि	29:09:2053
गुरु	18:04:2051	शनि	10:07:2052	बुध	29:11:2053
शनि	31:05:2051	बुध	05:10:2052	केतु	22:01:2054
बुध	22:07:2051	केतु	22:12:2052	शुक्र	14:02:2054
केतु	07:09:2051	शुक्र	23:01:2053	सूर्य	19:04:2054
शुक्र	26:09:2051	सूर्य	24:04:2053	चन्द्र	08:05:2054

विंशोत्तरी दशा

गुरु महादशा (09:06:2054 से 09:06:2070)

<u>गुरु अन्तर्दशा</u>		<u>शनि अन्तर्दशा</u>		<u>बुध अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
गुरु	09:06:2054	शनि	27:07:2056	बुध	07:02:2059
शनि	21:09:2054	बुध	21:12:2056	केतु	04:06:2059
बुध	22:01:2055	केतु	01:05:2057	शुक्र	22:07:2059
केतु	12:05:2055	शुक्र	24:06:2057	सूर्य	07:12:2059
शुक्र	27:06:2055	सूर्य	25:11:2057	चन्द्र	18:01:2060
सूर्य	03:11:2055	चन्द्र	10:01:2058	मंगल	27:03:2060
चन्द्र	12:12:2055	मंगल	28:03:2058	राहु	14:05:2060
मंगल	15:02:2056	राहु	21:05:2058	गुरु	16:09:2060
राहु	01:04:2056	गुरु	07:10:2058	शनि	04:01:2061

<u>केतु अन्तर्दशा</u>		<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>		<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	15:05:2061	शुक्र	21:04:2062	सूर्य	20:12:2064
शुक्र	04:06:2061	सूर्य	30:09:2062	चन्द्र	04:01:2065
सूर्य	31:07:2061	चन्द्र	18:11:2062	मंगल	28:01:2065
चन्द्र	17:08:2061	मंगल	07:02:2063	राहु	14:02:2065
मंगल	14:09:2061	राहु	05:04:2063	गुरु	30:03:2065
राहु	04:10:2061	गुरु	29:08:2063	शनि	08:05:2065
गुरु	24:11:2061	शनि	06:01:2064	बुध	23:06:2065
शनि	09:01:2062	बुध	08:06:2064	केतु	04:08:2065
बुध	04:03:2062	केतु	24:10:2064	शुक्र	21:08:2065

<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>		<u>मंगल अन्तर्दशा</u>		<u>राहु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
चन्द्र	08:10:2065	मंगल	07:02:2067	राहु	14:01:2068
मंगल	18:11:2065	राहु	27:02:2067	गुरु	24:05:2068
राहु	16:12:2065	गुरु	19:04:2067	शनि	19:09:2068
गुरु	27:02:2066	शनि	03:06:2067	बुध	05:02:2069
शनि	03:05:2066	बुध	27:07:2067	केतु	09:06:2069
बुध	19:07:2066	केतु	14:09:2067	शुक्र	30:07:2069
केतु	26:09:2066	शुक्र	03:10:2067	सूर्य	23:12:2069
शुक्र	25:10:2066	सूर्य	29:11:2067	चन्द्र	05:02:2070
सूर्य	14:01:2067	चन्द्र	16:12:2067	मंगल	19:04:2070

विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा (09:06:2070 से 09:06:2089)

<u>शनि अन्तर्दशा</u>		<u>बुध अन्तर्दशा</u>		<u>केतु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शनि	09:06:2070	बुध	12:06:2073	केतु	19:02:2076
बुध	30:11:2070	केतु	29:10:2073	शुक्र	14:03:2076
केतु	04:05:2071	शुक्र	25:12:2073	सूर्य	21:05:2076
शुक्र	07:07:2071	सूर्य	07:06:2074	चन्द्र	10:06:2076
सूर्य	06:01:2072	चन्द्र	26:07:2074	मंगल	14:07:2076
चन्द्र	01:03:2072	मंगल	16:10:2074	राह	06:08:2076
मंगल	01:06:2072	राह	12:12:2074	गुरु	06:10:2076
राह	04:08:2072	गुरु	09:05:2075	शनि	29:11:2076
गुरु	16:01:2073	शनि	17:09:2075	बुध	01:02:2077

<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>		<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>		<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शुक्र	31:03:2077	सूर्य	30:05:2080	चन्द्र	12:05:2081
सूर्य	09:10:2077	चन्द्र	16:06:2080	मंगल	29:06:2081
चन्द्र	06:12:2077	मंगल	15:07:2080	राह	02:08:2081
मंगल	12:03:2078	राह	05:08:2080	गुरु	28:10:2081
राह	19:05:2078	गुरु	26:09:2080	शनि	13:01:2082
गुरु	08:11:2078	शनि	11:11:2080	बुध	14:04:2082
शनि	11:04:2079	बुध	05:01:2081	केतु	05:07:2082
बुध	11:10:2079	केतु	23:02:2081	शुक्र	08:08:2082
केतु	23:03:2080	शुक्र	16:03:2081	सूर्य	12:11:2082

<u>मंगल अन्तर्दशा</u>		<u>राहु अन्तर्दशा</u>		<u>गुरु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
मंगल	11:12:2082	राह	20:01:2084	गुरु	26:11:2086
राह	04:01:2083	गुरु	24:06:2084	शनि	29:03:2087
गुरु	05:03:2083	शनि	10:11:2084	बुध	23:08:2087
शनि	28:04:2083	बुध	24:04:2085	केतु	01:01:2088
बुध	01:07:2083	केतु	19:09:2085	शुक्र	24:02:2088
केतु	28:08:2083	शुक्र	18:11:2085	सूर्य	27:07:2088
शुक्र	20:09:2083	सूर्य	11:05:2086	चन्द्र	12:09:2088
सूर्य	27:11:2083	चन्द्र	02:07:2086	मंगल	28:11:2088
चन्द्र	17:12:2083	मंगल	26:09:2086	राह	21:01:2089

विंशोत्तरी दशा

बुध महादशा (09:06:2089 से 09:06:2106)

<u>बुध अन्तर्दशा</u>		<u>केतु अन्तर्दशा</u>		<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	09:06:2089	केतु	05:11:2091	शुक्र	02:11:2092
केतु	11:10:2089	शुक्र	26:11:2091	सूर्य	23:04:2093
शुक्र	01:12:2089	सूर्य	25:01:2092	चन्द्र	14:06:2093
सूर्य	27:04:2090	चन्द्र	12:02:2092	मंगल	08:09:2093
चन्द्र	10:06:2090	मंगल	14:03:2092	राह	07:11:2093
मंगल	22:08:2090	राह	04:04:2092	गुरु	11:04:2094
राह	12:10:2090	गुरु	28:05:2092	शनि	27:08:2094
गुरु	21:02:2091	शनि	16:07:2092	बुध	07:02:2095
शनि	19:06:2091	बुध	11:09:2092	केतु	04:07:2095

<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>		<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>		<u>मंगल अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	02:09:2095	चन्द्र	09:07:2096	मंगल	08:12:2097
चन्द्र	17:09:2095	मंगल	21:08:2096	राह	29:12:2097
मंगल	13:10:2095	राह	20:09:2096	गुरु	22:02:2098
राह	31:10:2095	गुरु	07:12:2096	शनि	11:04:2098
गुरु	17:12:2095	शनि	14:02:2097	बुध	07:06:2098
शनि	27:01:2096	बुध	07:05:2097	केतु	28:07:2098
बुध	17:03:2096	केतु	19:07:2097	शुक्र	19:08:2098
केतु	30:04:2096	शुक्र	18:08:2097	सूर्य	18:10:2098
शुक्र	18:05:2096	सूर्य	12:11:2097	चन्द्र	05:11:2098

<u>राह अन्तर्दशा</u>		<u>गुरु अन्तर्दशा</u>		<u>शनि अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राह	05:12:2098	गुरु	24:06:2101	शनि	29:09:2103
गुरु	24:04:2099	शनि	12:10:2101	बुध	03:03:2104
शनि	26:08:2099	बुध	20:02:2102	केतु	21:07:2104
बुध	20:01:2100	केतु	17:06:2102	शुक्र	16:09:2104
केतु	01:06:2100	शुक्र	05:08:2102	सूर्य	27:02:2105
शुक्र	25:07:2100	सूर्य	21:12:2102	चन्द्र	17:04:2105
सूर्य	27:12:2100	चन्द्र	31:01:2103	मंगल	08:07:2105
चन्द्र	12:02:2101	मंगल	10:04:2103	राह	03:09:2105
मंगल	01:05:2101	राह	28:05:2103	गुरु	29:01:2106

विंशोत्तरी दशा

केतु महादशा (09:06:2106 से 09:06:2113)

<u>केतु अन्तर्दशा</u>		<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>		<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	09:06:2106	शुक्र	05:11:2106	सूर्य	05:01:2108
शुक्र	17:06:2106	सूर्य	15:01:2107	चन्द्र	11:01:2108
सूर्य	12:07:2106	चन्द्र	05:02:2107	मंगल	22:01:2108
चन्द्र	20:07:2106	मंगल	12:03:2107	राह	29:01:2108
मंगल	01:08:2106	राह	06:04:2107	गुरु	17:02:2108
राह	10:08:2106	गुरु	09:06:2107	शनि	05:03:2108
गुरु	01:09:2106	शनि	05:08:2107	बुध	26:03:2108
शनि	21:09:2106	बुध	11:10:2107	केतु	13:04:2108
बुध	15:10:2106	केतु	11:12:2107	शुक्र	20:04:2108

<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>		<u>मंगल अन्तर्दशा</u>		<u>राहु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
चन्द्र	12:05:2108	मंगल	11:12:2108	राह	09:05:2109
मंगल	29:05:2108	राह	20:12:2108	गुरु	06:07:2109
राह	11:06:2108	गुरु	11:01:2109	शनि	26:08:2109
गुरु	13:07:2108	शनि	31:01:2109	बुध	26:10:2109
शनि	10:08:2108	बुध	24:02:2109	केतु	19:12:2109
बुध	13:09:2108	केतु	17:03:2109	शुक्र	10:01:2110
केतु	13:10:2108	शुक्र	26:03:2109	सूर्य	15:03:2110
शुक्र	26:10:2108	सूर्य	19:04:2109	चन्द्र	03:04:2110
सूर्य	30:11:2108	चन्द्र	27:04:2109	मंगल	05:05:2110

<u>गुरु अन्तर्दशा</u>		<u>शनि अन्तर्दशा</u>		<u>बुध अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
गुरु	28:05:2110	शनि	03:05:2111	बुध	11:06:2112
शनि	12:07:2110	बुध	06:07:2111	केतु	02:08:2112
बुध	04:09:2110	केतु	02:09:2111	शुक्र	23:08:2112
केतु	22:10:2110	शुक्र	25:09:2111	सूर्य	22:10:2112
शुक्र	11:11:2110	सूर्य	02:12:2111	चन्द्र	09:11:2112
सूर्य	07:01:2111	चन्द्र	22:12:2111	मंगल	10:12:2112
चन्द्र	24:01:2111	मंगल	25:01:2112	राह	31:12:2112
मंगल	21:02:2111	राह	17:02:2112	गुरु	23:02:2113
राह	13:03:2111	गुरु	18:04:2112	शनि	12:04:2113

विंशोत्तरी दशा

शुक्र महादशा (09:06:2113 से 09:06:2133)

<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>		<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>		<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शुक्र	09:06:2113	सूर्य	08:10:2116	चन्द्र	08:10:2117
सूर्य	28:12:2113	चन्द्र	26:10:2116	मंगल	28:11:2117
चन्द्र	27:02:2114	मंगल	26:11:2116	राह	03:01:2118
मंगल	09:06:2114	राह	17:12:2116	गुरु	04:04:2118
राह	19:08:2114	गुरु	10:02:2117	शनि	24:06:2118
गुरु	17:02:2115	शनि	31:03:2117	बुध	28:09:2118
शनि	29:07:2115	बुध	28:05:2117	केतु	23:12:2118
बुध	07:02:2116	केतु	18:07:2117	शुक्र	28:01:2119
केतु	29:07:2116	शुक्र	09:08:2117	सूर्य	09:05:2119

<u>मंगल अन्तर्दशा</u>		<u>राहु अन्तर्दशा</u>		<u>गुरु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
मंगल	09:06:2119	राह	08:08:2120	गुरु	09:08:2123
राह	04:07:2119	गुरु	20:01:2121	शनि	16:12:2123
गुरु	05:09:2119	शनि	15:06:2121	बुध	19:05:2124
शनि	01:11:2119	बुध	05:12:2121	केतु	04:10:2124
बुध	08:01:2120	केतु	09:05:2122	शुक्र	30:11:2124
केतु	08:03:2120	शुक्र	12:07:2122	सूर्य	11:05:2125
शुक्र	02:04:2120	सूर्य	11:01:2123	चन्द्र	29:06:2125
सूर्य	12:06:2120	चन्द्र	06:03:2123	मंगल	18:09:2125
चन्द्र	04:07:2120	मंगल	06:06:2123	राह	14:11:2125

<u>शनि अन्तर्दशा</u>		<u>बुध अन्तर्दशा</u>		<u>केतु अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शनि	09:04:2126	बुध	09:06:2129	केतु	08:04:2132
बुध	09:10:2126	केतु	02:11:2129	शुक्र	03:05:2132
केतु	22:03:2127	शुक्र	02:01:2130	सूर्य	13:07:2132
शुक्र	28:05:2127	सूर्य	23:06:2130	चन्द्र	04:08:2132
सूर्य	07:12:2127	चन्द्र	14:08:2130	मंगल	08:09:2132
चन्द्र	03:02:2128	मंगल	08:11:2130	राह	03:10:2132
मंगल	09:05:2128	राह	07:01:2131	गुरु	06:12:2132
राह	16:07:2128	गुरु	11:06:2131	शनि	01:02:2133
गुरु	06:01:2129	शनि	27:10:2131	बुध	09:04:2133

विंशोत्तरी दशा

सूर्य महादशा (09:06:2133 से 09:06:2139)

<u>सूर्य अन्तर्दशा</u>		<u>चन्द्र अन्तर्दशा</u>		<u>मंगल अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	09:06:2133	चन्द्र	26:09:2133	मंगल	28:03:2134
चन्द्र	14:06:2133	मंगल	11:10:2133	राह	04:04:2134
मंगल	23:06:2133	राह	22:10:2133	गुरु	23:04:2134
राह	30:06:2133	गुरु	18:11:2133	शनि	10:05:2134
गुरु	16:07:2133	शनि	13:12:2133	बुध	31:05:2134
शनि	31:07:2133	बुध	11:01:2134	केतु	18:06:2134
बुध	17:08:2133	केतु	05:02:2134	शुक्र	25:06:2134
केतु	02:09:2133	शुक्र	16:02:2134	सूर्य	16:07:2134
शुक्र	08:09:2133	सूर्य	19:03:2134	चन्द्र	23:07:2134

<u>राह अन्तर्दशा</u>		<u>गुरु अन्तर्दशा</u>		<u>शनि अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राह	02:08:2134	गुरु	27:06:2135	शनि	14:04:2136
गुरु	21:09:2134	शनि	05:08:2135	बुध	08:06:2136
शनि	04:11:2134	बुध	20:09:2135	केतु	28:07:2136
बुध	26:12:2134	केतु	31:10:2135	शुक्र	17:08:2136
केतु	10:02:2135	शुक्र	17:11:2135	सूर्य	14:10:2136
शुक्र	01:03:2135	सूर्य	05:01:2136	चन्द्र	31:10:2136
सूर्य	25:04:2135	चन्द्र	20:01:2136	मंगल	29:11:2136
चन्द्र	11:05:2135	मंगल	13:02:2136	राह	19:12:2136
मंगल	08:06:2135	राह	01:03:2136	गुरु	09:02:2137

<u>बुध अन्तर्दशा</u>		<u>केतु अन्तर्दशा</u>		<u>शुक्र अन्तर्दशा</u>	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	28:03:2137	केतु	01:02:2138	शुक्र	09:06:2138
केतु	11:05:2137	शुक्र	08:02:2138	सूर्य	09:08:2138
शुक्र	29:05:2137	सूर्य	02:03:2138	चन्द्र	27:08:2138
सूर्य	19:07:2137	चन्द्र	08:03:2138	मंगल	26:09:2138
चन्द्र	04:08:2137	मंगल	19:03:2138	राह	17:10:2138
मंगल	30:08:2137	राह	26:03:2138	गुरु	11:12:2138
राह	17:09:2137	गुरु	14:04:2138	शनि	29:01:2139
गुरु	02:11:2137	शनि	01:05:2138	बुध	28:03:2139
शनि	14:12:2137	बुध	22:05:2138	केतु	18:05:2139

उपयुक्त रत्न का सुझाव

लग्नाधिपति के लिए रत्न



लग्नाधिपति - बुध

आपका लग्न स्वामी बुध है, लेकिन यह मारक भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध के लिए कोई भी रत्न लेनेकी सलाह नहीं दी जा सकती है।

नवमेश के लिए रत्न



नवमेश - रानि

आपकी कुण्डली में नवमेश रानि है। लेकिन यह त्रिक भाव में विराजमान है, इसलिए आपको रानि ग्रह के लिए रत्न पहनना उपयुक्त नहीं है।

योग-कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोई योग-कारक ग्रह नहीं है ।

तात्कालिक योग-कारक ग्रह के लिए रत्न



तात्कालिक योग-कारक ग्रह - बृहस्पति

बृहस्पति ग्रह आपकी कुण्डली में तात्कालिक योग-कारक है। चूंकि तात्कालिक योग-कारक ग्रह न तो तुंगस्थ है, नही नीचस्थ है और न ही अपने भाव में स्थित है, इसलिए आप बृहस्पति ग्रह के लिए रत्न पहन सकते हैं ।

बृहस्पति ग्रह के लिए रत्न



पुखराज की भौतिक संरचना

पुखराज एक कठोर एवं चमकदार रत्न है। यह हल्का पीला, संतरी एवं भूरे रंग की आभा में पाया जाता है। यह विश्व प्रेम एवं बंधुत्व सूचक है। पीला टोपाज, निम्बुवर्ण, हेलिओडोर इत्यादि पुखराज के उपरत्न हैं।

पुखराज धारण करने के फायदे

पुखराज धारण करने से सफलता, सौभाग्य, खुशहाली, उन्नति एवं आध्यात्मिक विकास प्राप्त होता है। यह जीवन में व्यवसायिक स्थायित्व प्रदान करता है एवं वाणिज्य संबंधी मुद्दों में काफी लाभदायक होता है। पुखराज धारण करने से पाचन में मदद मिलती है एवं भूख में वृद्धि होती है। इससे प्रसिद्धि, धन एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है।

पुखराज धारण करने से अन्न, धन, संपत्ति, बल-बुद्धि, आयु तथा यश में वृद्धि होती है। इससे भूत-प्रेतादि की बाधा दूर होती है तथा आध्यात्मिक विचारों में प्रबलता आती है।

रोगों पर पुखराज का प्रभाव

पुखराज धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं - पीलिया, दांत के रोग, तिल्ली, मुख की दुर्गन्ध, गुर्दे के रोग, ज्वर, बवासीर, दमा, नेत्र रोग, हृदय रोग, खांसी इत्यादि।

पुखराज धारण करने के लिए महत्त्वपूर्ण निर्देश



बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बा रहित पुखराज ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोतरी होगी। पुखराज सोने से बनी अँगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। पुखराज इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए, अँगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। पुखराज का वजन ३-७ कैरेट (कम-से-कम ४ रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में तथा महिलाओं को बायें हाथ में धारण करना चाहिए। गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन प्रातः काल सूर्योदय से ११ बजे के बीच पुखराज सोना में जड़वाकर धारण करें।

बृहस्पतिवार के दिन सूर्योदय से पहले नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगस्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईयां चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अँगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अँगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले बृहस्पति देवता के बीज मंत्र का १६ बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋग्वेद मंत्र का एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त, गुरु अष्टोत्तर शतनामावली (बृहस्पति ग्रह के १०८ नाम) का जाप करें। इसके उपरांत बृहस्पति देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अँगूठी को तर्जनी अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

पुखराज दान की विधि

बृहस्पति यंत्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

सोने या चांदी के पत्र पर गुरु यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में पुखराज जड़वाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर बृहस्पति मंत्र से पुखराज को बृहस्पतिवार के दिन अभिमंत्रित करें। जब गुरु कर्क राशि के ४ अंश पर हों तो ज्यादालाभप्रद होगा अथवा शुभ राशि, नक्षत्र का योग देखकर यह कार्य करना चाहिए। ३४ दिन तक यंत्र का विधिवत् पूजन करने के पश्चात् गुरुवार के दिन सोना, कांस्य, चीनी, घी, पीला वस्त्र, चने की दाल एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। यदि रक्त-संबंधी रोगों को दूर करने के लिए दान करना हो तो यंत्र का पूजन ४९ दिन तक करना चाहिए। इस प्रकार दान करने से बृहस्पति से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

पुखराज के प्रभाव की अवधि

अंगूठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर ४ वर्ष ३ माह ९ दिन तक पुखराज प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद पुखराज का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद पुखराज बदल देना चाहिए।

केतु ग्रह के लिए रत्न



केतु

चूँकि केतु आपकी जन्म कुण्डली में उपचय (३, ६ या ११) भाव में बैठा है, इसलिए आप केतु के लिए रत्न पहन सकते हैं।

केतु के लिए रत्न



लहसुनियों की भौतिक संरचना

लहसुनिया पीला, काला, हरा, सफेद, हरा-पीला एवं भूरा-पीला रंगों में पाया जाता है। तुरमली लहसुनिया का उपरत्न है।

लहसुनियों धारण करने के फायदे

लहसुनिया धारण करने से दुःख, दरिद्रता, व्याधि, भूत-प्रेत बाधा एवं रोग दूर होते हैं। इससे पुत्र संपत्ति, आनंद एवं सुख में वृद्धि होती है। लहसुनिया धारण करने से शत्रुओं का नाश होता है तथा धारक को शत्रुओं के आघातसे बचाता है। इससे मनोशक्ति, नैतिकता, बुद्धि, ज्ञान, बल, तेज एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। लहसुनिया खुशहाल परिवार, उत्तम स्वास्थ्य एवं धन आदि प्रदान करता है।

रोगों पर लहसुनियों का प्रभाव

लहसुनिया धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं - उपदंश, अजीर्ण, नपुंसकता, मधुमेह, पित्तदोष, बवासीर, खूनी दस्त, आमवात, आंखों के रोग, संग्रहणी, धुंध रोग इत्यादि।

लहसुनियाँ धारण करने के लिए महत्त्वपूर्ण निर्देश



बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित लहसुनिया ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोतरी होगी। लहसुनिया लोहे या पंचधातु से बनी अँगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। लहसुनिया इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए, अँगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। लहसुनिया का वजन ३-५ कैरेट (कम-से-कम ४ रत्ती) होना चाहिए। जब मीन, मेष या घनु राशि का चंद्रमा हो या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र हो या बुधवार अथवा शुक्रवार हो तो शाम ५ बजे से ८ बजे के बीच लहसुनिया अँगूठी में जड़वाये।

अगले दिन प्रातः काल से ६ बजे के बीच स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईयां चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अँगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अँगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले केतु देवता के बीज मंत्र का १८ बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋग्वेद मंत्र का एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त, केतु अष्टोत्तर शतनामावली (सूर्य ग्रह के १०८ नाम) का जाप करें। इसके उपरांत केतु देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अँगूठी को बायें हाथ की कनिष्ठा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें। बुधवार या शुक्रवार को सूर्यास्त के डेढ़-दो घंटे बाद धारण करें।

लहसुनियाँ दान की विधि

केतु यंत्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

रंगे के पत्र पर केतु यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में लहसुनिया जड़वाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर केतु मंत्र से लहसुनिया को अभिमंत्रित करें। फिर लौह, तिल, सप्त-धान्य, तेल, धूम्र वस्त्र, शस्त्र, कंबल, कस्तुरी, काला पुष्प एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को बुधवार की रात्रि में दान कर दें। इस प्रकार दान करने से केतु से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

लहसुनियों के प्रभाव की अवधि

अंगूठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर ३ वर्ष तक लहसुनिया प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद लहसुनिया का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद लहसुनिया बदल देना चाहिए।

मिथुन लग्न के लिए रत्नों का चुनाव

अपनी समस्याओं या कष्टों से निजात पाने के लिए या भाग्योदय के लिए या शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आवश्यकतानुसार रत्न धारण करें।

माणिक रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में सूर्य तीसरे भाव का स्वामी है, आपको माणिक नहीं धारण करना चाहिए।

यदि आप हड्डियों के रोग से ग्रसित हैं तो आपको माणिक धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य अकारक ग्रह है, आप माणिक धारण न करें।

मोती रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे भाव का स्वामी होकर हमेशा शुभ फल देगा। आपके लिए मोती धारण करना शुभ होगा।

यदि आप मानसिक रूप से अशांत रहते हों या सर्दी-कफ आदि से ग्रसित रहते हों या शरीर में कैल्सियम की कमी हो और आपकी कुण्डली में चंद्रमा पापी ग्रह राहु एवं शनि के साथ स्थित नहीं हो तो मोती धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा छठे भाव (वृश्चिक राशि) या आठवें भाव (मकर राशि) या बारहवें भाव (वृष राशि) में स्थित है। आपको मोती धारण नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा अकारक ग्रह है। यदि संभव हो तो मोती धारण करने से बचें।

आपकी राशि कर्क, वृष, तुला या वृश्चिक है। आप मोती धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न धारण करने के लिए सुझाव



यदि आपके विवाह में बाधाये आ रही हैं या विवाह में देरी हो रही है, तो आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

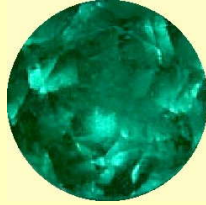
आपकी कुण्डली में मंगल छटे भाव या ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपको मूंगा नहीं धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष उपस्थित है, आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

यदि आप रक्त, मांस, मज्जा आदि संबंधी रोगों से ग्रसित हैं तो आपको मूंगा धारण करने से लाभ होगा।

आपको यथासंभव मूंगा धारण करने से बचना चाहिए।

पन्ना रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में बुध लग्न एवं चौथे भाव का स्वामी है। आपको पन्ना धारण करने से लाभ होगा।

यदि आप बौद्धिक विकृति, शिक्षा प्राप्ति में बाधा, मिर्गी, पागलपन एवं वाणी दोष से पीड़ित हैं, तो पन्ना धारण करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

शारीरिक, मानसिक एवं अन्य प्रकार के लाभ के लिए आपको पन्ना धारण करना चाहिए।

पुखराज रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में गुरु सातवें एवं दसवें भाव का स्वामी होकर शुभ फल प्रदान करता है। आपको पुखराज धारण करना चाहिए।

यदि आपके विवाह में बाधा आ रही है या विवाह में देरी हो रही है या विवाह पश्चात् दाम्पत्य जीवन खुशहाल नहीं है, तो आपको गहरे पीले रंगा का पुखराज अवश्य धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में गुरु न्यूनतम अंश (0-५) या अधिकतम अंश (२७-२६) में स्थित है। पुखराज धारण करनेसे आपको काफी लाभ होगा।

यदि आप कपास, वस्त्र, साहित्य या बौद्धिक क्षेत्र से संबंधित किसी व्यवसाय में संलग्न हैं तो आपको पुखराज धारण करने से लाभ

होगा।

आपकी कुण्डली में गुरु को केन्द्राधिपत्य दोष है। बहुत जरूरी होने पर ही पुखराज धारण करें।

हीरा रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें एवं बारहवें भाव का स्वामी होकर अशुभ फल देगा। आपको हीरा धारण करने से लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपको विवाह संबंधी बाधा आ रही है अथवा विवाह में देरी हो रही है या विवाह पश्चात् वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं है या किसी कारणवश स्त्री-सुख प्राप्त नहीं हो रहा है, तो आपको हीरा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र सबसे अधिक शुभ ग्रह है, आपको हीरा धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र, शनि या राहु-केतु में से किसी के साथ स्थित है। आपको हीरा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र न्यूनतम अंश (0-५) या अधिकतम (२७-२९) अंशों के बीच है। आपको हीरा अवश्य धारण करना चाहिए।

यदि आप खाद्य पदार्थों, फल, रस, सौन्दर्य प्रसाधन या ऐशो-आराम की वस्तुओं के व्यवसाय में संलग्न हैं तो हीरा धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

नीलम रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में शनि लग्नेरा बुध का मित्र ग्रह है एवं भाग्य भाव का स्वामी भी है। नीलम धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

गोमेद रत्न धारण करने के लिए सुझाव



राहु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः राहु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में

राहु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर शनि की स्थिति देखकर किया जाता है।

आपकी कुण्डली में कालसर्प दोष लागू हो रहा है। आपको गोमेद धारण करना चाहिए, भले ही राहु-केतु किसी भी भाव में हों।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न या बारहवें भाव में स्थित है। आप राहु, बुध या शनि की दशा या अन्तर्दशा में गोमेद धारण करें, लाभ होगा।

जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति के अनुसार गोमेद धारण करना चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है।

आपकी राशि मेष, वृश्चिक या मकर नहीं है। गोमेद धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

लहसुनियाँ रत्न धारण करने के लिए सुझाव



केतु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः केतु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में केतु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर किया जाता है।

यदि आपको किसी प्रकार का अज्ञात भाय, आतंक, दुर्घटना, कलंक की संभावना हो या किसी प्रकार के मानसिक रोग में फंसे हैं, तो आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

यदि कोई आकस्मिक कष्ट संभावित हो तो लहसुनिया धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में केतु लग्न एवं चंद्रमा दोनों से केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया नहीं धारण करना चाहिए।

लहसुनिया बिना किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के न पहनें। लहसुनिया अत्यंत कम समय के लिए धारण किया जाता है। लाभदायक परिणाम प्राप्त होने के बाद इसे विसर्जित कर देना चाहिए।

आपकी राशि वृष, मिथुन या कर्क है। आपको लहसुनिया नहीं धारण करना चाहिए।

ज्योतिषीय परामर्श –

यदि आप कालसर्प दोष, ब्रह्म दोष, मातृ, पितृ दोष से अशुभ फल प्राप्त कर रहे हैं या दुःख, दरिद्रता, अपमान, रोग, शत्रु, कर्ज आदि से लंबे समय से परेशान हैं, तो आप तीन रत्नों का लॉकेट या अंगूठी एक साथ धारण करें।

लाकेट –



१- पन्ना २- हीरा ३- नीलम

अँगूठी -

- १- हीरा (तर्जनी में)
२- नीलम (मध्यमा में)
३- पन्ना (अनामिका)



अन्य महत्वपूर्ण सुझाव -

- १- भाग्यवर्धक रत्न- नीलम
२- कार्य, व्यवसाय, नौकरी, धनदायक रत्न - पुखराज
३- संतान, शिक्षा, ख्यातिदायक रत्न - हीरा
४- भीषण कष्ट, रोग, शत्रु या हानि कारक रत्न - मूंगा, माणिक

सूर्य ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।



चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः ।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्को गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम ॥

सूर्य ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत सूर्य का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य मित्र राशि में सुव्यवस्थित है, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप चौड़े गठन की भव्य और प्रभावी शारीरिक संरचना से पूर्ण होंगे। आप बहुत उत्साही, ऊर्जावान और सदा आशावादी होंगे। आप एक विद्वान, बुद्धिमान और विवेकी व्यक्ति होंगे, लोग आपके विचारों और मतों को मान तथा महत्व देंगे, और आपको बहुत सम्मान देंगे। आप बड़ों, सदाचारी लोगों का आदर करेंगे, और धर्म तथा ईश्वर में आस्था रखेंगे। यद्यपि आप अन्दर से शांतिप्रिय होंगे, फिर भी सुरक्षा के उद्देश्य से आपकी मार्शल आर्ट में महारत हासिल करने में बहुत रुचि हो सकती है, आप अपनी विद्वता का कुशलता से उपयोग ईमानदार योग्य लोगों को उचित प्रशिक्षण देने में कर सकते हैं। आपको अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता

प्राप्त होगी, और आप कई अनुयायियों की प्रेरणा का स्रोत होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य ७वें भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न मिथुन है, तृतीयेश सूर्य की ७वें भाव में स्थिति एक अनुकूल युति नहीं है। आपका किसी पड़ोसी या संबंधी के संबंधी के साथ शादी करने की संभावना हो सकती है (यदि आपके समुदाय में अपनायी जाने वाली वह एक परम्परा है)। अन्यथा आपका जीवन साथी बहुत भावविह्वल हो सकता है, लेकिन बहुत भाग्यशाली नहीं, और आप उनके कारण कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आप किसी निजी संस्था में काम कर सकते हैं, यात्रायें आपके काम का हिस्सा हो सकती हैं, और आप कई बार अपना रोजगार बदल सकते हैं, या आप अपने छोटे सगे या चचेरे अनुज के साथ व्यापार कर सकते हैं - जिससे बाद में आपको कड़े विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या के दिन का जन्म



यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है। इस दिन जन्म होने के कारण आपको पारिवारिक और मानसिक सुखमें कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान-सम्मान में कमी आ सकती हैं। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नहीं हुआ है।

कार्तिक मास का जन्म

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आसपास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म कार्तिक मास में नहीं हुआ है।

संक्रांति के दिन का जन्म

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्रांति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है। तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्यका अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नहीं हुआ है।

सार्पशीर्ष में जन्म

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है। तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

क्रान्तिसाम्य या महापात में जन्म

यदि आपका जन्म क्रान्तिसाम्य या महापात में हुआ है तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रान्तिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू नहीं हो रहा है।

सूर्य ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करनी चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 92 और अधिकतम 30 रविवार को रखनी चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल न करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ५ माला (५४० बार) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

सूर्य ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ को गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

सूर्य ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची
जड़ी - बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़

सूर्य को अर्घ्य देने की विधि एवं मंत्र



सूर्य को अर्घ्य देने से सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। इससे बुद्धि का विकास होता है एवं कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।

सूर्योदय के दौरान तांबे के लोटे में जल भरकर उसमें लाल चंदन, लाल फूल, अक्षत एवं दूध आदि डालकर सूर्याभिमुख होकर अर्घ्य देना चाहिए। सबसे पहले सूर्य का ध्यान करते हुए निम्न विनियोग का जाप करें -

ॐ तत्सवितुर्वरुण्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता, गायत्री छन्दः, सूर्यार्घ्यदाने
फिर सूर्य का आवाहन करके निम्न श्लोक का जाप करते हुए अर्घ्य दें -

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
करूणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

ध्यान मंत्र -

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि ।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतः करब्जैर्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ॥

सूर्य नमस्कार



सूर्य नमस्कार मंत्र -

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

सूर्य नमस्कार से आत्मा की शुद्धि होती है, मानसिक उलझनों एवं विघ्नों से मुक्ति मिलती है तथा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुंह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुंह करके गायत्री मंत्र का 90 या २८ बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुंह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 90 या २८ बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्रीमंत्र का 90 या २८ बार जप करें।

१-सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुंह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

२-माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

३-मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से दूर रहें।

४-अकारण ही क्रोध करने से बचें।

सूर्य ग्रह के लिए स्नान व दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

सूर्य ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

6	1	8
7	5	3
2	9	4

तांत्रिक यंत्र

	9	18	10	11	
7	31	16	19	13	1
17	8	6	12	22	26
30	20	5	21	3	23
28	15	14	4	24	32
	29	27	25	2	

चन्द्र ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।



चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः ।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्को गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम ॥

चन्द्र ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा वृषभ राशि में स्थित है। इस कारण से आप सहनशील, आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दरचाल वाले होंगे। आप मृदुभाषी, धैर्यवान प्रकृति वाले और सभी के प्रिय व्यक्ति होंगे। मित्रों और संबंधियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे, और आप विपरीत लिंग के अनुकूल लोगों की संगति के बहुत शौकीन हो सकते हैं। स्वादिष्ट भोजन आपकी कमजोरी हो सकता है- विशेषकर मीठा खाना, और लोग आपको पेटू समझ सकते हैं। हालाँकि आप विशाल हृदय और उदार भावना वाले व्यक्ति होंगे, और लोगों को उपहार देने में तेज होंगे। आपको कफ की बीमारी हो सकती है, और एक या कई बार वाहन दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं, अपनी बाद की आयु में आपको अपने पुत्र/ पुत्री से परिस्थितियों की बाध्यता के कारण अलग होना पड़ सकता है, जो आपके

नियंत्रण में नहीं होंगी।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा १२वें भाव में स्थित है। इस कारण से आपको सभी प्रकार के रहस्यों और जाँच पडताल में बहुत रूचि होगी, लेकिन प्रारम्भ में आपको कुछ काल्पनिक डर भी हो सकते हैं। कुछ ईश्यालु लोग आपके खिलाफ गुप्तरूप से काम कर सकते हैं- जिनमें से कुछ महिलायें हो सकती हैं, जो आपके लिये परेशानियाँ पैदा कर सकती हैं। अप्रत्याशित घटनाक्रमों के कारण, आपका जबरदस्ती स्थानांतरण हो सकता है, या आपको समय से पहले सेवा निवृत्ति लेनी पड सकती है। हलाँकि, अलगाव की स्थिति में सुदूर स्थानों पर आपको सफलता मिलेगी। यदि चन्द्रमा वृषभ या कर्क या वृश्चिक राशि में स्थित है, तो आपको मिलने वाले किसी सुनहरे अवसर का कुशलता से उपयोग करके आप जीवन में शानदार तरीके से प्रगति करेंगे- अपने पेशे के काफी प्रारम्भिक समय के दौरान।

चन्द्र ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

एक नक्षत्र जन्म दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई-बहनों अथवा अपने माता-पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्म दोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार के सुख और शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड सकता है।

दोष शान्ति के उपाय -

अपने घर में किसी साफ-सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश की स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात् सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से १०८ आहुतियाँ देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण न हो तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चंद्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है। तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यावहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी जन्म कुण्डली में लग्नस्थ चंद्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

यदि आपका जन्म कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनुकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य का काम करने वाले हो सकते हैं। कभी-कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी जन्म कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

केन्द्रम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है। तो आपकी कुण्डली में केन्द्रम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है तो केन्द्रम योग का प्रभव कम हो जाता है।

आपकी जन्म कुण्डली में केन्द्रम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय -

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवानशंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु साथ) चंद्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु साथ स्थित है। तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी जन्म कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय -

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु साथ स्थित है। आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

नीच चंद्र दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी जन्म कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष

यदि आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है तो आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान-सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृत्ति ज्यादा हो सकती है।

आपकी जन्म कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय -

चारों दिशाओं में चार कलश की स्थापना करें और पांचवां कलश अग्निकोण में स्थापित करें (शिव जी के लिए)। सामान्य पूजा करने के पश्चात् अग्निकोण वाले कलश पर त्र्यम्बकमंत्र का जप करते हुए शिव जी की पूजा करें। पूर्व की ओर से शुरू करते हुए पूर्वी कलश पर 'आनो भद्राः' दक्षिण कलश पर 'भद्रा अग्नेः' पश्चिमीकलश पर 'पुरुष सूक्त' और उत्तरी कलश पर 'कद्रुद्राय प्रचेतसे' मंत्र का जप करें। शिव जी का अभिषेक करने के पश्चात् नौ ग्रहों की पूजा करें। सामर्थ्यानुसार अन्न, धन का दान करें।

गण्डमूल दोष

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है तो, आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू नहीं हो रहा है।

नक्षत्र गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म चन्द्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्रके शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी जन्म कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

लग्न गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में लग्न गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी जन्म कुण्डली में लग्न गण्डांत दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय -

लग्न दोष के निवारण के लिए लग्नेश ग्रह की पूजा करनी चाहिए।

आपका लग्नेश बुध और उसका मंत्र निम्न है-

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जगृहि त्वामिष्ट्यापूर्ते सँ सृजेथामयं च।
अस्मिन् सदस्थे अध्युत्तरस्मिन् वियवे देवा यजमानश्च सीदत् ॥

तिथि गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म पूर्णा (५, १०, १५) तिथि अंतिम ४८ मिनट में या नन्दा (१, ६, ११) तिथि के शुरूआती ४८ मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी जन्म कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय -

तिथि गण्डांत दोष के निवारण के लिए तिथि के देवता की पूजा करनी चाहिए।

तिथि के देवता का मंत्र -

नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः।
बाहुभ्यामुतते नमः॥

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा-धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ओम् नमः शिवाय मंत्र का १०८ बार जप करें। चंद्रमा का कवच पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस-मदिरा का सेवन न करें।

१-सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुंह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

२-माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

३-मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से बचना चाहिए।

४-अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

चन्द्रमा ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 90 और अधिकतम ५४ सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्रमा के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या 99 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग न करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहुति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

चन्द्रमा ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

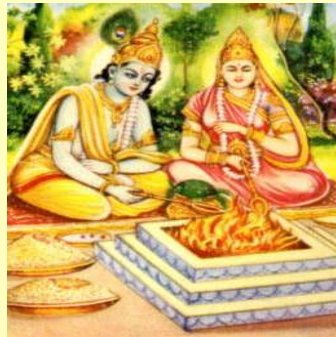


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

चन्द्रमा ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन
जड़ी - खिरनी की जड़

चन्द्रमा ग्रह के लिए स्नान व दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी ईलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूधया दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

चन्द्रमा ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेरुधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

7	2	9
8	6	4
3	10	5

तांत्रिक यंत्र

40	39	24	38	23					
41	6	53	9	8	22				
15	37	16	45	1					
14	43	5	44	46	24				
36	17	52	18	28					
26	13	4	19	2	27				
7	34	33	20	29					
60	35	32	3	59	30				
42	12	21	31	11					
57	54	55	52	58	10	56	47	48	49

मंगल ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात ।



भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः ।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकुलोद् भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

मंगल ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे, जबकि कुछ अन्य मामलों में ऐसा नहीं हो सकता है। आपका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ है, और विभिन्न प्रयासों और व्यवसायों से आप अपने भाग्य में सुधार करेंगे। भौतिक सम्पत्तियों और संतान तथा जीवन साथी के साथ एक सम्पन्न जीवन गुजारने के मामलों में यह स्थिति बहुत अनुकूल है। आप कर्तव्यपरायण होंगे, और धार्मिक कृत्यों का निर्वाहन करेंगे। हालाँकि आप बहुत आवेगी और प्रतिरोधी प्रकृति के हो सकते हैं, आप

आक्रमक प्रकृति और लडाकु स्वभाव वाले हो सकते हैं, अपने रात्रुओं के प्रति आप निष्ठुर हो सकते हैं, और उनको नुकसान और चोट पहुँचा सकते हैं। आपको हथियार, जहर या आग से भय हो सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल दृढे भाव में स्थित है। आपके मामा, मौसी या सौतेली माता (यदि कोई है) के स्वास्थ्य और सुख के लिये यह स्थिति विशेषरूप से प्रतिकूल है। चिन्ता का कारण हो सकता है। हलाँकि प्रतियेगी परीक्षा में सफल होने और किसी बड़े संगठन में एक मोहक रोजगार पाने के लिये यह स्थिति बहुत शुभ है। आपका कुछ एक बार स्थानांतरण हो सकता है, या आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। आपकी किसी तुर्क (मुस्लिम) मूल के व्यक्तिके कारण परेशानियों में पड सकते हैं- जिसके लिये आपको सावधान रहना चाहिये। यदि मंगल मेष या वृश्चिक या मकर राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे, और भारी धन प्राप्त करेंगे, लेकिन यदि कर्क राशि में है, तो आपको किसी छोटी जगह पर अपेक्षाकृत निचले स्तर पर काम करना पड सकता है।

भावगत / राशिगत मंगल का विशेष फल

आपकी कुण्डली में मंगल वृश्चिक राशि में स्थित है। आपको पेट की खराबी और त्वाचा में विकार आदि का सामना करना पड सकता है। आपको अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। आपको दुर्घटना आदि से चोट के निशान भी बन सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल छठे भाव में स्थित है। आपमें काम-वासना आदि के विचार ज़्यादा हो सकते हैं और उनको दबाना भी आपके लिए बड़ा मुश्किल हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन ८ बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर कण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ओं हां हां सः खं खः। मंत्र का 90८ बार पाठ जप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज़्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त न कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन २८ बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार-बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात न मानते हों तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रुद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रुद्रसूक्त का जप मुश्किल है तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन २८ बार जप करें।

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

मंगल ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम २१ और अधिकतम ४५ मंगलवार को रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जिन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार

१, ५ या ७ माला का जप करना चाहिए। सॉड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें और लाल कपड़ा, तांबा, मसूर, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

मंगल ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफन्ती (गो जिह्वा संगमुसी नाग जिह्वा) की जड़ को लाल कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम
जड़ी - सौंफ की जड़, नाग जिप्सा, अनन्त मूल

मंगल ग्रह के लिए स्नान व दान

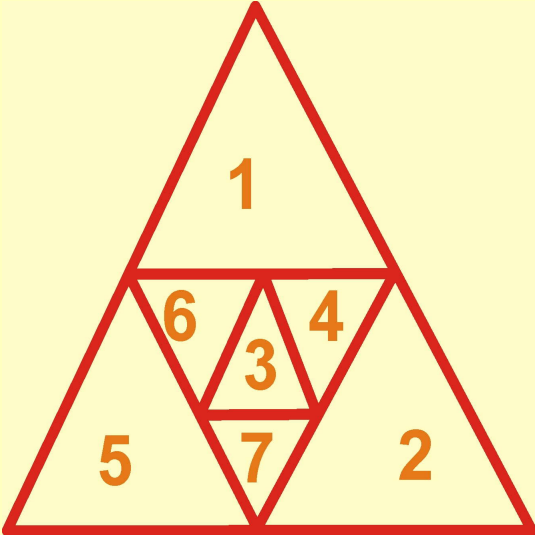
लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेंहूँ, मसूर या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

मंगल ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

8	3	10
9	7	5
4	11	6

तांत्रिक यंत्र



बुध ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

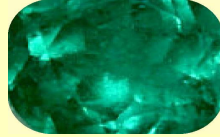


ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात् ।



सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो ।
बाणेशानदिशः सुहृच्चछनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः ॥
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो ।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

बुध ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध धनु राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलो में भाग्यशाली होंगे। यदि बृहस्पति इस राशि में स्थित है, या बुध पर उसकी दृष्टि है, तो आपके भाग्य में और बढ़ेत्तरी होगी। आप एक बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति होंगे, पवित्र धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन आपको ज्ञानी और विवेकी बनायेगा। आप बहुत उदार प्रकृति वाले और प्रखर वक्ता होंगे। आप किसी व्यावहारिक कला या शिल्प में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। आपका स्वभाव दयालु और विनम्र होगा, और काफ़ी कम आयु के दौरान आप अपने जीवन में विशिष्टता प्राप्त करेंगे। आपका धार्मिक रुझान बहुत उत्कृष्ट होगा, और आप अमूर्त ध्यान योग का अभ्यास कर सकते

हैं।

आपकी कुण्डली में बुध ७वें भाव में स्थित है। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे- जैसे कि आपको भद्र योग (पंचमहापुरुष योग युति) का सुख मिलेगा। इस कारण से, आप एक विद्वान, बुद्धिमान और मृदुभाषी व्यक्ति होंगे, इसके अलावा, आप अपने सभी कामों में निडर और सफल होंगे। कुछ हद तक गोपनीय होने के कारण आपके संबंध अपने से आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आप एक विद्वान व्यक्ति होंगे, और लोग आपको सम्मान तथा आदर देंगे। यदि बुध मीन में स्थित है, तो आप एक औसत व्यापार कर सकते हैं- जैसे चप्पल, जूतों की बिक्री। यदि किसी और राशि में है, तो आपका वैवाहिक जीवन कुछ हद तक अस्थिर हो सकता है, आप चिन्तित और परेशान हो सकते हैं, और लड़ाई, विरोध तथा मुकदमों के कारण समस्या का सामना कर सकते हैं।

भावगत / राशिगत बुध का विशेष फल

आपकी कुण्डली में बुध धनु राशि में स्थित है। आपकी दयालुता आपकी परेशानी का कारण हो सकती है। आपमें दूसरों को उचित सलाह देने की कबिलियत हो सकती है, पर खुद तंगहाल हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। आपका अपने जीवनसाथी के साथ मनमुटाव हो सकता है या उनके साथ आपके विचार बहुत ही कम मिलेंगे।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुतलाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियन्त्रण नहीं है तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र शुरु करके अगले २७ दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ हैं या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में ३ बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों-फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का १० हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से १००० आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 90 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित हैं तो आपको विष्णु सहस्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ओम् नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का २८ या १०८ बार जप करें।

- १-बिना अपशब्दों का प्रयोग किये बोलें।
- २-अपने से छोटों के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करें।
- ३-किसी कार्य के लिए गलत तरीका न अपनायें।

बुध ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम २१ और अधिकतम ४५ बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या १० माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बाँटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आपशैक्षणिक क्षेत्र या व्यवसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता

है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

बुध ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

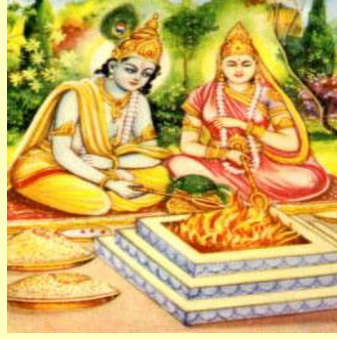


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवारया आरलेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

बुध ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों
जड़ी - भारंगी की जड़

बुध ग्रह के लिए स्नान व दान

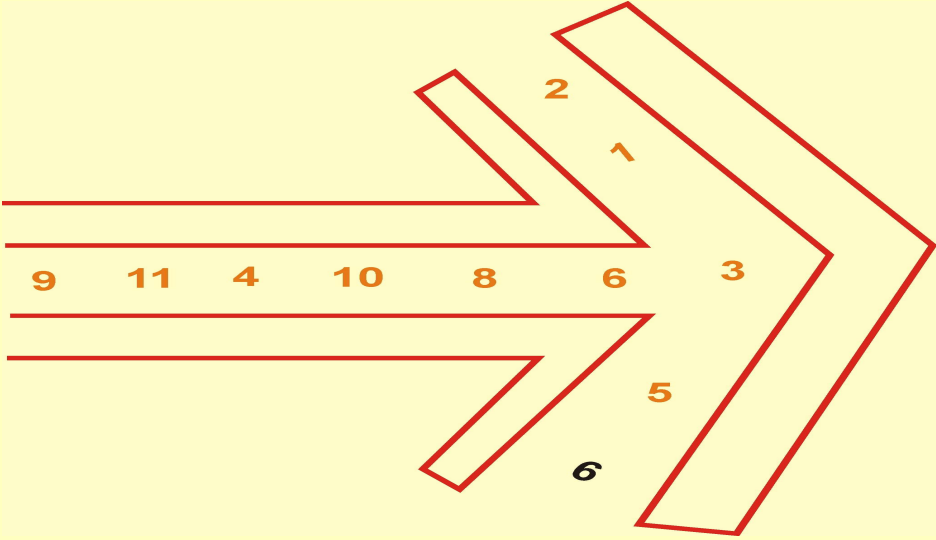
आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग का दान करना चाहिए।

बुध ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

9	4	11
10	8	6
5	12	7

तांत्रिक यंत्र



गुरु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।



जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तस्मुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः ।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः ॥
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे ।
सप्तांकद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम ॥

गुरु ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत बृहस्पति का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति कुम्भ राशि में स्थित है। जैसाकि कुम्भ राशि का हृदय रोग से घनिष्ठ संबंध है, आपको बहुत सावधान और सजग रहना चाहिये-जैसाकि आपको ऊँचे रक्तचाप की शिकायत होने का भय है। कभी कभार आपका स्वास्थ्य और सुख आपके परिवार की चिन्ता का कारण हो सकता है। आप पेशे से आय अर्जित करने और दूसरे स्रोतों से लाभ कमाने के मामले में भाग्यशाली होंगे, लेकिन अपनी गलती से आप अपने संग्रहों का एक बड़ा भाग गँवा सकते हैं। इसके अलावा, आप बहुत आवेगी और कुछ कामी भी हो सकते हैं।

आपका दृष्टिकोण संकीर्ण और प्रकृति हठी हो सकती है, और आपको सिर्फ अपने हितों से सरोकार हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति ६वें भाव में स्थित है। इस कारण से, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपका जन्म धनी परिवार में हुआ है, और आपके पिता एक बहुत आदरणीय व्यक्ति होंगे, इसके अलावा, आपके सगे भाई बहन आपके लिये बहुत मददगार होंगे, और आपकी संतानें बहुत योग्य और कर्तव्यपरायण होंगी। आप सुशिक्षित होंगे, और आगे पढाई जारी रखने और / या शोध करने में रुचि होगी, आप कुछ नयी चीजों की खोज कर सकते हैं, और शैक्षणिक संस्थानों से नजदीकी से जुड़े हो सकते हैं। आपका धार्मिक रुझान बहुत उत्कृष्ट होगा, आप दूरस्थ स्थानों और विदेशों से भी उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं, आप आयात निर्यात के व्यापार में लगे हो सकते हैं। आप कई यात्रायें कर सकते हैं, और किसी सांस्कृतिक या धार्मिक उद्देश्य से विदेश भी जा सकते हैं।

भावगत / राशिगत बृहस्पति का विशेष फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति कुंभ राशि में स्थित है। आप रोगों से परेशान रह सकते हैं। आपमें लालच की अधिकता होगी। आप अपने वचन पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं तथा कुछ हद तक चुगलखोरी भी कर सकते हैं।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत न हो तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 90 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम-धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 90 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह-शाम करें।

यदि लड़की की विवाह में रुकावट आ रही हो या रिश्ता बनते-बनते रह जा रहा हो तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो तो दुर्गा सप्तशती के 99 पाठ करें।

बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल,

पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दानकरना चाहिए।

- १-शिक्षकों, गुरुओं, वृद्धों, साधु-संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करें।
- २-कोर्ट-कचहरी में झूठी गवाही न दें।

बृहस्पति ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम २१ गुरुवार और अधिकतम ३ साल तक हर गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या ११ माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बाँटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बाँटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

बृहस्पति ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

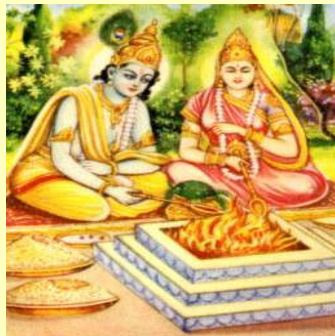


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

बृहस्पति ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - हल्दी, सूखा गुलाब

जड़ी - केले की जड़

बृहस्पति ग्रह के लिए स्नान व दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

बृहस्पति ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेरुधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

10	5	12
11	9	7
6	13	8

तांत्रिक यंत्र

15	28	29	30	32	31	
14	6	13	10	16	17	26
11	22	1	9	21	8	
23	5	4	12	2	7	20
26	24	25	3	18	19	

शुक्र ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ।



शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक् ।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः ॥
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू ।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

शुक्र ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। जैसाकि शुक्र इस राशि में सुव्यवस्थित नहीं है, आप कुछ मामलो में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, आपका शरीर कमजोर हो सकता है, और आप कंजूस हो सकते हैं। जैसाकि वादों को पूरा करना आपकी आदत नहीं हो सकती है, अतः लोग आप पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपको दूसरों के मामलों में अधिक रूचि हो सकती है, कुछ अन्य के पास होने वाली किसी चीज का स्वयं के पास अभाव होने की सोच आपको अप्रसन्न कर सकती है। आपका वैवाहिक जीवन

ना ही खुशहाल हो सकता है, और ना ही लम्बे समय तक रहने वाला हो सकता है। हलाँकि बाद की आयु में आपकी संभावनायें उत्तम हैं, और आप जीवन के उस भाग में काफ़ी सुखी होंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र ढवें भाव में स्थित है। इस कारण से आपकी रंगत बहुत गोरी, और रूप बहुत सुन्दर तथा मनोहारी होगा, आप दीर्घजीवी, काफ़ी धनवान, निरोगी और गंभीर समस्याओं तथा परेशानियों से कष्टरहित होंगे। आपकी शादी के बाद आपका भाग्य और चमकेगा। आप विरासत या पैतृक सम्पत्ति से बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं, और कुलीन पृष्ठभूमि की धनी महिलाओं से सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन आपका जीवन साथी मौज मस्ती, आभूषणों, निजी सौन्दर्य प्रसाधनों और जीवन की अन्य सुन्दर चीजों का बहुत शौकीन हो सकता है। वह बहुत खर्चीला हो सकता है- जिससे आप कभी-२ बहुत परेशान हो सकते हैं। यदि शुक्र राहु के पास में स्थित है, तो आप अपने जीवन साथी के कारण या उसकी तरफ से कुछ असामान्य परेशानियों का सामना कर सकते हैं, आपको चोरी या लूट के कारण भी कुछ नुकसान हो सकते हैं। यदि शुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो आप धन के सागर में गोते लगायेंगे।

शुक्र का विशेष फल, उपाय सहित

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुँचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव-पार्वती या विष्णु-लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफ़ीलाभदायक होगा।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको भाग्य व धन वृद्धि के लिए आश्विन नवरात्रि के दौरान श्री सूक्त का संपुट लगाकर दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम-वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प सूक्त का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना १० बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास न हो तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हों तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र के दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है या संबंध तय नहीं हो पा रहा है तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार-बार चोट लगती है या शरीर में विकार उत्पन्न होता है तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

१-अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।

२-कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शुक्र ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शुक्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम २१ गुरुवार और अधिकतम ३१ शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या २१ माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आँख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चॉदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल

होगा।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शुक्र ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

शुक्र ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले
जड़ी - अरंडे की जड़

शुक्र ग्रह के लिए स्नान व दान

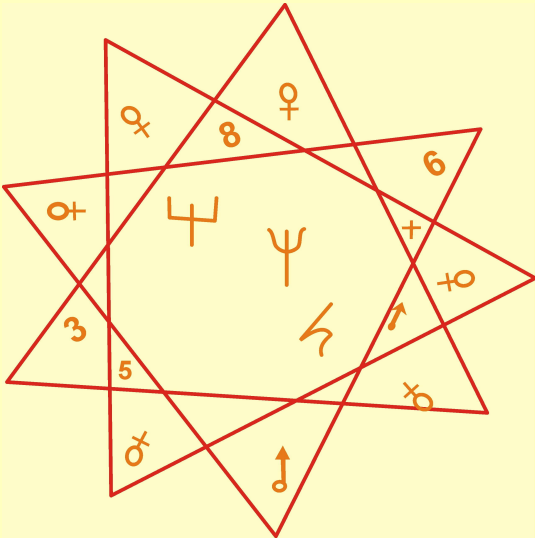
स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

11	6	13
12	10	8
7	14	9

तांत्रिक यंत्र



शनि ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात् ।



मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः कारयपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समरचाण्डिगराः॥
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम् ॥

शनि ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत शनि का फल

आपकी कुण्डली में शनि मकर राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप तीक्ष्णरूप से बुद्धिमान और अवधारक स्मरण शक्ति वाले होंगे - जो किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिये आपकी पूँजी होगी। आप धैर्य और निस्तर परिश्रमशील होने के गुणों से पूर्ण होंगे, आपका दृढनिश्चय और बल आपको अपने व्यवसाय के शिखर पर ले जायेगा। आप सद्गुणी स्वभाव वाले होंगे, और पवित्र प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन उत्कृष्ट रुचि के साथ करेंगे, आप ललित कलाओं के किसी क्षेत्र में कुछ निपुणता हासिल कर सकते हैं। यद्यपि आप साहसी और स्पष्टवादी होंगे, फिर भी आपका दिमाग संतुलित और

स्वभाव नम्र होगा। व्यसाय से आपकी आय में कोई बाधा नहीं आयेगी, और आप किसी धनी महिला से उपहार / सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। हलाँकि, आपकी आँखें थोड़ा कमजोर हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में शनि ढवें भाव में स्थित है। इस कारण से आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, लेकिन आप दीर्घजीवी होंगे, यह स्थिति आपके जीवन साथी के स्वास्थ्य और सुख के लिये उत्तम नहीं है, और उसकी शारीरिक संरचना रूग्ण हो सकती है। इसके अलावा, आपके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत उत्तम नहीं हो सकती है, और आपकी व्यवसाय से आय बहुत पर्याप्त नहीं हो सकती है, इस कारण से आप अपने व्यवसाय के प्रारम्भिकचरण में काफी लम्बे समय तक कड़ा संघर्ष कर सकते हैं। यद्यपि आपकी महत्वाकांक्षा बहुत ऊँची हो सकती है, फिर भी कठिन परिश्रम के बावजूद आपको केवल आंशिक सफलता मिल सकती है, वांछित विशिष्टता के स्तर को प्राप्त न कर पाने के कारण आप बहुत अप्रसन्न हो सकते हैं। यदि सूर्य शनि के साथ में स्थित है, तो आपके पिता की मानसिक स्थिति का ह्यस आपकी वास्तविक चिन्ता का बड़ा कारण हो सकता है। यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे—जैसाकि आपको विपरीत राज योग के शुभ परिणामों का सुख प्राप्त होगा, आप स्तर के एक अचानक ऊँचाई पर पहुँच जाने के कारण जीवन में प्रगति करेंगे।

शनि का विशेष फल, उपाय सहित

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मकर राशि में स्थित है। आपको कार्य के सिलसिले में प्रायः घर से बाहर रहना पड़ सकता है, जिसकी वजह से आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि आठवें भाव में स्थित है। आपके गुप्तांगों में किसी तरह का कोई रोग हो सकता है। किसी काम को बहुत जोर-शोर से शुरू करने के बाद आपको ध्यान उसकी तरफ से उचट सकता है और फिर किसीनये काम को शुरू करना चाह सकते हैं।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आये तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर न चलकर आपकी अवहेलना करती है तो आपको शनि गायत्री का नियमित २० या १०० बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा अथवा अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार-बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कड़ुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ-सफ़ाई पर विशेष ध्यान दें। साफ-सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात् रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग न करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक न मारें। उनका व्यर्थ में अपमान न करें।

शनि ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या १६ माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एवं तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैंक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल

करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शनि ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

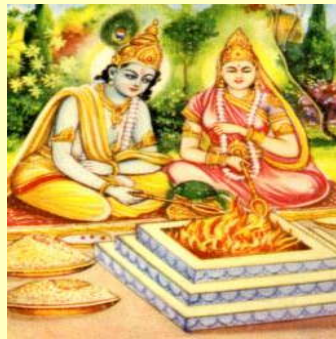


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहरके समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

शनि ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी

लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़
जड़ी - धतूरे की जड़

शनि ग्रह के लिए स्नान व दान

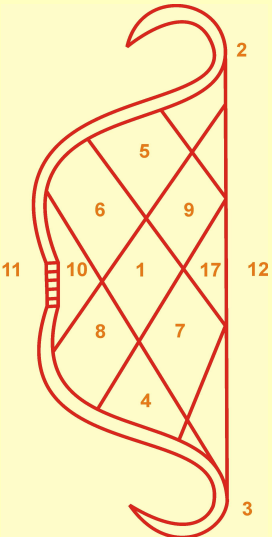
स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबुत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

शनि ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

12	7	14
13	11	9
8	15	10

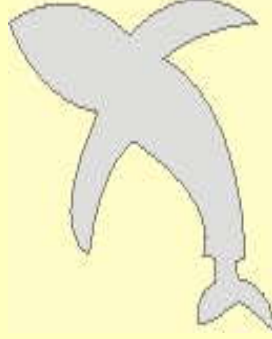
तांत्रिक यंत्र



राहु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

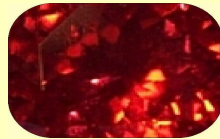


ओं नीलवर्णाय विद्महे सैहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ।



राहुः सिंहलदेशजश्च निर्वृतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो ।
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः ॥
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्वृतिः प्रत्याधिदेवः सदा ।
षट्त्रिस्थः शुभकृच सिंहिकासुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

राहु ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु १२वें भाव में स्थित है। इस कारण से, आप किसी प्रतियोगिता, प्रतियोगी परीक्षा या स्पर्धा में सफल होंगे, आप व्यापक रूप से अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होंगे, और लम्बे समय तक उनको दूर रखेंगे। हालाँकि आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, और आपके ननिहाल के किसी संबंधी का स्वास्थ्य

बहुत उत्तम नहीं हो सकता है। यदि बृहस्पति भी राहु के साथ है, तो आपकी किसी एक संतान के विचार कुछ हद तक संशयपूर्ण हो सकते हैं। यदि कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह राहु के साथ है, या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आपको उठाईगिरी, चोरी, लूट या कुर्की के कारण भी नुकसान हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु किसी अनुकूल राशि (वृषभ या कुम्भ या कन्या) में स्थित है, जो किसी प्रतिकूल त्रिक भाव(६ठा / ८वाँ/ १२वाँ)के साथ नहीं मिलता है। यह एक अनुकूल युति है, और आप राहु की स्थिति वाले भावके महत्व के मामले में आप भाग्यशाली होंगे। राहु की भुक्ति या दशा के दौरान इसके प्रभाव में और बढ़ोत्तरी होगी। हलाँकि आपको इसके अन्तिम चरण के दौरान सावधान रहना चाहिये- जैसाकि राहु में जाने से पहले जातक को दिये गये लाभों को वापस ले लेने की प्रवृत्ति होती है।

भावगत / राशिगत राहु का विशेष फल

आपकी कुण्डली में राहु सूर्य या चंद्रमा के साथ स्थित है। आपको कोई निर्णय लेने में मुश्किल हो सकती है या आपकी निर्णयक्षमता में कमी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु सूर्य या चंद्रमा के साथ छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आप अचानक समस्याओं से घिर सकते हैं।

राहु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबूदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गाका स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक कुछ पल पहले या बाद में तथा आस-पास में किसी की मृत्यु के बाद राव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग न करें। भोजन करतेसमय अपना सिर ढक कर न रखें और दक्षिण की ओर मुंह करके भोजन न करें।

१-अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कर सेवा करें।

२-सफ़ाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार न करें।

राहु ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

राहु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। राहु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत १८ शनिवार को करना चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या १८ माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खानी खुद भी चाहिए और दान भी करना चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

राहु ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

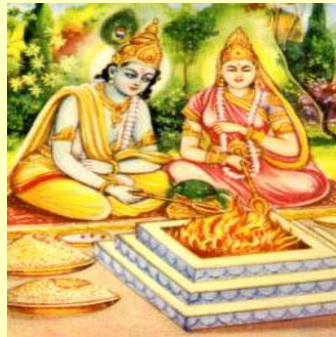


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम ४ बजे के आस-पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

राहु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - चंदन की लकड़ी

जड़ी - अष्टगन्ध मूल

राहु ग्रह के लिए स्नान व दान

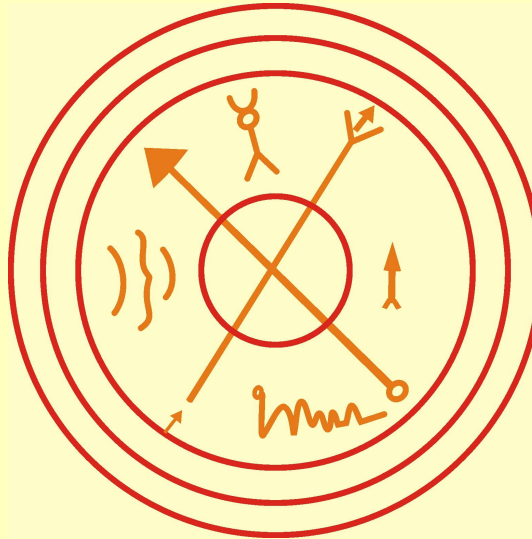
स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

राहु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेरुधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

13	8	15
14	12	10
9	16	11

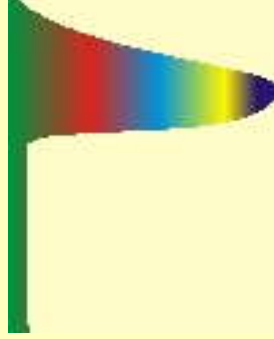
तांत्रिक यंत्र



केतु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात् ।



केतुर्जेमिनिगोत्रजः कुशसमृद् वायव्यकोणे स्थितः ।
चित्राद्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः ॥
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा ।
षट्त्रिस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥

केतु ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु ढटे भाव में स्थित है। इस कारण से आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, और आपके किसी ननिहाल के संबंधी का स्वास्थ्य बहुत उत्तम नहीं हो सकता है। हलाँकि किसी प्रतियोगिता, प्रतियोगी परीक्षा या स्पर्धा में सफलता प्राप्त करने के लिये यह स्थिति बहुत उपयोगी है, आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होंगे। हलाँकि, यदि केतु के साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह है, या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप बुरी

संगति में पड सकते हैं, और बुरी लतों का शिकार हो सकते हैं, तथा आप कर्ज में डूब सकते हैं, आपके पुराने मित्र आपको छोड सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, केतु एक अनुकूल राशि वृश्चिक में स्थित है, जो किसी प्रतिकूल त्रिक भाव(६ठा / ८वाँ/ १२वाँ)के साथ नहीं मिलता है। यह एक अनुकूल युति है, और केतु की स्थिति वाले भाव के महत्व के मामले में आप भाग्यशाली होंगे। केतु की भुक्तिया दशा के दौरान इसके प्रभाव में और बढेत्तरी होगी। हलाँकि आपको इसके अन्तिम चरण के दौरान सावधान रहना चाहिये- जैसाकि केतु में जाने से पहले जातक को दिये गये लाभों को वापस ले लेने की प्रवृत्ति होती है।

केतु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबूदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गाका स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक कुछ पल पहले या बाद में तथा आस-पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग न करें। भोजन करतेसमय अपना सिर ढक कर न रखें और दक्षिण की ओर मुंह करके भोजन न करें।

१-अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।

२-सफ़ाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार न करें।

केतु ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

केतु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। केतु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में

शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत १८ शनिवार को करना चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या १८ माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खानी खुद भी चाहिए और दान भी करना चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

केतु ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

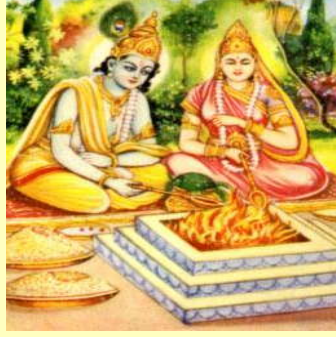


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

केतु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी)
जड़ी - वट वृक्ष की जड़

केतु ग्रह के लिए स्नान व दान

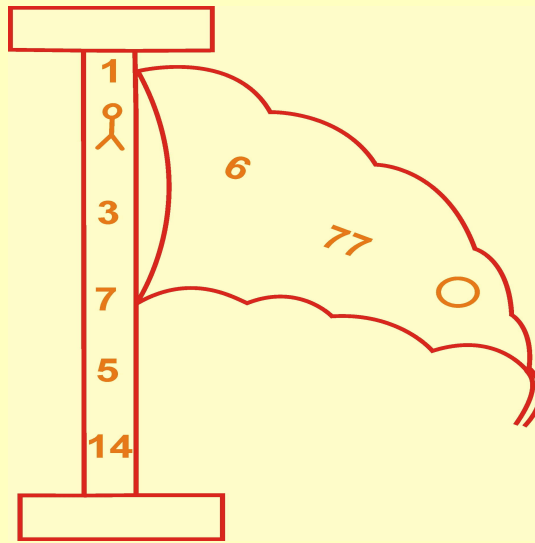
स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबूदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग-बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुंह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लालअनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

केतु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चांदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चांदी या तांबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

14	9	16
15	13	11
10	17	12

तांत्रिक यंत्र



गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादश जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत्।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(आमतौर पर यह माना जाता है कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिकसंकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिंतित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय - साढ़े-सात साल - ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, ऊँचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी की प्राप्ति आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढ़ेसाती के पहले चक्र का विवरण

प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि - मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

साढ़ेसाती के पहले चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। आपके सभी कार्यों में अवरोध पैदा होंगे एवं विफलता प्राप्त होगी। आप मानसिक एवं शारीरिक रूप से अस्थिर रहेंगे। इस चरण के शुरुआत में ही आपको शारीरिक कष्ट शुरू हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो वरिष्ठ अधिकारी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपके खिलाफ कोई षडयंत्र रच सकते हैं, जिससे आपकी नौकरी भी जा सकती है या फिर आपका स्थानांतरण हो सकता है। आप कुछ भी ठीक से सोच पाने की स्थिति में नहीं होंगे और परेशानियों से तंग आकर आप कोई कुटिल रास्ता अपना सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं तो आपके कर्मचारी आपको धोखा देनेकी कोशिश कर सकते हैं। आप अपना व्यवसाय बंद करने की बात भी सोच सकते हैं। हो सकता है कि अपने व्यवसाय के सिलसिले में आपको विदेश यात्रा करनी पड़े, लेकिन वहाँ भी आपको हानि ही होगी। आपके व्यवसाय के दायरे के लोग आपका पैसा हजम करना चाह सकते हैं। आपका व्यापार आर्थिक संकट के दौर से गुजर सकता है। आप पर दोषारोपण हो सकता है।

आपका पारिवारिक जीवन शांतिमय नहीं हो सकता है। जीवनसाथी के साथ मतभेदों या मनमुटाव के कारण आप गलत रास्ते को अपना सकते हैं। धर्म के प्रति आपकी रूचि कम होती जायेगी और धार्मिक कार्य आपको ढक्कोसले लग सकते हैं। आप खुद से कोई महत्वपूर्ण फैसला लेने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं। किसी की मदद से यदि

आप कोई फैसला लेते हैं, तो वो भी गलत साबित हो सकता है। लोग आपको अपमानित कर सकते हैं। आपको अपने मित्रों से भी धोखा मिल सकता है। आर्थिक संकट के समय आपकी मदद करने की जगह वे आपका पैसा भी हड़प सकते हैं। लोगों के बीच आप निंदा के पात्र बन सकते हैं। आपके पारिवारिक सदस्य भी आपको अपमानित कर सकते हैं। जीवनसाथी के साथ अक्सर कहा-सुनी हो सकती है। खत्म न होती परेशानियों एवं मानसिक तनाव के कारण आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं और दुर्बलता, दस्त, उन्माद, भय तथा अनिद्रा जैसी बीमारियों के शिकार हो सकते हैं।

आप अक्सर चिंतामग्न रह सकते हैं। निराशाओं से व्यथित होने के कारण आप कई व्यसन अपना सकते हैं। अपनीबुरी लतों की पूर्ति हेतु आप गलत रास्ते भी चुन सकते हैं। लेकिन, यदि रानि पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव है तो आप व्यसन तो नहीं करेंगे, परंतु व्यर्थ के खर्चों में अपना धन बर्बाद कर सकते हैं और अपने परिवार वालों की नजर में गिर सकते हैं। इस बीच आपके स्वभाव में काफी बदलाव होगा और आप कुटिल एवं कटुभाषी होने के साथ साथ अपने परिवार वालों पर भी शक कर सकते हैं। आप दया, प्रेम, ममता एवं अपनापन से दूर होते जायेंगे।

आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि किसी प्रकार की दुर्घटना होने की काफी संभावना है। आपके बड़े भाई एवं मामा को भी कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु ३४ से ३८ साल के बीच है तो आपको अधिक कष्ट हो सकते हैं। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में रानि लगनेवाला है या तीसरे या छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित है तो इतने अशुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। यदि किसी शुभ ग्रह की दशा भी चल रही है तो आप काफी उन्नतिकरेगें। आप बहुत कम समय में ही कल्पनातीत सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको निरंतर आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। समाज में लोग आपका सम्मान करेंगे। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे, वो सफल होगा। धीरे-धीरे आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती जायेगी। आपके कुछ कार्य ऐसे संपन्न होंगे कि आपको पता भी नहीं चलेगा।

द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि - वृष

Start -08:08:2029

End -05:10:2029

Duration -0 y.1 m.27 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -17:04:2030

End -31:05:2032

Duration -2 y.1 m.14 d.

इस चरण के दौरान आपको शुभ फल अधिक प्राप्त होंगे। आपको अपने कार्यों में रुकावट आ सकती है, लेकिन अन्य अशुभ फलों में कमी आयेगी। इस दौरान आप पर काम का बोझ अधिक हो सकता है। लोग आपके माध्यम से अपना कार्य सिद्ध कर सकते हैं। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो लोग कल तक आपके साथ थे, वे अब कोई बहाना कर आपसे मुँह चुरा सकते हैं। सत्तापक्ष आपका विरोधी हो सकता है। आपके मान-सम्मान में भी कमी हो सकती है। हालाँकि, आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा, लेकिन आपके पराक्रम में काफी कमी आयेगी। अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिवार एवं जीवनसाथी को पर्याप्त समय देनेमें अक्षम हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको परिवार का विरोध सहना पड़ सकता है। मानसिक तनाव के

कारण आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। आपको अपने दाम्पत्य जीवन पर अधिक ध्यान देना चाहिए और अपने परिवार को पर्याप्त समय देना चाहिए, जिससे किसी तरह की पारिवारिक समस्या का सामना न करना पड़े। आपके छोटे भाई-बहनों को भी कुछ अशुभ फल प्राप्त हो सकता है।

इस चरण में आपको अशुभ फल बहुत कम प्राप्त होंगे। जैसे ही शुभ फल मिलना शुरू होगा, आपकी उन्नति दिनदूनी - रात चौगुनी होती जायेगी। इस दौरान आप भूमि एवं भवन भी खरीद सकते हैं। काम के सिलसिले में आप लंबी यात्रायें भी कर सकते हैं। आप जो भी कार्य करेंगे, उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। सत्तापक्ष से सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपके शत्रु आपसे समझौता करने का प्रयास करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ हो जायेगी। इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु ३४ साल से ३८ साल के बीच है, तो आप काफी उन्नतिकरेगें। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। आप अपने मनचाहे स्थान पर अपना स्थानांतरण करवा सकते हैं। आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपकी काफी मदद करेंगे।

आपको अपने खान-पान एवं स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए। आपका अधिकांश समय व्यवसाय या नौकरी के सिलसिले में यात्राओं में निकल सकता है। इस बीच आप तीर्थ स्थानों की भी यात्रा कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में या गोचर में मंगल अशुभ हो रहा है, तो वाहन चलाते समय आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि कोई दुर्घटना होने की संभावना हो सकती है। आपको उदर विकार, रक्त विकार या नेत्र विकार के कारण भी कष्ट हो सकता है। आपको अतिविश्वास में कोई कार्य नहीं करना चाहिए, अन्यथा गंभीर परिणाम हो सकते हैं। आपके छोटे-भाई बहन भी आपकी मदद से काफी उन्नति कर सकते हैं। आपको धर्म पर विश्वास करना चाहिए एवं धर्म विरोधी कार्य नहीं करना चाहिए। आपको शराब एवं मांस से परहेज करना चाहिए एवं मजदूरवर्ग को बिना किसी बात का परेशान नहीं करना चाहिए।

तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -मिथुन

Start -31:05:2032

End -13:07:2034

Duration -2 y.1 m.12 d.

इस चरण की शुरुआत में आपकी जमा पूँजी कम हो सकती है। आपका धन कुछ ऐसे कार्यों में खर्च हो सकता है, जिसे आप करना न चाह रहे हों। धीरे-धीरे आप आर्थिक संकट में फँस सकते हैं एवं दुःखी रह सकते हैं। आपके हर सुख में कमी आ सकती है। यदि गोचर में मंगल या केतु अशुभ प्रभाव में हैं तो वाहन दुर्घटना भी हो सकती है।

इस चरण के मध्यकाल से कुछ पहले आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। आप सिर्फ आर्थिक संकट से मुक्त ही नहीं होंगे, बल्कि ऐसी स्थिति में रहेंगे कि दूसरों की मदद कर सकें। इस समय आपको हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपको समाज में सम्मान प्राप्त होगा। जो लोग कल तक आपका अपमान करते थे, वे भी मित्रता करना चाहेंगे।

आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए। आपको उपर से गिरने, शस्त्राघात, पानी या आग से खतरा हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपका स्थानांतरण हो सकता है। यदि आप खुद का कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको आर्थिक लाभ तो प्राप्त होगा, लेकिन आपके कर्मचारी आपको धोखा देने की कोशिश कर सकते हैं। आपके कर्मचारियों के कारण आपकी साख खराब हो सकती है। आपको सरकार या

सरकारी संस्थानों से लाभ एवं सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपके आर्थिक प्रयास सफल होंगे। इस चरण के दौरान आप भूमि, भवन या वाहन की खरीद-बिक्री कर सकते हैं।

आपके शत्रु परास्त होंगे, लेकिन उनके द्वारा रचे गये षडयंत्र से मानसिक तनाव हो सकता है। आप भौतिक सुख-सुविधा पर काफी खर्च कर सकते हैं और इसकी वजह से अपने जीवनसाथी से मतभेद भी हो सकते हैं। आपको अपने सामान्य बोल-चाल में मधुरता रखनी चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है। यदि शनि आपकी कुण्डली में कारक है या तीसरे या छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित है तो आपके लिए यह समय बहुत उत्तम रहेगा। आपको हर तरफ से सम्मान एवं आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। आप जिस कार्य में हाथ डालेंगे, वह सफल होगा।

इस चरण के अंत में आप कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं। इससे आपका सम्मान बढ़ेगा। आप विदेश यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शनि पर शुक्र का प्रभाव है तो आप भोग-विलास में मग्न रह सकते हैं, इससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है और यदा-कदा आपको अपमानित भी होना पड़ सकता है। आप कई लाभकारी यात्रायें कर सकते हैं। व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। किसी पर अधिक विश्वास न करें, अन्यथा धोखा मिल सकता है। राजपक्ष से लाभ प्राप्त होगा। अवरोधों के बावजूद आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगे, उतना अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। थोड़े समय के लिए आर्थिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है, लेकिन आप तुरंत हाथ की स्थिति में आ जायेंगे। आपको लाभ अधिक एवं हानि कम होगी।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -सिंह

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

इस चरण के शुरुआत में आपको कुछ अशुभ फल प्राप्त होंगे, लेकिन शनि जैसे-जैसे आगे बढ़ता जायेगा, आपको शुभ फल प्राप्त होते जायेंगे। इस दौरान आपको अपने वाहन तथा भवन का विशेष ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा हानि हो सकती है। आपको अपने कार्य क्षेत्र में अचानक लाभ प्राप्त हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे खुश रहेंगे। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो आपका व्यवसाय काफी उत्तम स्थिति में होगा। उन्नति के नये मार्ग प्रशस्त होंगे। कल तक जो आपके साथ व्यापार करना नहीं चाहते थे, वे भी व्यापार करने को इच्छुक रहेंगे। लेकिन ऐसे लोगों से आपको सावधान रहना चाहिए, क्योंकि मौका मिलते ही वे आपको हानि पहुँचा सकते हैं।

इस चरण में आपके गुप्त शत्रु अधिक सक्रिय रहेंगे। वे आपको हानि पहुँचाने की हर संभव कोशिश करेंगे, लेकिन आप अपनी बुद्धिमत्ता से बचते रहेंगे। आपको अपनी शक्ति को नियंत्रित कर रखना चाहिए, अन्यथा आपके गुप्त शत्रु अपने मकसद में कामयाब हो सकते हैं। आपके शत्रु आपसे समझौते का प्रयास करेंगे और आपको खुद से अधिक शक्तिशाली बतायेंगे। परंतु, वास्तविकता में वे आपको हानि पहुँचाने की ताक में हैं। आप शक्तिशाली लोगों के संपर्क में आ सकते हैं। इस दौरान ग्रहों के कुप्रभाव के कारण आपकी माता को कष्ट हो

सकता है, जिसकी वजह से आप अपने काम पर अधिक ध्यान नहीं दे पायेंगे और आपको हानि हो सकती है। आप अपना निवास परिवर्तन या नया निर्माण करना चाहते हैं तो उसे कुछ समय के लिए टाल दें एवं उचित समय का इंतजार करें।

इस चरण का अंतिम भाग पहले की तुलना में अधिक लाभदायक होगा। शुरू में कुछ कष्ट हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगे, उतना अधिक फल प्राप्त करेंगे। आपका धन शुभ कार्यों में अधिक व्यय होगा। आप किसी धर्मस्थल की भी यात्रा कर सकते हैं। कोर्ट-कचहरी के कामों में सावधानी बरतें, अन्यथा आपकी मुसीबतें बढ़ सकती हैं।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि - धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

यह चरण कंटक शनि की तुलना में कम घातक होता है। इस दौरान आपके संचित धन में कमी आयेगी। आप धर्नाजन का हर संभव प्रयास करेंगे, लेकिन आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। इस स्थिति में आपकी बोल-चाल में कटुता आ सकती है, जिसकी वजह से और अधिक हानि होने की संभावना हो सकती है। इसलिए आपको अपनी वाणी में मधुरता रखनी चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की महादशा चल रही है तो अशुभ प्रभाव कम होंगे। इस चरण के दौरान यदि शनि के साथ मंगल भी है तो आपको अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि आपके साथ कोई वाहन दुर्घटना या अग्निकांड हो सकता है। अपने खान-पान पर भी ध्यान दें।

आप अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपका स्थानांतरण हो सकता है। स्थानांतरण रूकवाने की आपकी हर कोशिश बेकार जायेगी। यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं है, अतः बेकार के कार्यों में अपना समय न गँवायें और उचित समय का इंतजार करें। संतान पक्षको लेकर भी आप चिंतित हो सकते हैं। इस समय भाग्य आप पर मेहरबान नहीं है। आपके बने-बनाये काम भी खराब हो सकते हैं और चारों तरफ से आपको निराशा मिल सकती है। धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ जायेगा और आप धार्मिक कार्यों से दूर रहेगें। ऐसे समय में ही आप अपने लोगों को परख सकते हैं। आप ईश्वर पर विश्वास करें एवं आराधना करें। कुछ ही समय में आपका बुरा वक्त खत्म हो जायेगा और आप पहले से बेहतर महसूस करेंगे।

अपने कार्य के क्षेत्र में आपको हानि हो सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका विरोध करेंगे। आपके साथ कोई ऐसे व्यक्ति है, जिस पर आप विश्वास करते हैं, लेकिन वो आपको धोखा दे रहा है। जिसे आप अपना दोस्त मान रहे हैं, असल में वह आपका शत्रु है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपका पैसा कहीं रूक सकता है। कई जगहों से आपका सामान भी वापस आ सकता है।

लेकिन बाद का समय काफी अनुकूल है। इस चरण के अंत में आपको कुछ आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। कार्यस्थल पर भी सफलता प्राप्त होगी।

शनि साढ़ेसाती के दूसरे चक्र का विवरण

प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि - मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

साढ़ेसाती के पहले चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। आपके सभी कार्यों में अवरोध पैदा होंगे एवं विफलता प्राप्त होगी। आप मानसिक एवं शारीरिक रूप से अस्थिर रहेंगे। इस चरण के शुरुआत में ही आपको शारीरिक कष्ट शुरु हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो वरिष्ठ अधिकारी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपके खिलाफ कोई षडयंत्र रच सकते हैं, जिससे आपकी नौकरी भी जा सकती है या फिर आपका स्थानांतरण हो सकता है। आप कुछ भी ठीक से सोच पाने की स्थिति में नहीं होंगे और परेशानियों से तंग आकर आप कोई कुटिल रास्ता अपना सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं तो आपके कर्मचारी आपको धोखा देनेकी कोशिश कर सकते हैं। आप अपना व्यवसाय बंद करने की बात भी सोच सकते हैं। हो सकता है कि अपने व्यवसाय के सिलसिले में आपको विदेश यात्रा करनी पड़े, लेकिन वहाँ भी आपको हानि ही होगी। आपके व्यवसाय के दायरे के लोग आपका पैसा हजम करना चाह सकते हैं। आपका व्यापार आर्थिक संकट के दौर से गुजर सकता है। आप पर दोषारोपण हो सकता है।

आपका पारिवारिक जीवन शांतिमय नहीं हो सकता है। जीवनसाथी के साथ मतभेदों या मनमुटाव के कारण आप गलत रास्ते को अपना सकते हैं। धर्म के प्रति आपकी रूचि कम होती जायेगी और धार्मिक कार्य आपको ढकोसले लग सकते हैं। आप खुद से कोई महत्वपूर्ण फैसला लेने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं। किसी की मदद से यदि आप कोई फैसला लेते हैं, तो वो भी गलत साबित हो सकता है। लोग आपको अपमानित कर सकते हैं। आपको अपने मित्रों से भी धोखा मिल सकता है। आर्थिक संकट के समय आपकी मदद करने की जगह वे आपका पैसा भीहड़प सकते हैं। लोगों के बीच आप निंदा के पात्र बन सकते हैं। आपके पारिवारिक सदस्य भी आपको अपमानित कर सकते हैं। जीवनसाथी के साथ अक्सर कहा-सुनी हो सकती है। खत्म न होती परेशानियों एवं मानसिक तनाव के कारण आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं और दुर्बलता, दस्त, उन्माद, भय तथा अनिन्द्रा जैसी बीमारियों के शिकार हो सकते हैं।

आप अक्सर चिंतामग्न रह सकते हैं। निराशाओं से व्यथित होने के कारण आप कई व्यसन अपना सकते हैं। अपनीबुरी लतों की पूर्ति हेतु आप गलत रास्ते भी चुन सकते हैं। लेकिन, यदि शनि पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव है तो आप व्यसन तो नहीं करेंगे, परंतु व्यर्थ के खर्चों में अपना धन बर्बाद कर सकते हैं और अपने परिवार वालों की नजर में गिर सकते हैं। इस बीच आपके स्वभाव में काफी बदलाव होगा और आप कुटिल एवं कटुभाषी होने के साथ साथ अपने परिवार वालों पर भी शक कर सकते हैं। आप दया, प्रेम, ममता एवं अपनापन से दूर होते जायेंगे।

आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि किसी प्रकार की दुर्घटना होने की काफी संभावना है। आपके बड़े भाई एवं मामा को भी कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु ३४ से ३८ साल के बीच है तो आपको

अधिक कष्ट हो सकते हैं। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में शनि लगनेरा है या तीसरे या छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित है तो इतने अशुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। यदि किसी शुभ ग्रह की दशा भी चल रही है तो आप काफी उन्नतिकरेगें। आप बहुत कम समय में ही कल्पनातीत सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको निरंतर आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। समाज में लोग आपका सम्मान करेगें। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेगें, वो सफल होगा। धीरे-धीरे आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती जायेगी। आपके कुछ कार्य ऐसे संपन्न होंगे कि आपको पता भी नहीं चलेगा।

द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि -वृष

Start -28:05:2059

End -11:07:2061

Duration -2 y.1 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:02:2062

End -07:03:2062

Duration -0 y.0 m.22 d.

इस चरण के दौरान आपको शुभ फल अधिक प्राप्त होंगे। आपको अपने कार्यों में रुकावट आ सकती है, लेकिन अन्य अशुभ फलों में कमी आयेगी। इस दौरान आप पर काम का बोझ अधिक हो सकता है। लोग आपके माध्यम से अपना कार्य सिद्ध कर सकते हैं। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो लोग कल तक आपके साथ थे, वे अब कोई बहाना कर आपसे मुँह चुरा सकते हैं। सत्तापक्ष आपका विरोधी हो सकता है। आपके मान-सम्मान में भी कमी हो सकती है। हालाँकि, आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा, लेकिन आपके पराक्रम में काफी कमी आयेगी। अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिवार एवं जीवनसाथी को पर्याप्त समय देनेमें अक्षम हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको परिवार का विरोध सहना पड़ सकता है। मानसिक तनाव के कारण आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। आपको अपने दाम्पत्य जीवन पर अधिक ध्यान देना चाहिए और अपने परिवार को पर्याप्त समय देना चाहिए, जिससे किसी तरह की पारिवारिक समस्या का सामना न करना पड़े। आपके छोटे भाई-बहनों को भी कुछ अशुभ फल प्राप्त हो सकता है।

इस चरण में आपको अशुभ फल बहुत कम प्राप्त होंगे। जैसे ही शुभ फल मिलना शुरू होगा, आपकी उन्नति दिनदूनी - रात चौगुनी होती जायेगी। इस दौरान आप भूमि एवं भवन भी खरीद सकते हैं। काम के सिलसिले में आप लंबी यात्रायें भी कर सकते हैं। आप जो भी कार्य करेगें, उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। सत्तापक्ष से सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपके शत्रु आपसे समझौता करने का प्रयास करेगें। आपकी आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ हो जायेगी। इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु ३४ साल से ३८ साल के बीच है, तो आप काफी उन्नतिकरेगें। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। आप अपने मनचाहे स्थान पर अपना स्थानांतरण करवा सकते हैं। आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपकी काफी मदद करेगें।

आपको अपने खान-पान एवं स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए। आपका अधिकांश समय व्यवसाय या नौकरी के सिलसिले में यात्राओं में निकल सकता है। इस बीच आप तीर्थ स्थानों की भी यात्रा कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में या गोचर में मंगल अशुभ हो रहा है, तो वाहन चलाते समय आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि कोई दुर्घटना होने की संभावना हो सकती है। आपको उदर विकार, रक्त विकार या नेत्र विकार के

कारण भी कष्ट हो सकता है। आपको अतिविश्वास में कोई कार्य नहीं करना चाहिए, अन्यथा गंभीर परिणाम हो सकते हैं। आपके छोटे-भाई बहन भी आपकी मदद से काफी उन्नति कर सकते हैं। आपको धर्म पर विश्वास करना चाहिए एवं धर्म विरोधी कार्य नहीं करना चाहिए। आपको शराब एवं मांस से परहेज करना चाहिए एवं मजदूरवर्ग को बिना किसी बात का परेशान नहीं करना चाहिए।

तृतीय दैया (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -मिथुन

Start -11:07:2061

End -13:02:2062

Duration -0 y.7 m.4 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -07:03:2062

End -24:08:2063

Duration -1 y.5 m.18 d.

इस चरण की शुरुआत में आपकी जमा पूँजी कम हो सकती है। आपका धन कुछ ऐसे कार्यों में खर्च हो सकता है, जिसे आप करना न चाह रहे हों। धीरे-धीरे आप आर्थिक संकट में फँस सकते हैं एवं दुःखी रह सकते हैं। आपके हर सुख में कमी आ सकती है। यदि गोचर में मंगल या केतु अशुभ प्रभाव में हैं तो वाहन दुर्घटना भी हो सकती है।

इस चरण के मध्यकाल से कुछ पहले आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। आप सिर्फ आर्थिक संकट से मुक्त ही नहीं होंगे, बल्कि ऐसी स्थिति में रहेंगे कि दूसरों की मदद कर सकें। इस समय आपको हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपको समाज में सम्मान प्राप्त होगा। जो लोग कल तक आपका अपमान करते थे, वे भी मित्रता करना चाहेंगे।

आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए। आपको उपर से गिरने, शस्त्राघात, पानी या आग से खतरा हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपका स्थानांतरण हो सकता है। यदि आप खुद का कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको आर्थिक लाभ तो प्राप्त होगा, लेकिन आपके कर्मचारी आपको धोखा देने की कोशिश कर सकते हैं। आपके कर्मचारियों के कारण आपकी साख खराब हो सकती है। आपको सरकार या सरकारीसंस्थानों से लाभ एवं सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपके आर्थिक प्रयास सफल होंगे। इस चरण के दौरान आप भूमि, भवन या वाहन की खरीद-बिक्री कर सकते हैं।

आपके शत्रु परास्त होंगे, लेकिन उनके द्वारा रचे गये षडयंत्र से मानसिक तनाव हो सकता है। आप भौतिक सुख-सुविधा पर काफी खर्च कर सकते हैं और इसकी वजह से अपने जीवनसाथी से मतभेद भी हो सकते हैं। आपको अपने सामान्य बोल-चाल में मधुरता रखनी चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है। यदि रानि आपकी कुण्डली में कारक है या तीसरे या छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित है तो आपके लिए यह समय बहुत उत्तम रहेगा। आपको हर तरफ से सम्मान एवं आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। आप जिस कार्य में हाथ डालेंगे, वह सफल होगा।

इस चरण के अंत में आप कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं। इससे आपका सम्मान बढ़ेगा। आप विदेश यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में रानि पर शुक्र का प्रभाव है तो आप भोग-विलास में मग्न रह सकते हैं, इससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है और यदा-कदा आपको अपमानित भी होना पड़

सकता है। आप कई लाभकारी यात्रायें कर सकते हैं। व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। किसी पर अधिक विश्वास न करें, अन्यथा धोखा मिल सकता है। राजपक्ष से लाभ प्राप्त होगा। अवरोधों के बावजूद आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगे, उतना अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। थोड़े समय के लिए आर्थिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है, लेकिन आप तुरंत हाथ की स्थिति में आ जायेंगे। आपको लाभ अधिक एवं हानि कम होगी।

कंटक रानि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -सिंह

Start -13:10:2065

End -03:02:2066

Duration -0 y.3 m.21 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -03:07:2066

End -30:08:2068

Duration -2 y.1 m.28 d.

इस चरण के शुरुआत में आपको कुछ अशुभ फल प्राप्त होंगे, लेकिन रानि जैसे-जैसे आगे बढ़ता जायेगा, आपको शुभ फल प्राप्त होते जायेंगे। इस दौरान आपको अपने वाहन तथा भवन का विशेष ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा हानि हो सकती है। आपको अपने कार्य क्षेत्र में अचानक लाभ प्राप्त हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे खुश रहेंगे। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो आपका व्यवसाय काफी उत्तम स्थिति में होगा। उन्नति के नये मार्ग प्रशस्त होंगे। कल तक जो आपके साथ व्यापार करना नहीं चाहते थे, वे भी व्यापार करने को इच्छुक रहेंगे। लेकिन ऐसे लोगों से आपको सावधान रहना चाहिए, क्योंकि मौका मिलते ही वे आपको हानि पहुँचा सकते हैं।

इस चरण में आपके गुप्त शत्रु अधिक सक्रिय रहेंगे। वे आपको हानि पहुँचाने की हर संभव कोशिश करेंगे, लेकिन आप अपनी बुद्धिमत्ता से बचते रहेंगे। आपको अपनी शक्ति को नियंत्रित कर रखना चाहिए, अन्यथा आपके गुप्त शत्रु अपने मकसद में कामयाब हो सकते हैं। आपके शत्रु आपसे समझौते का प्रयास करेंगे और आपको खुद से अधिक शक्तिशाली बतायेंगे। परंतु, वास्तविकता में वे आपको हानि पहुँचाने की ताक में हैं। आप शक्तिशाली लोगों के संपर्क में आ सकते हैं। इस दौरान ग्रहों के कुप्रभाव के कारण आपकी माता को कष्ट हो सकता है, जिसकी वजह से आप अपने काम पर अधिक ध्यान नहीं दे पायेंगे और आपको हानि हो सकती है। आप अपना निवास परिवर्तन या नया निर्माण करना चाहते हैं तो उसे कुछ समय के लिए टाल दें एवं उचित समय का इंतजार करें।

इस चरण का अंतिम भाग पहले की तुलना में अधिक लाभदायक होगा। शुरु में कुछ कष्ट हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगे, उतना अधिक फल प्राप्त करेंगे। आपका धन शुभ कार्यों में अधिक व्यय होगा। आप किसी धर्मस्थल की भी यात्रा कर सकते हैं। कोर्ट-कचहरी के कामों में सावधानी बरतें, अन्यथा आपकी मुसीबतें बढ़ सकती हैं।

अष्टम रानि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि -धनु

Start -16:01:2076

End -11:07:2076

Duration -0 y.5 m.24 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -11:10:2076

End -15:01:2079

Duration -2 y.3 m.4 d.

यह चरण कंटक रानि की तुलना में कम घातक होता है। इस दौरान आपके संचित धन में कमी आयेगी। आप धर्नाजन का हर संभव प्रयास करेंगे, लेकिन आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। इस स्थिति में आपकी बोल-चाल में कटुता आ सकती है, जिसकी वजह से और अधिक हानि होने की संभावना हो सकती है। इसलिए आपको अपनी वाणी में मधुरता रखनी चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की महादशा चल रही है तो अशुभ प्रभाव कम होंगे। इस चरण के दौरान यदि रानि के साथ मंगल भी है तो आपको अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि आपके साथ कोई वाहन दुर्घटना या अग्निकांड हो सकता है। अपने खान-पान पर भी ध्यान दें।

आप अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपका स्थानांतरण हो सकता है। स्थानांतरण रूकवाने की आपकी हर कोशिश बेकार जायेगी। यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं है, अतः बेकार के कार्यों में अपना समय न गँवायें और उचित समय का इंतजार करें। संतान पक्षको लेकर भी आप चिंतित हो सकते हैं। इस समय भाग्य आप पर मेहरबान नहीं है। आपके बने-बनाये काम भी खराब हो सकते हैं और चारों तरफ से आपको निराशा मिल सकती है। धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ जायेगा और आप धार्मिक कार्यों से दूर रहेगें। ऐसे समय में ही आप अपने लोगों को परख सकते हैं। आप ईश्वर पर विश्वास करें एवं आराधना करें। कुछ ही समय में आपका बुरा वक्त खत्म हो जायेगा और आप पहले से बेहतर महसूस करेंगे।

अपने कार्य के क्षेत्र में आपको हानि हो सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका विरोध करेंगे। आपके साथ कोई ऐसे व्यक्ति है, जिस पर आप विश्वास करते हैं, लेकिन वो आपको धोखा दे रहा है। जिसे आप अपना दोस्त मान रहे हैं, असल में वह आपका शत्रु है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपका पैसा कहीं रूक सकता है। कई जगहों से आपका सामान भी वापस आ सकता है। लेकिन बाद का समय काफी अनुकूल है। इस चरण के अंत में आपको कुछ आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। कार्यस्थल पर भी सफलता प्राप्त होगी।

रानि साढ़ेसाती के तीसरे चक्र का विवरण

प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि -मेष

Start -21:05:2086

End -10:11:2086

Duration -0 y.5 m.21 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -08:02:2087

End -18:07:2088

Duration -1 y.5 m.8 d.

साढ़ेसाती के पहले चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। आपके सभी कार्यों में अवरोध पैदा होंगे एवं विफलता प्राप्त होगी। आप मानसिक एवं शारीरिक रूप से अस्थिर रहेंगे। इस चरण के शुरुआत में ही आपको शारीरिक कष्ट शुरु हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो वरिष्ठ अधिकारी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपके खिलाफ कोई षडयंत्र रच सकते हैं, जिससे आपकी नौकरी भी जा सकती है या फिर आपका स्थानांतरण हो सकता है। आप कुछ भी ठीक से सोच पाने की स्थिति में नहीं होंगे और परेशानियों से तंग आकर आप कोई कुटिल रास्ता अपना सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं तो आपके कर्मचारी आपको धोखा देनेकी कोशिश कर सकते हैं। आप अपना व्यवसाय बंद करने की बात भी सोच सकते हैं। हो सकता है कि अपने व्यवसाय के सिलसिले में आपको विदेश यात्रा करनी पड़े, लेकिन वहाँ भी आपको हानि ही होगी। आपके व्यवसाय के दायरे के लोग आपका पैसा हजम करना चाह सकते हैं। आपका व्यापार आर्थिक संकट के दौर से गुजर सकता है। आप पर दोषारोपण हो सकता है।

आपका पारिवारिक जीवन शांतिमय नहीं हो सकता है। जीवनसाथी के साथ मतभेदों या मनमुटाव के कारण आप गलत रास्ते को अपना सकते हैं। धर्म के प्रति आपकी रूचि कम होती जायेगी और धार्मिक कार्य आपको ढकोसले लग सकते हैं। आप खुद से कोई महत्वपूर्ण फैसला लेने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं। किसी की मदद से यदि आप कोई फैसला लेते हैं, तो वो भी गलत साबित हो सकता है। लोग आपको अपमानित कर सकते हैं। आपको अपने मित्रों से भी धोखा मिल सकता है। आर्थिक संकट के समय आपकी मदद करने की जगह वे आपका पैसा भी हड़प सकते हैं। लोगों के बीच आप निंदा के पात्र बन सकते हैं। आपके पारिवारिक सदस्य भी आपको अपमानित कर सकते हैं। जीवनसाथी के साथ अक्सर कहा-सुनी हो सकती है। खत्म न होती परेशानियों एवं मानसिक तनाव के कारण आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं और दुर्बलता, दस्त, उन्माद, भय तथा अनिद्रा जैसी बीमारियों के शिकार हो सकते हैं।

आप अक्सर चिंतामग्न रह सकते हैं। निराशाओं से व्यथित होने के कारण आप कई व्यसन अपना सकते हैं। अपनीबुरी लतों की पूर्ति हेतु आप गलत रास्ते भी चुन सकते हैं। लेकिन, यदि शनि पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव है तो आप व्यसन तो नहीं करेंगे, परंतु व्यर्थ के खर्चों में अपना धन बर्बाद कर सकते हैं और अपने परिवार वालों की नजर में गिर सकते हैं। इस बीच आपके स्वभाव में काफी बदलाव होगा और आप कुटिल एवं कटुभाषी होने के साथ साथ अपने परिवार वालों पर भी शक कर सकते हैं। आप दया, प्रेम, ममता एवं अपनापन से दूर होते जायेगे।

आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि किसी प्रकार की दुर्घटना होने की काफी संभावना है। आपके बड़े भाई एवं मामा को भी कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु ३४ से ३८ साल के बीच है तो आपको अधिक कष्ट हो सकते हैं। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में शनि लगनेश है या तीसरे या छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित है तो इतने अशुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। यदि किसी शुभ ग्रह की दशा भी चल रही है तो आप काफी उन्नतिकरेगे। आप बहुत कम समय में ही कल्पनातीत सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको निरंतर आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। समाज में लोग आपका सम्मान करेंगे। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे, वो सफल होगा। धीरे-धीरेआपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती जायेगी। आपके कुछ कार्य ऐसे संपन्न होंगे कि आपको पता भी नहीं चलेगा।

द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि -वृष

Start -18:07:2088

End -31:10:2088

Duration -0 y.3 m.13 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2089

End -19:09:2090

Duration -1 y.5 m.15 d.

इस चरण के दौरान आपको शुभ फल अधिक प्राप्त होंगे। आपको अपने कार्यों में रूकावट आ सकती है, लेकिन अन्य अशुभ फलों में कमी आयेगी। इस दौरान आप पर काम का बोझ अधिक हो सकता है। लोग आपके माध्यम से अपना कार्य सिद्ध कर सकते हैं। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो लोग कल तक आपके साथ थे, वे अब कोई बहाना कर आपसे मुँह चुरा सकते हैं। सत्तापक्ष आपका विरोधी हो सकता है। आपके मान-सम्मान में भी कमी हो सकती है। हालाँकि, आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा, लेकिन आपके पराक्रम में काफी कमी आयेगी। अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिवार एवं जीवनसाथी को पर्याप्त समय देनेमें अक्षम हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको परिवार का विरोध सहना पड़ सकता है। मानसिक तनाव के कारण आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। आपको अपने दाम्पत्य जीवन पर अधिक ध्यान देना चाहिए और अपने परिवार को पर्याप्त समय देना चाहिए, जिससे किसी तरह की पारिवारिक समस्या का सामना न करना पड़े। आपके छोटे भाई-बहनों को भी कुछ अशुभ फल प्राप्त हो सकता है।

इस चरण में आपको अशुभ फल बहुत कम प्राप्त होंगे। जैसे ही शुभ फल मिलना शुरू होगा, आपकी उन्नति दिनदूनी - रात चौगुनी होती जायेगी। इस दौरान आप भूमि एवं भवन भी खरीद सकते हैं। काम के सिलसिले में आप लंबी यात्रायें भी कर सकते हैं। आप जो भी कार्य करेंगे, उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। सत्तापक्ष से सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपके शत्रु आपसे समझौता करने का प्रयास करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ हो जायेगी। इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु ३४ साल से ३८ साल के बीच है, तो आप काफी उन्नतिकरेगें। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। आप अपने मनचाहे स्थान पर अपना स्थानांतरण करवा सकते हैं। आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपकी काफी मदद करेंगे।

आपको अपने खान-पान एवं स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए। आपका अधिकांश समय व्यवसाय या नौकरी के सिलसिले में यात्राओं में निकल सकता है। इस बीच आप तीर्थ स्थानों की भी यात्रा कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में या गोचर में मंगल अशुभ हो रहा है, तो वाहन चलाते समय आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि कोई दुर्घटना होने की संभावना हो सकती है। आपको उदर विकार, रक्त विकार या नेत्र विकार के कारण भी कष्ट हो सकता है। आपको अतिविश्वास में कोई कार्य नहीं करना चाहिए, अन्यथा गंभीर परिणाम हो सकते हैं। आपके छोटे-भाई बहन भी आपकी मदद से काफी उन्नति कर सकते हैं। आपको धर्म पर विश्वास करना चाहिए एवं धर्म विरोधी कार्य नहीं करना चाहिए। आपको शराब एवं मांस से परहेज करना चाहिए एवं मजदूरवर्ग को बिना किसी बात का परेशान नहीं करना चाहिए।

तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -मिथुन

Start -19:09:2090

End -25:10:2090

Duration -0 y.1 m.6 d.

रानि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी रानि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -21:05:2091

End -02:07:2093

Duration -2 y.1 m.11 d.

इस चरण की शुरुआत में आपकी जमा पूँजी कम हो सकती है। आपका धन कुछ ऐसे कार्यों में खर्च हो सकता है, जिसे आप करना न चाह रहे हों। धीरे-धीरे आप आर्थिक संकट में फँस सकते हैं एवं दुःखी रह सकते हैं। आपके हर सुख में कमी आ सकती है। यदि गोचर में मंगल या केतु अशुभ प्रभाव में हैं तो वाहन दुर्घटना भी हो सकती है।

इस चरण के मध्यकाल से कुछ पहले आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। आप सिर्फ आर्थिक संकट से मुक्त ही नहीं होंगे, बल्कि ऐसी स्थिति में रहेंगे कि दूसरों की मदद कर सकें। इस समय आपको हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपको समाज में सम्मान प्राप्त होगा। जो लोग कल तक आपका अपमान करते थे, वे भी मित्रता करना चाहेंगे।

आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए। आपको उपर से गिरने, शस्त्राघात, पानी या आग से खतरा हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपका स्थानांतरण हो सकता है। यदि आप खुद का कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको आर्थिक लाभ तो प्राप्त होगा, लेकिन आपके कर्मचारी आपको धोखा देने की कोशिश कर सकते हैं। आपके कर्मचारियों के कारण आपकी साख खराब हो सकती है। आपको सरकार या सरकारी संस्थानों से लाभ एवं सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपके आर्थिक प्रयास सफल होंगे। इस चरण के दौरान आप भूमि, भवन या वाहन की खरीद-बिक्री कर सकते हैं।

आपके शत्रु परास्त होंगे, लेकिन उनके द्वारा रचे गये षडयंत्र से मानसिक तनाव हो सकता है। आप भौतिक सुख-सुविधा पर काफी खर्च कर सकते हैं और इसकी वजह से अपने जीवनसाथी से मतभेद भी हो सकते हैं। आपको अपने सामान्य बोल-चाल में मधुरता रखनी चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है। यदि रानि आपकी कुण्डली में कारक है या तीसरे या छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित है तो आपके लिए यह समय बहुत उत्तम रहेगा। आपको हर तरफ से सम्मान एवं आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। आप जिस कार्य में हाथ डालेंगे, वह सफल होगा।

इस चरण के अंत में आप कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं। इससे आपका सम्मान बढ़ेगा। आप विदेश यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में रानि पर शुक्र का प्रभाव है तो आप भोग-विलास में मग्न रह सकते हैं, इससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है और यदा-कदा आपको अपमानित भी होना पड़ सकता है। आप कई लाभकारी यात्रायें कर सकते हैं। व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। किसी पर अधिक विश्वास न करें, अन्यथा धोखा मिल सकता है। राजपक्ष से लाभ प्राप्त होगा। अवरोधों के बावजूद आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगे, उतना अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। थोड़े समय के लिए आर्थिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है, लेकिन आप तुरंत हाथ की स्थिति में आ जायेंगे। आपको लाभ अधिक एवं हानि कम होगी।

कंटक रानि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर रानि -सिंह

Start -18:08:2095

End -11:10:2097

Duration -2 y.1 m.23 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -02:05:2098

End -20:06:2098

Duration -0 y.1 m.18 d.

इस चरण के शुरुआत में आपको कुछ अशुभ फल प्राप्त होंगे, लेकिन शनि जैसे-जैसे आगे बढ़ता जायेगा, आपको शुभ फल प्राप्त होते जायेंगे। इस दौरान आपको अपने वाहन तथा भवन का विशेष ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा हानि हो सकती है। आपको अपने कार्य क्षेत्र में अचानक लाभ प्राप्त हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे खुश रहेंगे। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो आपका व्यवसाय काफी उत्तम स्थिति में होगा। उन्नति के नये मार्ग प्रशस्त होंगे। कल तक जो आपके साथ व्यापार करना नहीं चाहते थे, वे भी व्यापार करने को इच्छुक रहेंगे। लेकिन ऐसे लोगों से आपको सावधान रहना चाहिए, क्योंकि मौका मिलते ही वे आपको हानि पहुँचा सकते हैं।

इस चरण में आपके गुप्त शत्रु अधिक सक्रिय रहेंगे। वे आपको हानि पहुँचाने की हर संभव कोशिश करेंगे, लेकिन आप अपनी बुद्धिमत्ता से बचते रहेंगे। आपको अपनी शक्ति को नियंत्रित कर रखना चाहिए, अन्यथा आपके गुप्त शत्रु अपने मकसद में कामयाब हो सकते हैं। आपके शत्रु आपसे समझौते का प्रयास करेंगे और आपको खुद से अधिक शक्तिशाली बतायेंगे। परंतु, वास्तविकता में वे आपको हानि पहुँचाने की ताक में हैं। आप शक्तिशाली लोगों के संपर्क में आ सकते हैं। इस दौरान ग्रहों के कुप्रभाव के कारण आपकी माता को कष्ट हो सकता है, जिसकी वजह से आप अपने काम पर अधिक ध्यान नहीं दे पायेंगे और आपको हानि हो सकती है। आप अपना निवास परिवर्तन या नया निर्माण करना चाहते हैं तो उसे कुछ समय के लिए टाल दें एवं उचित समय का इंतजार करें।

इस चरण का अंतिम भाग पहले की तुलना में अधिक लाभदायक होगा। शुरु में कुछ कष्ट हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगे, उतना अधिक फल प्राप्त करेंगे। आपका धन शुभ कार्यों में अधिक व्यय होगा। आप किसी धर्मस्थल की भी यात्रा कर सकते हैं। कोर्ट-कचहरी के कामों में सावधानी बरतें, अन्यथा आपकी मुसीबतें बढ़ सकती हैं।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि - धनु

Start -29:11:2105

End -25:02:2108

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -29:07:2108

End -23:11:2108

Duration -0 y.3 m.25 d.

यह चरण कंटक शनि की तुलना में कम घातक होता है। इस दौरान आपके संचित धन में कमी आयेगी। आप धर्नाजन का हर संभव प्रयास करेंगे, लेकिन आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। इस स्थिति में आपकी बोल-चाल में कटुता आ सकती है, जिसकी वजह से और अधिक हानि होने की संभावना हो सकती है। इसलिए आपको अपनी वाणी में मधुरता रखनी चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की महादशा चल रही है

तो अशुभ प्रभाव कम होंगे। इस चरण के दौरान यदि शनि के साथ मंगल भी है तो आपको अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि आपके साथ कोई वाहन दुर्घटना या अग्निकांड हो सकता है। अपने खान-पान पर भी ध्यान दें।

आप अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपका स्थानांतरण हो सकता है। स्थानांतरण रूकवाने की आपकी हर कोशिश बेकार जायेगी। यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं है, अतः बेकार के कार्यों में अपना समय न गँवायें और उचित समय का इंतजार करें। संतान पक्षको लेकर भी आप चिंतित हो सकते हैं। इस समय भाग्य आप पर मेहरबान नहीं है। आपके बने-बनाये काम भी खराब हो सकते हैं और चारो तरफ से आपको निराशा मिल सकती है। धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ जायेगा और आप धार्मिक कार्यों से दूर रहेगें। ऐसे समय में ही आप अपने लोगों को परख सकते हैं। आप ईश्वर पर विश्वास करें एवं आराधना करें। कुछ ही समय में आपका बुरा वक्त खत्म हो जायेगा और आप पहले से बेहतर महसूस करेगें।

अपने कार्य के क्षेत्र में आपको हानि हो सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका विरोध करेगें। आपके साथ कोई ऐसे व्यक्ति है, जिस पर आप विश्वास करते हैं, लेकिन वो आपको धोखा दे रहा है। जिसे आप अपना दोस्त मान रहे हैं, असल में वह आपका शत्रु है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपका पैसा कहीं रूक सकता है। कई जगहों से आपका सामान भी वापस आ सकता है। लेकिन बाद का समय काफी अनुकूल है। इस चरण के अंत में आपको कुछ आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। कार्यस्थल पर भी सफलता प्राप्त होगी।

शनि की साढ़े साती एवं ढैया के उपाय

शनि की साढ़े साती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें-

मंत्र-

१) महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज १० माला, १२५ दिन) करें -

ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

२) शनि के निम्नदत्त मंत्र का २१ दिन में २३ हजार जाप करें -

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शं शनैश्चराय नमः॥

३) पौराणिक शनि मंत्र -

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि

शनैश्चरम् ॥

स्तोत्र-

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 99 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें ।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।

सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥

तानि शनि-नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ ।

शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति ॥

साढेसाती पीडानाशक स्तोत्र - पिप्पलाद के अनुसार -

नमस्ते कोणसंस्थय पिङ्गलाय नमोस्तुते ।

नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते ॥

नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च ।

नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ॥

नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते ।

प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥

रत्न-

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बना कर मध्यमा उँगली में धारण करना चाहिए ।

व्रत-

शनिवार का व्रत रखना चाहिए एवं शनिदेव की पूजा करनी चाहिए । शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है । व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें तथा सायंकाल हनुमान जी या भैरव जी का दर्शन करना चाहिए । रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं ।

औषधि-

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, साँफ, और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए ।

दान-

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए ।

वृष राशि वालों के लिए शनि की साढ़े साती एवं ढैया के सामान्य उपाय

- १) प्रातः उठते ही शनिदेव के दस नामों का उक्कारण करें।
- २) मांस-मदिरा से दूर रहें।
- ३) वर्ष में दो बार पीपल की जड़ में सूखे खोपरे में बूरा एवं पंचमेवा भर कर दबायें।
- ४) पहले चरण में हनुमान उपासना के साथ शनि चालीसा का पाठ करें। पीपल के नीचे हनुमान चालीसा का पाठ अवश्य करें।
- ५) शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष में मीठा जल (जल, दूध, शक्कर, राहद, गुड़ एवं गंगाजल) अर्पितकरें तथा आटे के दीपक में सरसों का तेल, ११ काली उड़द के दाने एवं घर की कोई कील रखकर अर्पित करें। बायें हाथ से पीपल की जड़ को पाँच बार स्पर्श करें।
- ६) छाया दान करें तथा काले घोड़े की नाल का छल्ला धारण करें।
- ७) रात्रि में सोते समय सूरमा अवश्य लगायें तथा भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग करें।
- ८) लक्ष्मी उपासना में श्रीसूक्त का पाठ करें।
- ९) इत्र का प्रयोग करें एवं साफ कपड़े पहनें।
- १०) यदि कुण्डली में शनि अशुभ भाव में है तो नीलम के साथ हीरा या इसका उपरत्न पहनें। कोई भी रत्न आचार्य की सलाह से ही लें।
- ११) पुरुष जातक अपनी स्त्री का अपमान न करें।

शनि की साढ़े साती एवं ढैया के विशेष उपाय

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है तो भैरोजी एवं शनिदेव की पूजा-अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभप्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़े साती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहे हैं तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- १) शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।
- २) शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक-बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।
- ३) काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

- ४) यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है तो जमीन में सुरमा गाड़ें। वृक्ष की जड़ के साथ साथ सुरमा दूध में उबालें और फिर उसका नियमित तिलक करें।
- ५) शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठ जल अर्पित करें।
- ६) मद्यपान न करें।
- ७) शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।
- ८) भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।
- ९) शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।
- १०) शनिवार को आप एक ही माप की आठ बोतलें लें और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक क्रील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने ऊपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।
- ११) नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके १०८ नामों का उच्चारण करें।
- १२) प्रातः उठते ही बासे मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वादशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।
- १३) प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बन्दरों को चने खिलायें।
- १४) शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो काले चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में ८०० ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहाँ मछलियाँ हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरु में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।
- १५) अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुलु की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरु करें।
- १६) प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में ८०० ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी क्रीलें तथा एक-एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से १० छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में ही कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठ कर हनुमान चालीसा का पाठ करें और सात बार परिक्रमा दें। तत्पश्चात् पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।
- १७) आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।
- १८) पहले शनिवार को अपने से १६ गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।
- १९) शनिवार को घर के पूजास्थल में बैठ कर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियाँ बनाकर उन्हें एक साथ जलायें ताकि जलने पर एक ही लौ दे।

दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला तथा एक कील डालें। काले हकीक की माला से काई भी शनिमंत्र का 99 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

२०) प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियाँ अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़ कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

२१) रामी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरंत लाभ होगा।

२२) किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री ८०० ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोटल में ८०० ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

२३) मांस-मदिरा से दूर रहें।

२४) किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात न करें।

२५) घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चांदी का पत्तर दबायें।

२६) काले वस्त्र धारण करें।

२७) घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें तांबे के सिक्के डालकर रखें।

२८) शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी न लें।

२९) काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

३०) शनिवार को काले घोड़े की पूँछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर ४३ दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

३१) शुक्रवार को ८०० ग्राम काले तिल पानी में भिगो दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

३२) साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति न बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

३३) रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु न दें।

३४) नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

३५) शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

३६) किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमे दबायें।

३७) शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

३८) प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

३९) अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुक्वायें।

४०) अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

लाल किताब से गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगौ शशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत्।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(आमतौर पर यह माना जाता है कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिकसंकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिंतित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय - साढ़े-सात साल - ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, ऊँचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी की प्राप्ति आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढ़ेसाती के पहले चक्र का विवरण

प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर शनि -मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

पहले ढैय्या के दौरान आपको अपने करीबारी साझेदार से सावधान रहना चाहिए, आपको धोखा मिल सकता है। व्यापार में हानि हो सकती है। आप किसी मुकदमे में फँस सकते हैं। आप किसी लंबी बीमारी से भी ग्रसित हो सकते हैं। आपको कुछ जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है।

उपाय -

1. दूध एवं जल शिवलिंग पर चढ़ायें।
2. बजरंग बाण का पाठ करें।
3. दो सूखे नारियल एवं बारह बादाम शनिवार को नदी में प्रवाहित करें।

द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर शनि -वृष

Start -08:08:2029

End -05:10:2029

Duration -0 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -17:04:2030

End -31:05:2032

Duration -2 y.1 m.14 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आप कई धार्मिक यात्रायें कर सकते हैं। किसी दुर्घटना की वजह से आपको चोट भी ला सकती है। आँखों से संबंधित कोई विकार हो सकता है। पराई स्त्रियों से दूर रहें, आपको आर्थिक हानि हो सकती है। इस ढैय्या के दौरान आपकी आय कम एवं खर्च अधिक हो सकते हैं।

उपाय -

१. शनि स्तोत्र का पाठ करें।
२. काले घोड़े या नाव की कील का छल्ला पहनें।
३. मिट्टी का बंदर दक्षिण दिशा में रखें।

तृतीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -मिथुन

Start -31:05:2032

End -13:07:2034

Duration -2 y.1 m.12 d.

तीसरे ढैय्या के दौरान अपने जीवनसाथी से सुख की कम प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को काफ़ी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। जायदाद के लिए परिवार में कलह हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी पदावनति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

उपाय -

१. रोज सुन्दरकांड का पाठ करें।
२. काले घोड़े या नाव की कील का छल्ला शनिवार को मध्यमा अंगुली में पहनें।
३. शनिवार की अमावस्या को किसी साधु को ऊनी कंबल दान करें।

कंटक राशि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -सिंह

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

यदि कंटक राशि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय -

१. सोमवार को कुंए में दूध

डालें।

2. काले घोड़े की नाल का छल्ला मध्यमा अंगुली में धारण करें।
3. पराई स्त्री से दूर रहें।
4. काला उड़द एवं बादाम नदी में प्रवाहित करें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि - धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय -

1. शनि स्तोत्र का जप करें।
2. मांस-मदिरा का सेवन न करें।
3. चौकी पर बैठकर स्नान करें।
4. लगातार आठ दिनों तक आठ सौ ग्राम या आठ बादाम किसी मंदिर में चढ़ायें।

शनि साढ़ेसाती के दूसरे चक्र का विवरण

प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि - मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

पहले ढैय्या के दौरान आपको अपने करीबारी साझेदार से सावधान रहना चाहिए, आपको धोखा मिल सकता है। व्यापार में हानि हो सकती है। आप किसी मुकदमे में फँस सकते हैं। आप किसी लंबी बीमारी से भी ग्रसित हो सकते हैं। आपको कुछ जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है।

उपाय -

1. दूध एवं जल शिवलिंग पर चढ़ायें।
2. बजरंग बाण का पाठ करें।
3. दो सूखे नारियल एवं बारह बादाम शनिवार को नदी में प्रवाहित करें।

द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि - वृष

Start -28:05:2059

End -11:07:2061

Duration -2 y.1 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:02:2062

End -07:03:2062

Duration -0 y.0 m.22 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आप कई धार्मिक यात्रायें कर सकते हैं। किसी दुर्घटना की वजह से आपको चोट भी लग सकती है। आँखों से संबंधित कोई विकार हो सकता है। पराई स्त्रियों से दूर रहें, आपको आर्थिक हानि हो सकती है। इस ढैय्या के दौरान आपकी आय कम एवं खर्च अधिक हो सकते हैं।

उपाय -

१. शनि स्तोत्र का पाठ करें।
२. काले घोड़े या नाव की कील का छल्ला पहनें।
३. मिट्टी का बंदर दक्षिण दिशा में रखें।

तृतीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -मिथुन

Start -11:07:2061

End -13:02:2062

Duration -0 y.7 m.4 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -07:03:2062

End -24:08:2063

Duration -1 y.5 m.18 d.

तीसरे ढैय्या के दौरान अपने जीवनसाथी से सुख की कम प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। जायदाद के लिए परिवार में कलह हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी पदावनति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

उपाय -

१. रोज सुन्दरकांड का पाठ करें।
२. काले घोड़े या नाव की कील का छल्ला शनिवार को मध्यमा अंगुली में पहनें।
३. शनिवार की अमावस्या को किसी साधु को उनी कंबल दान करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -सिंह

Start -13:10:2065

End -03:02:2066

Duration -0 y.3 m.21 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -03:07:2066

End -30:08:2068

Duration -2 y.1 m.28 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय -

1. सोमवार को कुंए में दूध डालें।
2. काले घोड़े की नाल का छल्ला मध्यमा अंगुली में धारण करें।
3. पराई स्त्री से दूर रहें।
4. काला उड़द एवं बादाम नदी में प्रवाहित करें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि -धनु

Start -16:01:2076

End -11:07:2076

Duration -0 y.5 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -11:10:2076

End -15:01:2079

Duration -2 y.3 m.4 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय -

1. शनि स्तोत्र का जप करें।
2. मांस-मदिरा का सेवन न करें।
3. चौकी पर बैठकर स्नान करें।
4. लगातार आठ दिनों तक आठ सौ ग्राम या आठ बादाम किसी मंदिर में चढ़ायें।

शनि साढ़ेसाती के तीसरे चक्र का विवरण

प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि -मेष

Start -21:05:2086

End -10:11:2086

Duration -0 y.5 m.21 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -08:02:2087

End -18:07:2088

Duration -1 y.5 m.8 d.

पहले ढैय्या के दौरान आपको अपने कारोबारी साझेदार से सावधान रहना चाहिए, आपको धोखा मिल सकता है।

व्यापार में हानि हो सकती है। आप किसी मुकदमें में फँस सकते हैं। आप किसी लंबी बीमारी से भी ग्रसित हो सकते हैं। आपको कुछ जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है।

उपाय -

1. दूध एवं जल शिवलिंग पर चढ़ायें।
2. बजरंग बाण का पाठ करें।
3. दो सूखे नारियल एवं बारह बादाम शनिवार को नदी में प्रवाहित करें।

द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि -वृष

Start -18:07:2088

End -31:10:2088

Duration -0 y.3 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2089

End -19:09:2090

Duration -1 y.5 m.15 d.

दूसरे ढैया के दौरान आप कई धार्मिक यात्रायें कर सकते हैं। किसी दुर्घटना की वजह से आपको चोट भी लग सकती है। आँखों से संबंधित कोई विकार हो सकता है। पराई स्त्रियों से दूर रहें, आपको आर्थिक हानि हो सकती है। इस ढैया के दौरान आपकी आय कम एवं खर्च अधिक हो सकते हैं।

उपाय -

1. शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2. काले घोड़े या नाव की कील का छल्ला पहनें।
3. मिट्टी का बंदर दक्षिण दिशा में रखें।

तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -मिथुन

Start -19:09:2090

End -25:10:2090

Duration -0 y.1 m.6 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -21:05:2091

End -02:07:2093

Duration -2 y.1 m.11 d.

तीसरे ढैया के दौरान अपने जीवनसाथी से सुख की कम प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को काफ़ी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। जायदाद के लिए परिवार में कलह हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी पदावनति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

उपाय -

1. रोज सुन्दरकांड का पाठ करें।
2. काले घोड़े या नाव की कील का छल्ला शनिवार को मध्यमा अंगुली में पहनें।
3. शनिवार की अमावस्या को किसी साधु को ऊनी कंबल दान करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -सिंह

Start -18:08:2095

End -11:10:2097

Duration -2 y.1 m.23 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -02:05:2098

End -20:06:2098

Duration -0 y.1 m.18 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय -

1. सोमवार को कुंए में दूध डालें।
2. काले घोड़े की नाल का छल्ला मध्यमा अंगुली में धारण करें।
3. पराई स्त्री से दूर रहें।
4. काला उड़द एवं बादाम नदी में प्रवाहित करें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि -धनु

Start -29:11:2105

End -25:02:2108

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -29:07:2108

End -23:11:2108

Duration -0 y.3 m.25 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय -

1. शनि स्तोत्र का जप करें।
2. मांस-मदिरा का सेवन न करें।
3. चौकी पर बैठकर स्नान करें।
4. लगातार आठ दिनों तक आठ सौ ग्राम या आठ बादाम किसी मंदिर में चढ़ायें।

विमशोत्तरी दशा से भविष्यफल और उपाय

चन्द्र दशा (17:12:2021 से 09:06:2029)

राहु अर्न्तदशा (17:12:2021 से 09:05:2022)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. रुद्रजाप करें।
2. दुर्गापाठ करें।

गुरु अर्न्तदशा (09:05:2022 से 08:09:2023)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. शिव सहस्रनाम का जप एवं सोना दान करें।
2. शिव के साथ-साथ विष्णु की पूजा करें।

शनि अर्न्तदशा (08:09:2023 से 09:04:2025)

आपकी कुण्डली में शनि लग्न या चंद्रमा से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक या मानसिक कष्ट, शत्रुओं से हानि या रास्त्रों से हानि हो सकती है।

उपाय—

1. मृत्युंजय जाप करें।
2. काली गाय या भैंस दान करें।
3. रुद्रावतार हनुमान एवं महाकाली की पूजा करें।

बुध अर्न्तदशा (09:04:2025 से 08:09:2026)

आपकी कुण्डली में बुध लग्न या चंद्रमा से छठे, आठवें या बारहवें भाव स्थित है।

आपकी कुण्डली में बुध नीच राशि में या अस्त या पाप ग्रहों के साथ स्थित है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान आप रोगग्रस्त हो सकते हैं। खेती, नौकरी, व्यवसाय आदि में हानि हो सकती है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है।

उपाय—

1. विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
2. रोज ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 90८ बार जप करें।
3. आपका लग्न मिथुन, कन्या, वृष या सिंह है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (08:09:2026 से 09:04:2027)

आपकी कुण्डली में केतु लग्न या चंद्रमा से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपके शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं। स्वजनों से कलह होने की भी संभावना है।

उपाय—

1. महामृत्युंजय जाप करें।
2. शिव, गणेश, काली या दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (09:04:2027 से 08:12:2028)

आपकी कुण्डली में शुक्र नीच राशि में स्थित है या अस्त है या पाप ग्रह के साथ स्थित है या पाप ग्रह से दृष्ट है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान आपको जमीन, संतान, मित्र, वाहन एवं जीवनसाथी से संबंधित सुख में कमी हो सकती है या इनसे संबंधित अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। वरिष्ठ अधिकारी आपका विरोध कर सकते हैं। किसी दूरस्थ स्थान पर निवास की भी कुछ संभावना है।

उपाय—

1. रोज ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।
2. शिव की पूजा करें।
3. गाय एवं चोदी दान करें।
4. शिव-पार्वती या शिव-दुर्गा की पूजा करें।

सूर्य अन्तर्दशा (08:12:2028 से 09:06:2029)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. शिव की पूजा करें तथा शिवमंत्र का जाप करें।

मंगल दशा (09:06:2029 से 08:06:2036)

मंगल अन्तर्दशा (09:06:2029 से 05:11:2029)

आपकी कुण्डली में मंगल पापी ग्रहों के साथ स्थित है या दृष्ट है।

मंगल की महादशा या अंतर्दशा के दौरान आपको अचानक धन हानि हो सकती है। शारीरिक कष्ट आपको परेशान कर सकते हैं। किसी प्रकार की दुर्घटना या मृत्युतुल्य कष्ट की संभावना है।

उपाय—

1. तांबे का कड़ा पहनें।
2. तांबे का कमल दान करें।
3. मंगलवार का व्रत करें।

राहु अन्तर्दशा (05:11:2029 से 23:11:2030)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा

के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. मृत्युंजय जाप करें।
2. नागपूजा करें।
3. ब्राह्मणों को भोजन कराएँ।
4. शिव एवं दुर्गा की पूजा करें।

गुरु अन्तर्दशा (23:11:2030 से 30:10:2031)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. शिवसहस्रनाम का जाप करें।
2. शिव एवं विष्णु की आराधना करें।

शनि अन्तर्दशा (30:10:2031 से 08:12:2032)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. मृत्युंजय जाप करें एवं रुद्र-शिव की पूजा करें।
2. रुद्रावतार हनुमान की पूजा करें।

बुध अन्तर्दशा (08:12:2032 से 05:12:2033)

आपकी कुण्डली में बुध नीच राशि में स्थित है या अस्त है।

आपकी कुण्डली में बुध लगन या मंगल से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान आप हृदय रोग या उदर रोग या छाती के रोग से ग्रसित हो सकते हैं। अपने भाई-बंधु से वियोग हो सकता है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है। धन एवं पशुओं की हानि हो सकती है।

उपाय-

1. विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
2. घोड़ा दान करें।
3. आपका लगन वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (05:12:2033 से 03:05:2034)

आपकी कुण्डली में केतु लगन से आठवें या बारहवें भाव में स्थित

है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आप रोग एवं शारीरिक कष्ट से परेशान हो सकते हैं। पारिवारिक कलह हो सकता है एवं आपको किसी प्रकार के अस्त्र से खतरा हो सकता है।

उपाय—

१. गणेश एवं दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (03:05:2034 से 03:07:2035)

आपकी कुण्डली में शुक्र पापी ग्रहों के साथ स्थित है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट एवं धन हानि हो सकती है। आपको चोर-डाकू आदि से खतरा हो सकता है। पारिवारिक कलह एवं वैवाहिक जीवन में तनाव आपको परेशान कर सकते हैं। पशु, वाहन एवं संपत्ति की हानि हो सकती है।

उपाय—

१. गाय या भैंस दान करें।

२. दुर्गा एवं शिव की आराधना करें।

३. आपका लग्न वृष, तुला, मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ है। आप हीरा या सफेद मूंगा या सफेद पुखराज धारण कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (03:07:2035 से 08:11:2035)

आपकी कुण्डली में सूर्य मंगल से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

सूर्य की अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट एवं काम में हानि हो सकती है। आप मस्तिष्क रोग या अतिसार से भी ग्रसित हो सकते हैं।

उपाय—

१. सूर्य की आराधना करें।

२. गायत्री मंत्र का जाप करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (08:11:2035 से 08:06:2036)

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न या मंगल से छूटे या आठवें भाव में पापी ग्रहों के साथ स्थित है या दृष्ट है।

चंद्रमा की अंतर्दशा के दौरान आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है। भूमि, पशु, धन-संपत्ति की हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे या सातवें भाव का स्वामी है। आपको शारीरिक एवं मानसिक कष्ट या मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

उपाय—

१. दुर्गा एवं लक्ष्मी का जप एवं पूजा करें।

२. गाय या भैंस दान करें।

राहु दशा (08:06:2036 से 09:06:2054)

राहु अन्तर्दशा (08:06:2036 से 19:02:2039)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. सप्त धान्य (उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
2. स्वर्ण पात्र या सोने का साँप दान करें।
3. राहु के बीज मंत्र का जप करें।

गुरु अन्तर्दशा (19:02:2039 से 15:07:2041)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. शिव के स्वर्ण प्रतिमा की पूजा करें।
2. विष्णु की पूजा करें।

शनि अन्तर्दशा (15:07:2041 से 21:05:2044)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. काली गाय या भैंस दान करें।
2. महाकाली एवं कालभैरव की आराधना करें।
3. काले शिवलिंग एवं विष्णु की काली प्रतिमा की पूजा करें।
4. शनिवार को हनुमान की पूजा करें एवं प्रतिमा पर तेल तथा सिंदूर अर्पित करें।

बुध अन्तर्दशा (21:05:2044 से 08:12:2046)

आपकी कुण्डली में बुध लगन या राहु से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आप झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपको धन हानि एवं सुख में कमी हो सकती है। अंतर्दशा के दौरान आपमें नास्तिक प्रवृत्ति आ सकती है। आपका विवेक सही दिशा में काम नहीं कर सकता है। चोर एवं साँप से खतरा हो सकता है। कलह के कारण मन दुःखी रह सकता है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है।

उपाय-

1. विष्णु सहस्रनाम का जप करें।
2. दुर्गा की पूजा करें।
3. आपका लगन वृष, मिथुन, कन्या, सिंह या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (08:12:2046 से 26:12:2047)

आपकी कुण्डली में केतु लग्न से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आप शारीरिक एवं मानसिक कष्ट से परेशान हो सकते हैं। आप रोगग्रस्त हो सकते हैं चोर, साँप, विष आदि से खतरा हो सकता है।

उपाय—

१. गणेश एवं काली या गणेश एवं चामुंडा दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (26:12:2047 से 26:12:2050)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

१. दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा करें।

२. शिव की पूजा करें।

सूर्य अन्तर्दशा (26:12:2050 से 20:11:2051)

आपकी कुण्डली में सूर्य राहु से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

सूर्य की अंतर्दशा के दौरान आप प्रायः ज्वर से पीड़ित रह सकते हैं। पारिवारिक कलह से मन परेशान रह सकता है चोर एवं आग से खतरा हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

उपाय—

१. सूर्य की आराधना करें।

२. शिव की पूजा करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (20:11:2051 से 21:05:2053)

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न या राहु से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में पापी ग्रहों के साथ स्थित है।

चंद्रमा की अंतर्दशा के दौरान आपको आपराधिक क्रिम के लोगों तथा जानवरों से खतरा हो सकता है। आप उदर रोग से ग्रसित हो सकते हैं एवं पानी से खतरा हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे या सातवें भाव का स्वामी है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

उपाय—

१. सफेद गाय या भैंस दान करें।

२. शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।

मंगल अन्तर्दशा (21:05:2053 से 09:06:2054)

आपकी कुण्डली में मंगल राहु से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में पापी ग्रहों के साथ स्थित है या वक्री एवं अस्त है।

मंगल की अंतर्दशा में आपके अपने लोग आपका विरोध कर सकते हैं। इस दौरान चोर-डाकू एवं शत्रुओं से

आपको खतरा हो सकता है। दुर्घटना होने की भी कुछ संभावना है। आपका स्थान परिवर्तन एवं पदानवति हो सकती है। शारीरिक कष्ट से परेशान हो सकते हैं एवं धन हानि की भी संभावना है। अंतर्दशा की शुरुआत में अशुभ फल एवं बाद में शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय-

1. बैल एवं गाय दान करें।
2. दुर्गा, हनुमान एवं नरसिंह विष्णु की आराधना करें।

गुरु दशा (09:06:2054 से 09:06:2070)

गुरु अर्न्तदशा (09:06:2054 से 27:07:2056)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. बृहस्पति के बीज मंत्र का जप करें।
2. सोना या पुखराज का दान करें।
3. बृहस्पतिवार बृहस्पति के नक्षत्र में सोने की अंगुठी में पुखराज धारण करें।

शनि अर्न्तदशा (27:07:2056 से 07:02:2059)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. काली गाय या भैंस दान करें।
2. विष्णु सहस्रनाम का जाप करें।
3. हनुमान की पूजा करें।

बुध अर्न्तदशा (07:02:2059 से 15:05:2061)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. विष्णु सहस्रनाम का जप करें।
2. आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (15:05:2061 से 21:04:2062)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. महामृत्युंजय जप

करें।

२. गणेश, शिव एवं दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (21:04:2062 से 20:12:2064)

आपकी कुण्डली में शुक्र लग्न या बृहस्पति से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान आपके परिवार में कलह हो सकता है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को भी कष्ट हो सकता है।

उपाय—

१. गाय या भैंस दान करें।

२. शिव की आराधना करें।

३. स्फटिक की माला पर रोज ओम् नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

सूर्य अन्तर्दशा (20:12:2064 से 08:10:2065)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

१. आदित्य स्तोत्र का पाठ करें।

२. सूर्य एवं शिव की आराधना करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (08:10:2065 से 07:02:2067)

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे, छठे या सातवें भाव का स्वामी है। आप शारीरिक एवं मानसिक कष्ट के साथ-साथ किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

उपाय—

१. दुर्गा सप्तशती पाठ करें।

२. शिव की आराधना करें।

मंगल अन्तर्दशा (07:02:2067 से 14:01:2068)

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न या बृहस्पति से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

मंगल की अंतर्दशा के दौरान आपको धन एवं घर की हानि हो सकती है। आप आँखों से संबंधित किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं। समय के साथ-साथ कष्टों में कमी होगी।

उपाय—

१. बैल दान करें।

२. शिव एवं दुर्गा की पूजा करें।

राहु अन्तर्दशा (14:01:2068 से 09:06:2070)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. मृत्युंजय जाप करें।
2. शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।

शनि दशा (09:06:2070 से 09:06:2089)

शनि अर्न्तदशा (09:06:2070 से 12:06:2073)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. शनि का व्रत रखें एवं शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2. नीलम, लोहा, तिल एवं सरसों का तेल दान करें।
3. शनि के बीज मंत्र का जप करें।

बुध अर्न्तदशा (12:06:2073 से 19:02:2076)

आपकी कुण्डली में बुध सूर्य, मंगल या राहु के साथ स्थित है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान आपको अपने कामों में हानि हो सकती है, आपका मन बेचैन रह सकता है तथा आप किसी रोग से ग्रसित रह सकते हैं।

उपाय—

1. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
2. अन्नदान करें।
3. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जप करें।
4. आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या या तुला है। आप फिरोजा या हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (19:02:2076 से 31:03:2077)

आपकी कुण्डली में केतु लग्न या शनि से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपको स्वादिष्ट या बढ़िया भोजन कम प्राप्त हो सकता है। आप शीतज्वर एवं अतिसार से ग्रसित हो सकते हैं। आपके घर चोरी होने की संभावना है। किसी कारणवश अपने जीवनसाथी एवं संतान से आपका वियोग हो सकता है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

उपाय—

1. गणेश एवं काली की पूजा करें।
2. विष्णु की आराधना करें।

शुक्र अर्न्तदशा (31:03:2077 से 30:05:2080)

आपकी कुण्डली में शुक्र लग्न या शनि से छठे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रहों के साथ स्थित है या दृष्ट है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान आपके जीवनसाथी को कष्ट हो सकता है। आपका स्थान परिवर्तन हो सकता है, पदावनति हो सकती है, अपनों से कलह एवं विरोध हो सकता है। आपको जल में डूबने या ऊँचाई से गिरने का

खतरा हो सकता है।

उपाय—

1. दुर्गासप्तशती पाठ करें।
2. गाय एवं भैंस दान करें।
3. शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।
4. आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुंभ है। आप हीरा या सफेद मूंगा धारण कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (30:05:2080 से 12:05:2081)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. सूर्य एवं शिव की आराधना करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (12:05:2081 से 11:12:2082)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. गाय तथा भैंस दान करें।
2. शिव एवं पार्वती की आराधना करें।
3. स्फटिक की माला धारण कर उसी माला से ॐ नमः शिवाय का जप करें।

मंगल अन्तर्दशा (11:12:2082 से 20:01:2084)

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

मंगल की अंतर्दशा के दौरान आपको धन हानि हो सकती है। चोर, डाकू या शस्त्रों से खतरा हो सकता है, अपनों से कलह हो सकता है, पशुओं की हानि हो सकती है एवं किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं।

उपाय—

1. बैल दान करें।
2. हनुमान की आराधना करें।

राहु अन्तर्दशा (20:01:2084 से 26:11:2086)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. मृत्युंजय जप करें।
2. बैल दान करें।
3. शिव, दुर्गा एवं हनुमान की आराधना करें।

गुरु अन्तर्दशा (26:11:2086 से 09:06:2089)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. शिवसहस्रनाम का जप करें।
2. सोना दान करें।
3. शिव के साथ-साथ विष्णु की भी आराधना करें।

बुध दशा (09:06:2089 से 09:06:2106)

बुध अन्तर्दशा (09:06:2089 से 05:11:2091)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. बुधवार का व्रत रखें एवं बुध के बीज मंत्र का जप करें।
2. सोने का पात्र दान करें।
3. बुधवार या बुध के नक्षत्र में पन्ना धारण करें।

केतु अन्तर्दशा (05:11:2091 से 01:11:2092)

आपकी कुण्डली में केतु लगन से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपको वाहन, विष या विषैले जंतुओं, चोर-डाकू या आपराधिक किस्म के लोगों से खतरा हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। इस दौरान आपमें किसी तरह की पाप करने की प्रवृत्ति जागृत हो सकती है। नीच किस्म के लोगों की संगति से बचें।

उपाय—

1. गणेश एवं विष्णु की पूजा करें।
2. हरा पन्ना धारण करने से लाभ होगा।

शुक्र अन्तर्दशा (01:11:2092 से 02:09:2095)

आपकी कुण्डली में शुक्र बुध से बारहवें भाव में पाप ग्रहों के साथ स्थित है या अस्त है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान आप हृदयरोग, ज्वर, अतिसार आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी प्रतिष्ठा पर आँच आ सकती है। भाई-बंधु से वियोग हो सकता है। शारीरिक कष्ट से परेशान हो सकते हैं।

उपाय—

1. दुर्गा की पूजा करें एवं दुर्गामंत्र ओम् नमश्चंडिकायै का जप करें।
2. आपका लगन वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुंभ है। आप हीरा या सफेद पुखराज या सफेद मूंगा धारण कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (02:09:2095 से 09:07:2096)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. सूर्य की आराधना करें।
2. सूर्य, शिव एवं विष्णु की पूजा करें।

चन्द्र अर्न्तदशा (09:07:2096 से 08:12:2097)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. दुर्गामंत्र ओम् नमश्चंडिकायै का जप करें।
2. वस्त्र दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (08:12:2097 से 05:12:2098)

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है या दृष्ट है।

आपकी कुण्डली में मंगल बुध से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रहों के साथ स्थित है। अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है, चोर या आग से खतरा हो सकता है, आपका स्थान परिवर्तन हो सकता है तथा नौकरी आदि में आपकी पदावनति हो सकती है।

मंगल की अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है, धन-संपत्ति की हानि हो सकती है, आग से खतरा हो सकता है तथा गठिया एवं ज्वर से ग्रसित हो सकते हैं।

उपाय—

1. गाय दान करें।
2. मृत्युंजय जाप करें।
3. शिव, विष्णु एवं हनुमान की आराधना करें।

राहु अर्न्तदशा (05:12:2098 से 24:06:2101)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा करें एवं मंत्र जाप करें।
2. गाय या भैंस दान करें।
3. आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर या कुंभ है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

गुरु अर्न्तदशा (24:06:2101 से 29:09:2103)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा

के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. शिवसहस्रनाम का जप करें।
2. गाय एवं सोना दान करें।
3. रोज ॐ नमः शिवाय एवं ॐ नमो नारायणाय मंत्र का जप करें।

शनि अन्तर्दशा (29:09:2103 से 09:06:2106)

आपकी कुण्डली में शनि लग्न या बुध से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको अपने शत्रुओं से खतरा हो सकता है। आपकी बुद्धि का हास हो सकता है, कार्य या व्यवसाय में हानि हो सकती है, किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं, आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है तथा आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं।

उपाय—

1. मृत्युंजय जप करें।
2. काली गाय एवं काली भैंस दान करें।
3. विष्णु की आराधना करें एवं ॐ नमो नारायणाय मंत्र का जप करें।
4. आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुंभ है। आप नीलम या फिरोजा धारण कर सकते हैं।

केतु दशा (09:06:2106 से 09:06:2113)

केतु अन्तर्दशा (09:06:2106 से 05:11:2106)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. सात अनाज (उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
2. चॉदी का पात्र दान करें।
3. गणेश चौथ का व्रत रखें।

शुक्र अन्तर्दशा (05:11:2106 से 05:01:2108)

आपकी कुण्डली में शुक्र लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में शुक्र केतु से छठे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है या अस्त है या नीच है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान आपको धन एवं पशुओं की हानि हो सकती है। अपने लोगों से कलह हो सकता है, आपकी प्रतिष्ठा में कमी हो सकती है, आपकी पदावनति हो सकती है एवं आप सिर या आँख या हृदयरोग से पीड़ित हो सकते हैं।

उपाय—

1. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
2. गाय या भैंस दान करें।
3. गणेश-लक्ष्मी या दुर्गा-शिव की आराधना करें।
4. स्फटिक की माला धारण करें।
5. आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुंभ है। आप हीरा, सफेद मूंगा, स्फटिक या सफेद पुखराज धारण कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (05:01:2108 से 12:05:2108)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. सूर्य, शिव एवं गणेश की आराधना करें।
2. सोना एवं गाय दान करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (12:05:2108 से 11:12:2108)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. चंद्रमा का जप एवं दान करें।
2. गणेश, शिव एवं पार्वती की आराधना करें।

मंगल अन्तर्दशा (11:12:2108 से 09:05:2109)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. बैल दान करें।
2. गणेश, दुर्गा एवं हनुमान की आराधना करें।

राहु अन्तर्दशा (09:05:2109 से 27:05:2110)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
2. दुर्गा एवं गणेश की आराधना करें।

गुरु अन्तर्दशा (27:05:2110 से 03:05:2111)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा

के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. शिव सहस्रनाम एवं महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
2. गणेश, शिव एवं विष्णु की आराधना करें।

शनि अन्तर्दशा (03:05:2111 से 11:06:2112)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. तिल से होम करें।
2. काली गाय या भैंस दान करें।
3. गणेश, काली एवं विष्णु की आराधना करें।

बुध अन्तर्दशा (11:06:2112 से 09:06:2113)

आपकी कुण्डली में बुध केतु से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान सत्तापक्ष से आपको विरोध हो सकता है, धन-संपत्ति की हानि हो सकती है तथा दूसरे के घर में निवास कर सकते हैं।

उपाय—

1. विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
2. गणेश एवं विष्णु की आराधना करें।
3. आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

शुक्र दशा (09:06:2113 से 09:06:2133)

शुक्र अन्तर्दशा (09:06:2113 से 08:10:2116)

आपकी कुण्डली में शुक्र छूटे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है।

शुक्र की महादशा या अंतर्दशा के दौरान आपको चोर या डाकू से खतरा हो सकता है। सरकारी अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है।

उपाय—

1. चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यंत्र बनाकर अपने पास रखें।
2. दुर्गा पाठ करें।
3. सफेद वस्तुओं का दान करें।

सूर्य अन्तर्दशा (08:10:2116 से 08:10:2117)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. सूर्य की आराधना करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (08:10:2117 से 09:06:2119)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. सफेद गाय दान करें।
2. शिव एवं पार्वती की आराधना करें।

मंगल अन्तर्दशा (09:06:2119 से 08:08:2120)

आपकी कुण्डली में मंगल शुक्र से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है या दृष्ट है या अस्त है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

मंगल की अंतर्दशा के दौरान आप अचानक किसी गंभीर रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको कोई चोट लग सकती है या दुर्घटनाग्रस्त हो सकते हैं। आपका स्थान परिवर्तन हो सकता है, आप अपने रास्ते से भटक सकते हैं तथा धन-संपत्ति, व्यवसाय, मकान एवं भूमि आदि की हानि हो सकती है।

उपाय—

1. बैल दान करें।
2. शिव, दुर्गा एवं हनुमान की आराधना करें।

राहु अन्तर्दशा (08:08:2120 से 08:08:2123)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
2. शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।

गुरु अन्तर्दशा (08:08:2123 से 09:04:2126)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. महामृत्युंजय जप करें।
2. शिव एवं विष्णु की आराधना करें।

शनि अन्तर्दशा (09:04:2126 से 09:06:2129)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. महामृत्युंजय जप एवं दुर्गासप्तशती पाठ करें।
2. शिव एवं हनुमान की आराधना करें।

बुध अन्तर्दशा (09:06:2129 से 08:04:2132)

आपकी कुण्डली में बुध लग्न से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में अस्त है या पाप ग्रह के साथ स्थित है। आपको व्यवसाय में हानि हो सकती है।

उपाय—

1. विष्णुसहस्रनाम का जप करें।
2. विष्णु एवं लक्ष्मी की आराधना करें।
3. आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (08:04:2132 से 09:06:2133)

आपकी कुण्डली में केतु लग्न से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपको चोर, डाकू, सॉफ, विष, आग, अस्त्र तथा आपराधिक किस्म के लोगों से खतरा हो सकता है। आपके सिर में अक्सर दर्द हो सकता है, आप बेवजह आपसी कलह में फँस सकते हैं, आपके खर्च अधिक हो सकते हैं, किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं तथा आपके कामों में हानि हो सकती है।

उपाय—

1. मृत्युंजय जप करें।
2. शिव, गणेश एवं दुर्गा की आराधना करें।

सूर्य दशा (09:06:2133 से 09:06:2139)

सूर्य अन्तर्दशा (09:06:2133 से 26:09:2133)

उपाय—

1. सुबह में तांबे के बर्तन से सूर्य को अर्घ्य दें।
2. अशुभ फल प्राप्ति के समय सोने का कमल दान करें।
3. सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (26:09:2133 से 28:03:2134)

आपकी कुण्डली में चंद्रमा क्षीण है या पापी ग्रहों के साथ स्थित है या चंद्रमा पर पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न या सूर्य से छूटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

यह अंतर्दशा आपके लिए कष्टप्रद हो सकती है। आपके जीवनसाथी या संतान को कष्ट हो सकता है, आपको शारीरिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है। आपके कामों में हानि, अधीनस्थों से मतभेद, धन हानि, लोगों से

विवाद, स्थान परिवर्तन जैसे अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय-

1. सफेद गाय दान करें।
2. शिव एवं पार्वती की पूजा करें तथा स्फटिक की माला धारण करें।
3. स्फटिक माला पर रोज 90८ बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें।

मंगल अर्न्तदशा (28:03:2134 से 02:08:2134)

आपकी कुण्डली में मंगल पापी ग्रह के साथ स्थित है या दृष्ट है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न या सूर्य से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

मंगल की अंतर्दशा के दौरान आपकी कूरता में वृद्धि हो सकती है। आपको धन हानि हो सकती है, सरकारी अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, मानसिक रोग से ग्रसित हो सकते हैं, मुकद्दमेबाजी में फँस सकते हैं, भाई-बंधुओं के विरोध का सामना करना पड़ सकता है तथा आपको अपने कामों में हानि हो सकती है।

उपाय-

1. वेदपाठ करें एवं बैल दान करें।
2. लाल चंदन की माला धारण करें एवं इसी माला से गायत्री मंत्र का जप करें।

राहु अर्न्तदशा (02:08:2134 से 27:06:2135)

आपकी कुण्डली में राहु लग्न या सूर्य से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में राहु दूसरे या सातवें भाव में स्थित है अथवा दूसरे या सातवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है।

राहु की अंतर्दशा के दौरान आप स्थान परिवर्तन को बाध्य हो सकते हैं तथा चोर एवं सॉप से आपको खतरा हो सकता है। अकालमृत्यु की भी संभावना हो सकती है।

उपाय-

1. दुर्गापाठ करें तथा काली गाय का दान करें।
2. दुर्गा एवं हनुमान की पूजा करें।
3. राहु के लिए कोई रत्न धारण नहीं करें।

गुरु अर्न्तदशा (27:06:2135 से 14:04:2136)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1. सोना एवं कपिला गाय का दान करें।
2. अपने इष्टदेव की पूजा करें।
3. भगवान विष्णु एवं शिव की पूजा करें।

शनि अर्न्तदशा (14:04:2136 से 28:03:2137)

आपकी कुण्डली में शनि लग्न या सूर्य से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

शनि अंतर्दशा के दौरान आपको रोग, काम में हानि, धन हानि, पारिवारिक कलह, स्वजनों से वियोग आदि जैसे अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय—

1. काली गाय या भैंस दान करें।
2. महामृत्युंजय जाप करें।
3. रुद्र-शिव या रुद्रावतार हनुमान एवं महाकाली की आराधना करें।

बुध अर्न्तदशा (28:03:2137 से 01:02:2138)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय—

1. विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें एवं चाँदी की विष्णु प्रतिमा दान करें।
2. आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह या कन्या है। आप कनिष्ठिका अंगुली में पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (01:02:2138 से 09:06:2138)

आपकी कुण्डली में केतु लग्न या सूर्य से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आप रोगों से परेशान हो सकते हैं, धन हानि हो सकती है, रात्रु परेशान कर सकते हैं तथा आपको अपना स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है।

उपाय—

1. दुर्गा का जाप एवं शतचंडी पाठ करें।
2. गणेश की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (09:06:2138 से 09:06:2139)

आपकी कुण्डली में शुक्र लग्न से छठे, आठवें या बारहवें भाव में या सूर्य से बारहवें भाव में पाप ग्रहों के साथ स्थित है या उस पर पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है।

शुक्र की अंतर्दशा के दौरान रोग, शारीरिक एवं मानसिक कष्ट आदि से परेशान हो सकते हैं। सरकारी अधिकारियों के कोपभाजन भी बन सकते हैं।

उपाय—

1. मृत्युंजय जाप तथा रुद्र जाप करें। गाय या भैंस दान करें।

लाल किताब में विमशोत्तरी दशा से भविष्यफल और उपाय

चन्द्र दशा (17:12:2021 से 09:06:2029)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. चाँदी की अंगुठी में मोती धारण करें।
2. चाँदी का कमल दान करें।
3. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

राहु अर्न्तदशा (17:12:2021 से 09:05:2022)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, संतान, कर्ज, धन हानि आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. मंगल का व्रत रखें एवं हनुमान जी के चरणों में सिंदूर अर्पित करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. चाँदी का हाथी दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (09:05:2022 से 08:09:2023)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।
2. काली गाय या भैंस का दान करें।
3. शनि स्तोत्र का पाठ करें।

शनि अर्न्तदशा (08:09:2023 से 09:04:2025)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई-बंधु, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3. सोने की गाय या भैंस का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (09:04:2025 से 08:09:2026)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
2. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
3. बकरी का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (08:09:2026 से 09:04:2027)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. केतु के बीज मंत्र का २१ दिनों में सत्तरह हजार जप करें।
2. सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
3. गणपति के १०८ नामों का जप करें।

शुक्र अर्न्तदशा (09:04:2027 से 08:12:2028)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, सरकारी कार्य, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शुक्रवार को एक गड़्ढा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. चोंदी की दुर्गा-मूर्ति दान करें।

सूर्य अर्न्तदशा (08:12:2028 से 09:06:2029)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
2. भगवान् शिव की पूजा करें।
3. आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल दशा (09:06:2029 से 08:06:2036)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, रक्त, परिवार, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. तांबे का कड़ा पहनें।
2. तांबे का कमल दान करें।
3. मंगलवार का व्रत करें।

मंगल अर्न्तदशा (09:06:2029 से 05:11:2029)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खून, वाहन, दुर्घटना, विषैले जीव आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. ४३ दिनों में मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
2. शिव चालीसा का पाठ करें।
3. हनुमान चालीसा का पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (05:11:2029 से 23:11:2030)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या वाहन दुर्घटना, धन-संपत्ति, कचहरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. 99 ब्राह्मणों को मिठाई के साथ भोजन कराएँ एवं दक्षिणा दें।
2. चॉदी का नाग दान करें।
3. रसोई में बैठकर भोजन करें।

गुरु अर्न्तदशा (23:11:2030 से 30:10:2031)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मुकद्दमा, सरकारी कार्य, धन-संपत्ति, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. रोज बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।
2. शिवसहस्रनाम का पाठ एवं हवन करें।
3. पक्का हुआ सीताफल - जो अंदर से खोखला हो - किसी मंदिर आदि में रखें।

शनि अर्न्तदशा (30:10:2031 से 08:12:2032)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसीतरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, पारिवारिक कलह, नौकरी या व्यापार, संतान, व्यसन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. काली गाय दान करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. बजरंगबाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (08:12:2032 से 05:12:2033)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या सम्मान, मुकदमा, वाहन दुर्घटना, आग, नौकरी, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमीके लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. रोज शिवलिंग पर जल चढ़ायें।
2. चाँदी की घोड़ी दान करें।
3. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

केतु अर्न्तदशा (05:12:2033 से 03:05:2034)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, खून, धन-संपत्ति, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. केतु स्तोत्र का पाठ करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

शुक्र अर्न्तदशा (03:05:2034 से 03:07:2035)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसीतरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, व्यसन, मान-सम्मान, दोषारोपन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।
2. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
3. शुक्रवार को सफेद गायों को चारा डालें।

सूर्य अर्न्तदशा (03:07:2035 से 08:11:2035)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन-हानि, जीवनसाथी, संतान, विषैले जीव, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमीके लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2. आदित्यहृदयस्तोत्र का पाठ करें।
3. तांबे के सात चौरस टुकड़ों पर केसर का तिलक लगाकर गुलाबी रंग के कपड़े में बांध लें और सूर्योदय के बादपूर्व की ओर मुँह करके जंगल में दबायें।

चन्द्र अन्तर्दशा (08:11:2035 से 08:06:2036)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन-संपत्ति, जीवनसाथी, संतान, पालतू पशु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमीके लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सफेद गाय का दान करें।
2. शंख या सीप में २१ चावल के दाने भरकर अमावस्या के दिन नदी में प्रवाहित करें।
3. दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा करें।

राहु दशा (08:06:2036 से 09:06:2054)

वर्तमान में आप राहु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, लड़ाई-झगड़ा, विदेश निवास आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. सप्त धान्य (उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
2. स्वर्ण पात्र या सोने का साँप दान करें।
3. राहु के बीज मंत्र का जप करें।

राहु अन्तर्दशा (08:06:2036 से 19:02:2039)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में राहु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन-संपत्ति, मान-सम्मान, कर्ज, परिवारजन, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. दो नारियल एवं सिक्के के दस टुकड़े नदी में प्रवाहित करें।
2. चाँदी का नाग-नागिन दान करें।
3. नृसिंह कवच का पाठ करें।

गुरु अन्तर्दशा (19:02:2039 से 15:07:2041)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, जीवनसाथी, संतान, हृदय, वाहन दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. बृहस्पतिवार से शुरू कर लगातार ४३ दिनों तक अपनी नाभि के चारों ओर केसर का तिलक लगायें।
2. शिवसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
3. जल से शिव का रूद्राभिषेक करें।

शनि अन्तर्दशा (15:07:2041 से 21:05:2044)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में शनि की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, हृदय, गृहस्थ जीवन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
2. काली गाय या भैंस का दान करें।
3. शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बुध अन्तर्दशा (21:05:2044 से 08:12:2046)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में बुध की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यापार, जीवनसाथी, सांस आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. गोपालसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
2. विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
3. लगातार ४३ दिन छोटी कन्याओं को मिठाई खिलायें।

केतु अन्तर्दशा (08:12:2046 से 26:12:2047)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में केतु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, माता, पिता, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सर्पाकर चाँदी की अंगुठी पहनें।
2. गणपतिसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
3. गणेश चतुर्थी को गणेश जी की पूजा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (26:12:2047 से 26:12:2050)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, पिता, नौकरी, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शुक्र के बीज मंत्र का २१ दिनों में सोलह हजार जप करें।
2. श्रीसूक्त का पाठ करें।
3. शुक्रवार को नीम के तने में चांदी के नौ वर्गाकार टुकड़े दबायें।

सूर्य अन्तर्दशा (26:12:2050 से 20:11:2051)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या आग, वाहन दुर्घटना, जमीन-जायदाद, धन-संपत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. ११ रविवार को गेहूँ, गुड़ एवं तांबे का टुकड़ा दान करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. दो नारियल एवं सौ ग्राम जौ ५ शनिवार को नदी में प्रवाहित करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (20:11:2051 से 21:05:2053)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, धन-संपत्ति, व्यापार या नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सोमवार को दूध में सफेद फूल डालकर शिवलिंग पर चढ़ायें।
2. चांदी की गाय का दान करें।
3. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

मंगल अन्तर्दशा (21:05:2053 से 09:06:2054)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. ऋणमोचनस्तोत्र का पाठ करें।
2. सुन्दरकांड का पाठ करें।
3. मंगलवार को तंदूर वाली आठ मीठी रोटी कुत्तों को डालें।

गुरु दशा (09:06:2054 से 09:06:2070)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या भूमि, वाहन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. बृहस्पति के बीज मंत्र का जप करें।
2. सोना या पुखराज का दान करें।
3. बृहस्पतिवार बृहस्पति के नक्षत्र में सोने की अंगुठी में पुखराज धारण करें।

गुरु अर्न्तदशा (09:06:2054 से 27:07:2056)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. जल से शिव जी का रुद्राभिषेक करें।
2. शिवसहस्रनाम का पाठ करें।
3. पूर्णिमा का व्रत रखें एवं सत्यनारायण की कथा करें।

शनि अर्न्तदशा (27:07:2056 से 07:02:2059)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, व्यवसाय, भाई-बंधु, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सात शनिवार को सात सौ ग्राम काले चने की दाल काली भैंस को खिलायें।
2. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
3. काली गाय या भैंस का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (07:02:2059 से 15:05:2061)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-संपत्ति, साझेदार, व्यवसाय, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. नाक छेदन करायें।
2. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
3. काली बकरी का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (15:05:2061 से 21:04:2062)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप

किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-संपत्ति, पिता, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. रोज केतु के बारह नामों का जप करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
3. 99 बृहस्पतिवार को पीपल के पेड़ की प्रदक्षिणा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (21:04:2062 से 20:12:2064)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, नौकरी, जीवनसाथी, भाई-बंधु, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शुक्र के बीज मंत्र का जप करें।
2. सफेद गाय या भैंस का दान करें।
3. दुर्गासूक्त का पाठ करें।

सूर्य अर्न्तदशा (20:12:2064 से 08:10:2065)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या आँख, भाई-बंधु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2. आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें।
3. जल में लाल फूल डालकर लगातार ४३ दिन सूर्य को चढ़ायें।

चन्द्र अर्न्तदशा (08:10:2065 से 07:02:2067)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, नौकरी, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. सोना या चांदी का चंद्रमा दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (07:02:2067 से 14:01:2068)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप

किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, घर, जीवनसाथी, खून आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. मंगल का व्रत रखें एवं मंगल के बीज मंत्र का २१ दिनों में दस हजार जप करें।
2. हनुमान जी के १०८ नामों का जप करें।
3. रात में अपने सिरहाने तांबे के बर्तन में पानी भर कर रखें और सुबह वट वृक्ष में डालें।

राहु अर्न्तदशा (14:01:2068 से 09:06:2070)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पारिवारिक कलह, पैतृक संपत्ति, भाई-बंधु, व्यापार, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. राहु के नक्षत्र वाले दिन से लगातार ४३ दिन जौ की आटे की गोलियां मछलियों को डालें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. चोंदी का ५१ ग्राम का हाथी दान करें।

शनि दशा (09:06:2070 से 09:06:2089)

वर्तमान में आप शनि की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, वाहन दुर्घटना, भौतिक सुख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. शनि का व्रत रखें एवं शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2. नीलम, लोहा, तिल एवं सरसों का तेल दान करें।
3. शनि के बीज मंत्र का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (09:06:2070 से 12:06:2073)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मान-सम्मान, नौकरी, परिवारजन, जीवनसाथी, कर्ज, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. २१ शनिवार को सात बादाम एवं सात सौ ग्राम काली उड़द की दाल किसी धर्मस्थल में या माँगने वाले को दान दें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3. रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (12:06:2073 से 19:02:2076)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी

तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, नौकरी या व्यवसाय आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. बुध के बीज मंत्र का 99 दिनों में नौ हजार जप करें।
2. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
3. बकरी या अन्न का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (19:02:2076 से 31:03:2077)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. आठ सौ ग्राम सफेद तिल एवं आठ सौ ग्राम काला तिल गंगा में प्रवाहित करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (31:03:2077 से 30:05:2080)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, आँख, नौकरी, मान-सम्मान, भाई-बंधु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शुक्र के बीज मंत्र का सोलह हजार जप करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. सफेद गाय या भैंस का दान करें।

सूर्य अर्न्तदशा (30:05:2080 से 12:05:2081)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, मान-सम्मान, भाई-बंधु, धन-संपत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2. रविवार का व्रत रखें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
3. अरुणसहस्रनाम का पाठ करें।

चन्द्र अर्न्तदशा (12:05:2081 से 11:12:2082)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप

किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, धन हानि, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. तिल से हवन करें तथा गुड़, घी, दही-चावल, सफेद गाय आदि का दान करें।
2. शिव की उपासना करें एवं शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें।
3. दुर्गा की पूजा करें।

मंगल अर्न्तदशा (11:12:2082 से 20:01:2084)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, कर्ज, नौकरी, जीवनसाथी, भाई-बंधु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. ऋण के लिए ऋणमोचन स्तोत्र का पाठ करें। सामान्य कष्टों के लिए बजरंग बाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. शांति हवन तथा बैल का दान करें।
3. भुजंग स्तोत्र का पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (20:01:2084 से 26:11:2086)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवार, मित्र, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभफल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. अनुष्ठान सहित राहु के बीज मंत्र का अठ्ठारह हजार जप करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. बकरी का दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (26:11:2086 से 09:06:2089)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या संबंधी, नौकरी, व्यापार, जीवनसाथी, संतान, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सोने का दान करें।
2. शिवसहस्रनाम का पाठ करें।
3. भगवान् सत्यनारायण की कथा करें।

बुध दशा (09:06:2089 से 09:06:2106)

वर्तमान में आप बुध की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मित्र, परिवार, धन-संपत्ति, मान-सम्मान, खेती, संतान, विद्या आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. बुधवार का व्रत रखें एवं बुध के बीज मंत्र का जप करें।
2. सोने का पात्र दान करें।
3. बुधवार या बुध के नक्षत्र में पन्ना धारण करें।

बुध अर्न्तदशा (09:06:2089 से 05:11:2091)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, नौकरी, व्यापार, परिवारजन, भाई-बंधु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. बुध स्तोत्र का पाठ करें।
2. बकरी की सेवा करें।
3. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

केतु अर्न्तदशा (05:11:2091 से 01:11:2092)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. केतु के नक्षत्र में लहसुनिया मध्यमा अंगुली में धारण करें।
2. गणपतिस्तोत्र का पाठ करें।
3. काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (01:11:2092 से 02:09:2095)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, मान-सम्मान, भाई-बंधु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. चाँदी की गाय दान करें।
2. लक्ष्मीनारायण हृदय का पाठ करें।
3. दुर्गा की पूजा करें।

सूर्य अर्न्तदशा (02:09:2095 से 09:07:2096)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दुर्घटना, व्यापार, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभफल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. रविवार या सूर्य के नक्षत्र में अनामिका अंगुली में माणिक धारण करें।
2. तांबे की गाय दान करें।
3. लगातार ४३ दिन ठीक १२ बजे लाल फूल एवं जल सूर्य को चढ़ायें।

चन्द्र अर्न्तदशा (09:07:2096 से 08:12:2097)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मित्र, भाई-बंधु, सहकर्मी, व्यापार, नौकरी, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमीके लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. अनुष्ठान सहित चंद्रमा के बीज मंत्र का जप करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. सफेद वस्त्र दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (08:12:2097 से 05:12:2098)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, परिवार, मुकदमा, व्यापार, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. मंगल स्तोत्र का पाठ करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3. तांबे का बैल दान करें।

राहु अर्न्तदशा (05:12:2098 से 24:06:2101)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में राहु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, भाई-बंधु, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. छोटी कन्याओं को हरे वस्त्र दान करें।
2. दो नारियल एवं दस टुकड़े सिक्के बुधवार को जल में प्रवाहित करें।
3. सिक्के का हाथी बनाकर गंगाजल में डालकर घर पर रखें।

गुरु अर्न्तदशा (24:06:2101 से 29:09:2103)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में बृहस्पति की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दुर्घटना, जीवनसाथी, संतान, गृहस्थ जीवन, धन-संपत्ति, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शिवसहस्रनाम का पाठ करें।
2. धार्मिक पुस्तकों का दान करें।
3. गाय का दान करें।

शनि अर्न्तदशा (29:09:2103 से 09:06:2106)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में शनि की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यवसाय, धन हानि, जीवनसाथी, संतान, भाई-बंधु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शनिवार या शनि के नक्षत्र में उड़द की दाल के पकौड़े बनाकर काले कुत्तों को खिलायें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. काली गाय या भैस का दान करें।

केतु दशा (09:06:2106 से 09:06:2113)

वर्तमान में आप केतु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मित्र, परिवार, धन-संपत्ति, वाहन, आग, जल, विद्या, जीवनसाथी, संतान आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. सात अनाज (उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
2. चाँदी का पात्र दान करें।
3. गणेश चौथ का व्रत रखें।

केतु अर्न्तदशा (09:06:2106 से 05:11:2106)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में केतु की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या स्थान परिवर्तन, आमदनी, कर्ज, मान-सम्मान, जीवनसाथी, संतान, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
2. संकट चतुर्थी का 9८ व्रत रखें।
3. काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (05:11:2106 से 05:01:2108)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, आमदनी, धन-संपत्ति, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. छोटी कन्याओं को गोल-गप्पे खिलायें।
2. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
3. सफेद गाय या चॉदी की गाय दान करें।

सूर्य अर्न्तदशा (05:01:2108 से 12:05:2108)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, माता, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सात रविवार लाल गाय को हरा चारा डालें।
2. तांबे या चॉदी की गाय दान करें।
3. सूर्य स्तोत्र का पाठ करें।

चन्द्र अर्न्तदशा (12:05:2108 से 11:12:2108)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, परिवारजन, संबंधी, जीवनसाथी, माता, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सफेद गाय का दान करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. चंद्रस्तोत्र का पाठ करें।

मंगल अर्न्तदशा (11:12:2108 से 09:05:2109)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, परिवारजन, कर्ज, गृहस्थ जीवन, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. चॉदी के बर्तन में शहद भरकर मकान की नींव में दबायें।
2. लाल बैल या तांबे का बैल दान करें।
3. महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (09:05:2109 से 27:05:2110)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में राहु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी या व्यापार, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. अनुष्ठान के साथ राहु के बीज मंत्र का जप करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. बुधवार को ग्यारह किलो कक्का कोयला नदी में प्रवाहित करें।

गुरु अन्तर्दशा (27:05:2110 से 03:05:2111)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति, व्यवसाय, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. 99 पूर्णिमा को व्रत रखें। व्रत के दौरान पीला वस्त्र पहनें।
2. अनुष्ठान के साथ शिवसहस्रनाम का जप करें।
3. शिवसंकरूप का जप करें।

शनि अन्तर्दशा (03:05:2111 से 11:06:2112)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में शनि की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, व्यापार, नौकरी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
2. काली गाय या भैंस का दान करें।
3. शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बुध अन्तर्दशा (11:06:2112 से 09:06:2113)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में बुध की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, नौकरी, संबंधी, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. महासुदर्शन मंत्र का जप करें।
2. अनुष्ठान के साथ विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
3. बकरी दान करें।

शुक्र दशा (09:06:2113 से 09:06:2133)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति, मित्र आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यंत्र बनाकर अपने पास रखें।
2. दुर्गा पाठ करें।
3. सफेद वस्तुओं का दान करें।

शुक्र अन्तर्दशा (09:06:2113 से 08:10:2116)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-संपत्ति, भाई-बंधु, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. सफेद गाय का दान करें।
2. अनुष्ठान के साथ ललितासहस्रनाम का पाठ करें।
3. दुर्गासूक्त का पाठ करें।

सूर्य अन्तर्दशा (08:10:2116 से 08:10:2117)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, पिता, नौकरी, व्यापार, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. संक्रांति के दिन उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी, पुराने कपड़े एवं पैसे का दान करें।
2. रविवार या सूर्य के नक्षत्र में माणिक धारण करें।
3. शिव का दूध से रूद्राभिषेक करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (08:10:2117 से 09:06:2119)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, भाई, जीवनसाथी, संतान, माता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।
2. शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें एवं एक माला ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।
3. ११ सोमवार को व्रत रखें एवं दूध-मिश्री दान करें।

मंगल अन्तर्दशा (09:06:2119 से 08:08:2120)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप

किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खेत, मकान, नौकरी, वाहन दुर्घटना, धन-संपत्ति, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं हनुमान जी को सिंदूर अर्पित करें।
2. लक्ष्मी कवच का पाठ करें।
3. सुन्दरकांड का ३२ पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (08:08:2120 से 08:08:2123)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, परिवारजन, मान-सम्मान, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. जौं एवं सरसों को मिट्टी के बर्तन में भरकर बहते पानी में प्रवाहित करें।
2. दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3. चोंदी का हाथी दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (08:08:2123 से 09:04:2126)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, धन-संपत्ति, व्यापार, संतान, स्थान परिवर्तन, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. 99 बृहस्पतिवार को पीला धागा पीपल के पेड़ में लपेटें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।

शनि अर्न्तदशा (09:04:2126 से 09:06:2129)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. शनिस्तोत्र का पाठ करें।
2. महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3. काली गाय का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (09:06:2129 से 08:04:2132)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी

तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, मान-सम्मान, संबंधी, व्यापार, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. बकरी का दान करें।
2. रोज विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
3. शालिग्राम की पूजा करें एवं तुलसी के तीन या छः पत्ते खायें।

केतु अन्तर्दशा (08:04:2132 से 09:06:2133)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में केतु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, स्थान परिवर्तन, जीवनसाथी, संतान, यात्रा, आमदनी, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. काले कुत्ते की सेवा करें।
2. मृत्युंजय जप करें।
3. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

सूर्य दशा (09:06:2133 से 09:06:2139)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या भाई-बंधु, स्त्री, पुत्र, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1. सुबह में तांबे के बर्तन से सूर्य को अर्घ्य दें।
2. अशुभ फल प्राप्ति के समय सोने का कमल दान करें।
3. सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

सूर्य अन्तर्दशा (09:06:2133 से 26:09:2133)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
2. लगातार ४३ दिन जल में लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
3. सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

चन्द्र अन्तर्दशा (26:09:2133 से 28:03:2134)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-संपत्ति, कर्ज, रात्रु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको

निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।
2. सफेद गाय का दान करें।
3. दुर्गासप्तशती का पाठ करें या करायें।

मंगल अर्न्तदशा (28:03:2134 से 02:08:2134)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, जमीन-जायदाद आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. २१ मंगलवार को व्रत रखें एवं मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
2. किसी ब्राह्मण को सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।
3. चामुण्डा देवी की पूजा करें।

राहु अर्न्तदशा (02:08:2134 से 27:06:2135)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मकान, नौकरी, आग आदि से संबंधित कोई अशुभ फलप्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. २१ दिनों में राहु के बीज मंत्र का अठारह हजार जप करें।
2. दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
3. सात काली गाय या भैंस का दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (27:06:2135 से 14:04:2136)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

1. भगवान विष्णु के १०८ नामों का जप करें।
2. कर्पिला गाय का दान करें।
3. चार या पाँच रत्ती का पुखराज धारण करें।

शनि अर्न्तदशा (14:04:2136 से 28:03:2137)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या स्वास्थ्य, संबंधियों, धन-संपत्ति, प्रतिष्ठा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको

निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

१. शनि स्तोत्र का पाठ करें।
२. पंचधातु की अंगुठी तथा काली जुराब दान करें।
३. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

बुध अर्न्तदशा (28:03:2137 से 01:02:2138)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन-संपत्ति, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

१. २१ दिनों में बुध के बीज मंत्र का नौ हजार जप करें।
२. विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
३. अन्न एवं चाँदी की सूर्य प्रतिमा का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (01:02:2138 से 09:06:2138)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दाँत, पिता, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

१. काले कुत्ते की सेवा करें।
२. गणपतिसहस्रनाम का पाठ करें।
३. दुर्गा सूक्त का पाठ करें।

शुक्र अर्न्तदशा (09:06:2138 से 09:06:2139)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, घर-परिवार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए-

उपाय-

१. शिवस्तोत्र का पाठ करें।
२. महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
३. सफेद गाय का दान करें।

आपकी कुण्डली में लागू हो रहे अनपत्य दोष

ज्योतिष में किसी मनुष्य के पूर्व जन्मों के कर्मों का काफी महत्त्व होता है। ऐसा माना जाता है कि हर मनुष्य को अपने पिछले जन्मों के कर्मों का भी फल किसी न किसी रूप में प्राप्त होता है, चाहे वो सुफल हो या कुफल। अर्थात् पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का अच्छा फल एवं बुरे कर्मों का बुरा फल प्राप्त होगा। संतान न होना, गर्भ नहीं ठहरना, गर्भपात हो जाना या मृत संतान का पैदा होना आदि पूर्व जन्म के बुरे कर्मों का फल हो सकता है। पूर्व जन्म में किसी को किसी भी तरह से सताने पर उसका श्राप इस जन्म में दोष के रूप में सामने आता है, जिसे अनपत्य दोष कहते हैं। इस दोष का सीधा संबंध संतति से होता है।

हालांकि, हर दोष का परिहार होता है, जो बुरे प्रभाव को काफी हद तक कम करने में सक्षम होता है।

सर्प-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में किसी सर्प को मारने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में सर्प-शाप लागू नहीं हो रहा है।

पितृ-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने पिता को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में पितृ-शाप लागू नहीं हो रहा है।

मातृ-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपनी माता को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में मातृ-शाप लागू नहीं हो रहा है।

भ्रातृ-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने भाई को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में भ्रातृ-शाप लागू नहीं हो रहा है।

मातुल-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने मामा को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में मातुल-शाप लागू नहीं हो रहा है।

ब्रह्म-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने धन या बल के मद में किसी ब्राह्मण को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में ब्रह्म-शाप लागू नहीं हो रहा है।

पत्नी-शाप

नारी सदा सम्मानीय होती है। वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में माता, पत्नी या किसी अन्य नारी को सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुँचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में पत्नी-शाप लागू नहीं हो रहा है।

प्रेत-शाप

अपने मृत पितरों का श्राद्ध नहीं करने से पितरों की आत्मा मुक्त नहीं हो पाती है और प्रेत बन जाती हैं। उन पितरों के शाप के कारण संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में प्रेत-शाप लागू नहीं हो रहा है।

जन्म तिथि पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपका जन्म चतुर्दशी तिथि को हुआ है, इसलिए आपके लिए चौदह मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव भगवान शिव हैं। ये हमें पूर्ण ज्ञान एवं पांडित्य जैसी दैविक शक्तियाँ प्रदान करते हैं। इसे धारण करने वाला भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल देख सकता है, तथा यह अशुभ ग्रहों एवं काला जादूआदि के दुष्प्रभावों से होने वाली बीमारियों को ठीक करता है। इसे माथे पर धारण करने से सारे पापों का नाश होता है एवं योग्य संतान की प्राप्ति होती है।



चौदहमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह - उत्तम

मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह - मध्यम

आषाढ़ एवं श्रावण माह - अधम

भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) - अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं

रानिवार को अशुभ माना जाता है ।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए ।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है ।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है ।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है । इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं ।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें । अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है ।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः ।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें । स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें । पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें । भूमि शुद्धि मंत्र -

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें । पूजा में शुद्ध जलसे भरा पात्र रखें । पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें । फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें ।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें । अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें

और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अबस्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः ।

सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें ।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ।

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें ।

ॐ अस्य श्री हनुमन्मंत्रस्य, रामचन्द्र ऋषिः, जगती छन्दः, श्री हनुमद्देवता, ॐ बीजं हस्फ्रँ शक्तिः,
चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसे, जगती छन्दसे नमो मुखे, हनुमद्देवतायै नमो हृदि, औं बीजाय
नमो गुह्ये, हस्फ्रँ शक्तिः नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ औं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ हस्फ्रँ मध्यमाभ्यां नमः, ॐ खब्फ्रँ
अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हस्रँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ हसब्फ्रँ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें ।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ औं शिरसे स्वाहा, ॐ हस्फ्रँ शिखायै वषट्, ॐ खब्फ्रँ कवचाय हुम् ।
ॐ हस्रँ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हसब्फ्रँ अस्त्राय फट् ।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रुद्राक्ष के इष्ट देव भगवान शिव का ध्यान करें ।

उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थम्
मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखाशोभितं कुण्डलाभ्याम् ।
भक्तानामिष्टदानप्रवणमनुदिनं वेदनादप्रमोदम्
ध्याद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवादिम् ॥

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रुद्राक्ष पर जल छीटें एवं रुद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ आँ हस्त्रे खव्त्रे हस्त्रौ हसंव्त्रै (मूल मंत्र)

२-ॐ डं मां नमः

३-ॐ त्राम्

४-ॐ नमो नमः

५-ॐ नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए ।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।

श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पाँच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही

रखें ।

अभिमान न करें ।

परोपकार करें ।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न करें ।

क्रोध न करें ।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें ।

किसी को अपशब्द न कहें ।

ब्रह्मचर्य का पालन करें ।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें ।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें ।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें ।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें ।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें ।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें ।

गंदगी से दूर रहें ।

रुद्राक्ष के पति निष्ठा रखें ।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें ।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकवायें ।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर

रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट -

असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपके भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जाँच

जाँच संख्या १ -

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

जाँच संख्या २ -

असली रूद्राक्ष बहुत उष्ण होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

जाँच संख्या ३ -

एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नहीं होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

जन्म नक्षत्र पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपका जन्म नक्षत्र रोहिणी है। आपके लिए दोमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव अर्धनारीश्वर हैं। ये दो व्यक्तियों के निरंतर एकता को निश्चित करते हैं। जैसे ज्ञान के लिए गुरु-शिष्य की और परिवार में खुशहाली के लिए पति-पत्नी की एकता। इसको धारण करने से मनोकामना पूर्ण होती है तथा गो हत्या का दोष दूर होता है। यह पुण्य देने वाला होता है एवं पापों का नाश कर सुख प्रदान करता है।



दोमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को दायें हाथ से शिवलिंग या माँ भगवती के चरणों से छुआकर ॐ अर्धनारेश्वर देवाय नमः का जप करते हुए धारण करना चाहिए।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह - उत्तम

मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह - मध्यम

आषाढ़ एवं श्रावण माह - अधम

भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) - अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-रशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लगन

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लगन शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, रातभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र -

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जलसे भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान कराये फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान कराये। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनाये और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें।

अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ
बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय
नमः।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः ।

सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

दोमुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

अस्य श्री देवदेवेश मंत्रस्य अत्रि ऋषिः, गायत्री छन्दः, देवदेवेशो देवता, क्षीं शक्तिः,
चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें।

ॐ अत्रि ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, देवदेवेश देवतायै नमः, हृदि क्षीं बीजाय
नमः, गुह्ये क्षीं शक्तये नमः, पादयो विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्षीं
अनामिकाभ्यां नमः, ॐ व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ हृदयाय नमः, ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्षीं कवचाय हुम्। ॐ व्रीं
नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रुद्राक्ष के इष्ट देव त्रिनेत्री, नीलकण्ठ वाले, चंद्रकांति समान, अभयमुद्राधारी, चक्र, धनुष, चंद्रमा को धारण करने वाले भगवान अर्धनारीश्वर शिव का ध्यान करें।

तपनसोमहुताशनलोचनं घनसमानगलं शशिसुप्रभम् ।
अभय-चक्रपीनाकवगन्करैर्दधतमिन्दुधरं गिरीशं भजेत् ॥

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रुद्राक्ष पर जल छीटें एवं रुद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ श्रीं नमः

२-ॐ खम्

३-ॐ ॐ नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

४-ॐ नमः

५-ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं वीं ॐ (मूल मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए ।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।

श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पाँच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न

करें ।

परोपकार करें ।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न करें ।

क्रोध न करें ।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें ।

किसी को अपशब्द न कहें ।

ब्रह्मचर्य का पालन करें ।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें ।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें ।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें ।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें ।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें ।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें ।

गंदगी से दूर रहें ।

रुद्राक्ष के पति निष्ठा रखें ।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें ।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकवायें ।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें ।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें ।

विशेष नोट -

असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपके भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जाँच

जाँच संख्या १ -

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

जाँच संख्या २ -

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छेदे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

जाँच संख्या ३ -

एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नहीं होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

जन्म राशि पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपकी जन्म राशि वृष है। आपके लिए चतुर्मुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान् होने का वर देता है। इस रूद्राक्ष को धारण करने से ब्रह्महत्या का दोष दूर होता है। इससे धर्म, धन, काम, सम्मान एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।



चारमुखी रूद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ॐ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपकी जन्म राशि वृष है। आपके लिए सप्तमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव महालक्ष्मी हैं। यह धन की बौछार करता है तथा इसकी बहुतायत सुनिश्चित करती है। चूंकि यह रूद्राक्ष पहना नहीं जाता, इसलिए इसे धन-पेटी में रखें। इस रूद्राक्ष को धारण करने से गरीबी खत्म होती है, सोना चोरी का दोष दूर होता है तथा पर्याप्त स्त्री सुख प्राप्त होता है।



सातमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर शिवलिंग से छुआकर ॐ नमः शिवाय महालक्ष्मी नमः मंत्र का जप करते हुए गले या दायें हाथ में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह – उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह – मध्यम
आषाढ एवं श्रावण माह – अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) – अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जलसे भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रुद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान करायें फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कंसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अबस्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवे भवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः ।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें ।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

चतुर्मुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें ।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः,
सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मादेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ईं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें ।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा का ध्यान करें ।

प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।

गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम् ॥

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें । माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें । प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायें हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें । फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें ।

१-ॐ वां क्रां तां हां इं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं हूं नमः

३-ॐ ह्रीं

४-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

५-ॐ नमः शिवाय

६-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

सप्तमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें ।

ॐ अस्य श्री अनंत मंत्रस्य भगवान् ऋषिः, गायत्री छन्दः, अनन्तो देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः,
मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें।

ॐ भगवान् ऋषये नमः शिरसे, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, अनन्तो देवतायै नमः हृदि, क्रीं बीजाय
नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ग्लौं
अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ सौं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रीं शिखायै वषट्, ॐ ग्लौं कवचाय हुम्। ॐ
ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सौं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रुद्राक्ष के इष्ट देवी महालक्ष्मी का ध्यान करें।

अनंत पुंडरीकाक्षं फणारातविभूषितम्।
विश्वक्बन्धूक-आकारं कूर्मारूढं प्रपूजयेत् ॥

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रुद्राक्ष पर जल छीटें एवं रुद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रीं क्रीं ग्लौं ह्रीं सौं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं सौम्

३-ॐ नमः शिवाय

४-ॐ ह्रीं

नमः

५-ॐ हः

६-ॐ हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनामृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् ।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पाँच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न करें।

क्रोध न करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द न कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन

करें।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें।

गंदगी से दूर रहें।

रुद्राक्ष के पति निष्ठा रखें।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकवें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट -

असली रुद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रुद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रुद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आर्शीवाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

**भद्राक्ष के लिए
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।**

भद्राक्ष के लिए शुभ

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जाँच

जाँच संख्या १ -

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

जाँच संख्या २ -

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

जाँच संख्या ३ -

एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नहीं होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

जन्म लग्न पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपका लग्न मिथुन है। आपके लिए चतुर्मुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान् होने का वर देता है। इस रूद्राक्ष को धारण करने से ब्रह्महत्या का दोष दूर होता है। इससे धर्म, धन, काम, सम्मान एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।



चारमुखी रूद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ॐ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपका लग्न मिथुन है। आपके लिए षट्मुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



छःमुखी रूद्राक्ष कार्तिकेय का प्रतीक होता है। इस रूद्राक्ष को दायें हाथ में धारण करने से ब्रह्महत्या का दोष दूर होता है। गले में धारण करने से बौद्धिक एवं शारीरिक लाभ प्राप्त होता है। यह सामर्थ्य तथा शासन संबंधी कलाएँ प्रदान करता है, तथा विज्ञान, तकनीकी शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सफलता निश्चित करता है।



छःमुखी रूद्राक्ष के तीन मनकों को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ॐ नमः शिवाय कार्तिकेय नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह – उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह – मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह – अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) – अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता

है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जलसे भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रुद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान कराये फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान कराये। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनाये और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अबस्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य

धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः ।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें ।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

चतुर्मुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें ।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः,
सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मादेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय

नमः गुह्ये, क्रां राक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ईं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें ।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम् । ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट् ।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा का ध्यान करें ।

प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम् ॥

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें । माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें । प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छोड़कर हटा लें । फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें ।

१-ॐ वां क्रां तां हां इं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं हूं नमः

३-ॐ ह्रीं

४-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

५-ॐ नमः शिवाय

६-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् ।

षट्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें ।

ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्री षष्ठमुखी देवता, ऐं बीजं, साँ शक्तिः,
क्लीं कीलकं, रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, साँ शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ साँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें ।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम् । ॐ साँ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट् ।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रुद्राक्ष के इष्ट देव भगवान् कार्तिकेय का ध्यान करें ।

क्रौञ्चपर्वतविदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः ।
चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्पडानन जगत्परिपाहि ।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें । माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रुद्राक्ष रखें । प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छोड़कर हटा लें । फिर रुद्राक्ष पर जल छीटें एवं रुद्राक्ष धारण करें ।

१-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं नमः

३-ॐ ह्रूम्

४-ॐ हूं नमः

५-ॐ ह्रीं हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए।

**मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥**

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पाँच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न करें।

क्रोध न करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र

रखें।

किसी को अपशब्द न कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें।

रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें।

गंदगी से दूर रहें।

रूद्राक्ष के पति निष्ठा रखें।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें।

रूद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकवायें।

रूद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट -

असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जॉच

जॉच संख्या १ -

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

जॉच संख्या २ -

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छेदे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

जॉच संख्या ३ -

एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नहीं होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

अंकशास्त्र से रत्न, मंत्र, यंत्र, रुद्राक्ष और उपाय



आपका जन्म दिनांक १७:१२:२०२१ है।

आपका मूलांक ८ है।

आपके मूलांक का अधिपति ग्रह शनि है।

ईष्ट देवता



भगवान शनि आपके ईष्ट देव हैं। गहरे रंग, गोल चेहरे, शक्तिशाली आँखों, बड़ी मूँछों और दोहरी ठुड्डी वाले शनि देव गिद्ध पर विराजमान हैं। उनके एक हाथ में तलवार, दूसरे में त्रिशूल, तीसरे में गदा और चौथे में गिद्ध की लगाम है। शस्त्रों से भली भाँति सजे हुये शनि भगवान अभय का वरदान दे रहे हैं।

ध्यान और उपासना

आपको पंच धातु (१ भाग सोना, २ भाग चाँदी, ३ भाग शीशा, १ भाग ताँबा और ५ भाग लोहा)से निर्मित शनि

भगवान की प्रतिमा या नीलम का ध्यान करना चाहिये। यह ध्यान आपको अपने सुबह के दैनिक कार्यों से निवृत्त होने के बाद करना चाहिये।

जप मंत्र

किसी भी ग्रह के लिये मंत्र का जप चन्द्रमा के बढ़ते हुये चक्र के दौरान पूरा करना चाहिये, और उसे बतायी गयी संख्या में दोहराना चाहिये। आपको इस मंत्र का प्रतिदिन 90८ बार जाप करना चाहिये।

ॐ ऐं ह्रीं स्रीं शनैश्चराय नमः।

शनि ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या १६ माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एवं तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैंक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे,

क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शनि ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

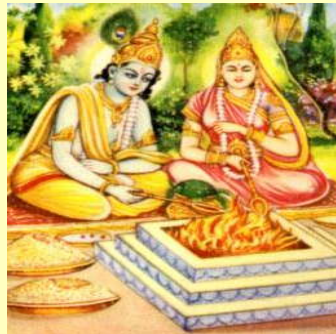


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियाँ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहरके समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

शनि ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़
जड़ी - धतूरे की जड़

शनि ग्रह के लिए स्नान व दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबुत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

अंकशास्त्र से रत्न धारण करने का सुझाव

नीलम की भौतिक संरचना

नीलम एक काफी आकर्षक रत्न है। यह अपने सौन्दर्य, आकर्षक रंग, पारदर्शिता, प्रतिरोधक शक्ति एवं स्थायित्व के लिए जाना जाता है। यह नीले रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, सहानुभूति, मित्रता, भरोसा एवं वफादारी सूचक है। तंजेनाइट, नीला स्पाइनल, जम्बुमणि इत्यादि नीलम के उपरत्न हैं।

नीलम धारण करने के फायदे

नीलम धारण करने से सफलता, सौभाग्य एवं खुशहाली प्राप्त होती है। यह जीवन में स्थायित्व प्रदान करता है। नीलम दूसरों की ईर्ष्या एवं कुदृष्टि से बचाता है। यात्रा के दौरान आने वाले खतरों को दूर करता है। स्वास्थ्य लाभ एवं मानसिक अशांति या मानसिक बीमारियों को दूर करने में नीलम काफी सहायक होता है। नीलम रचनात्मक कार्यों, अन्तर्दृष्टि एवं ध्यान को प्रेरित करता है। नीलम जुकाम एवं पित्तदोष में लाभदायक होता है तथा शनि के प्रकोप से बचाता है। नीलम धारण करने से धारक दीर्घायु होता है एवं सम्मान, यश, ज्ञान एवं धन-संपत्ति प्राप्त करता है। नीलम सत्तापक्ष से सम्मान दिलवाता है, दुश्मनों से रक्षा करता है एवं मोह-माया को दूर करता है।

रोगों पर नीलम का प्रभाव

नीलम धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं - नेत्र रोग, मुंह से खून आना, दिमाग की गर्मी, हिचकी, पागलपन, खांसी, ज्वर, उपदंश, अजीर्ण, विषमज्वर इत्यादि।

नीलम धारण करने के लिए महत्त्वपूर्ण निर्देश



बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित नीलम ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोतरी होगी। नीलम सोना, चांदी या लोहे से बनी अँगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। नीलम इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए, अँगूठी में धारण करना ज़्यादा लाभदायक होगा। नीलम का वजन ३-७ कैरेट (कम-से-कम ४ रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में तथा महिलाओं को बायें हाथ में धारण करना चाहिए। जब शनि मकर अथवा कुंभ राशि में हो या तुला राशि में उचस्थ हो या शनिवार को उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो उस दिन नीलम सोना, चांदी या लोहा में जड़वाकर धारण करें।

शनिवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे चालीस मिनट पहले नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईयां चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले शनि देवता के बीज मंत्र का २३ बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋग्वेद मंत्र का एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त, शनि अष्टोत्तर शतनामावली (शनि ग्रह के १०८ नाम) का जाप करें। इसके उपरांत शनि देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेटको गले में धारण करें।

नीलम दान की विधि

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

रांगा, सीसा या लोहे के पत्र पर शनि यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में नीलम जड़वाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिरशनि मंत्र से नीलम को शनिवार के दिन अभिमंत्रित करें। मध्याह्न काल में दीप बलि दें। तत्पश्चात्, लोहा, उड़द, सरसों का तेल, भैंस, उपानह, काला वस्त्र एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस प्रकार दान करने से शनि से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

नीलम के प्रभाव की अवधि

अंगूठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर ५ वर्ष तक नीलम प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद नीलम का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः ५ वर्ष बाद नीलम बदल देना चाहिए।

भाग्यांक पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव



आपका जन्म दिनांक १७:१२:२०२१ है।

आपका भाग्यांक ७ है।

आपका भाग्यांक ७ है, इसलिए आपके लिए सात मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है। चूंकि सात मुख

वाला रूद्राक्ष पहना नहीं जाता, इसलिए आप इसे खजाने में रख सकते हैं।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव महालक्ष्मी हैं। यह धन की बौछार करता है तथा इसकी बहुतायत सुनिश्चित करती है। चूँकि यह रूद्राक्ष पहना नहीं जाता, इसलिए इसे धन-पेटी में रखें। इस रूद्राक्ष को धारण करने से गरीबी खत्म होती है, सोना चोरी का दोष दूर होता है तथा पर्याप्त स्त्री सुख प्राप्त होता है।



सातमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर शिवलिंग से छुआकर ॐ नमः शिवाय महालक्ष्मी नमः मंत्र का जप करते हुए गले या दायें हाथ में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह – उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह – मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह – अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) – अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-रशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्धि मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र -

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जलसे भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान कराये फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान कराये। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनाये और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अबस्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें -

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ

मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः ।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुरा या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः ।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः ।

सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें ।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ।

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

सप्तमुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग -

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें ।

ॐ अस्य श्री अनंत मंत्रस्य भगवान् ऋषिः, गायत्री छन्दः, अनन्तो देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः,
मम अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ भगवान् ऋषये नमः शिरसे, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, अनन्तो देवतायै नमः हृदि, क्रीं बीजाय
नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास -

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ग्लौं
अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ सौं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास -

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं आँखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें ।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रीं शिखायै वषट्, ॐ ग्लौं कवचाय हुम् । ॐ
ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सौं अस्त्राय फट् ।

ध्यान मंत्र -

सबसे पहले रुद्राक्ष के इष्ट देवी महालक्ष्मी का ध्यान करें ।

अनंत पुंडरीकाक्षं फणाशतविभूषितम् ।

विश्वक्बन्धूक-आकारं कूर्मारूढं प्रपूजयेत् ॥

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें । माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रुद्राक्ष

रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छोड़कर हटा लें। फिर रुद्राक्ष पर जल छींटें एवं रुद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रीं क्रीं ग्लौं ह्रीं सौं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं सौम्

३-ॐ नमः शिवाय

४-ॐ ह्रीं नमः

५-ॐ हः

६-ॐ हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबं धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।

श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पाँच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न

करें।

क्रोध न करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपराध न कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें।

गंदगी से दूर रहें।

रुद्राक्ष के पति निष्ठा रखें।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकवें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट -

असली रुद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रुद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना

चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

मंगल दोष (मांगलिक / कुज दोष)



मंगल दोष (मांगलिक दोष) निर्धारण करने के नियम :

लगने व्यये च पाताले यामित्रे चाऽष्टमे कुजः।
कन्या भर्तृविनाशाय वरः कन्याविनाशकृत् ॥

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुजदोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

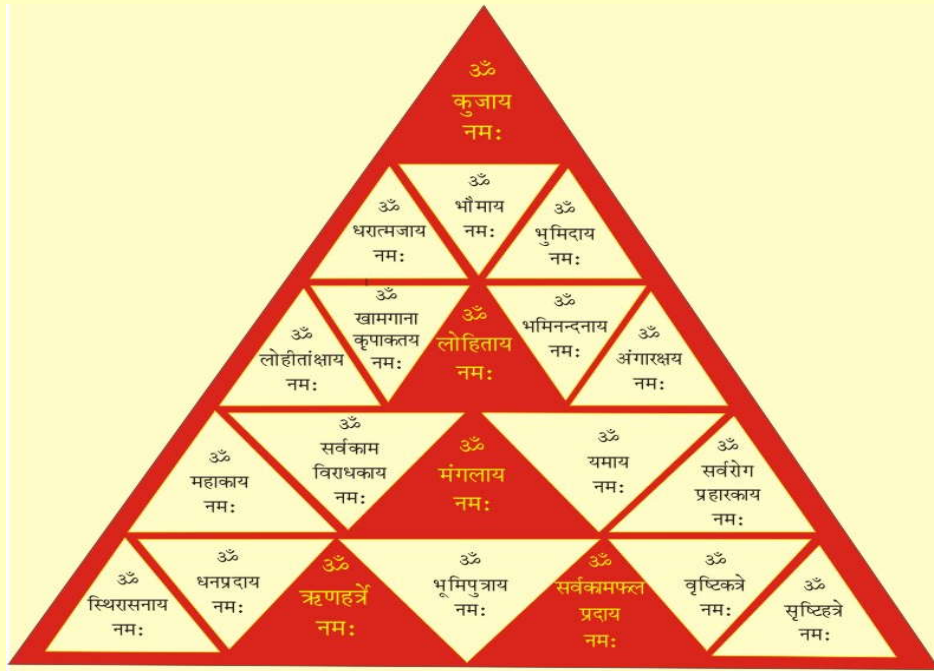
आपकी कुण्डली में मंगल दोष (मांगलिक दोष) का निर्धारण :

आपकी कुण्डली में, मंगल चन्द्र राशि से ७वीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

मंगल दोष (मांगलिक दोष) का प्रभाव:

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक-दूसरे पर दोषारोपन कर सकते हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मंगल दोष (मांगलिक/ कुज दोष) का उपाय :



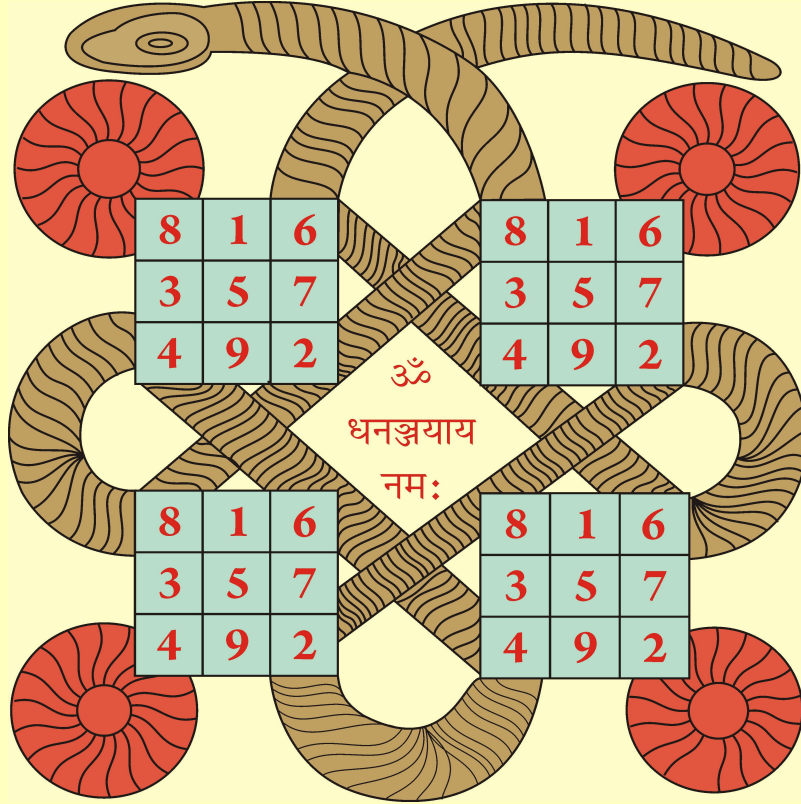
मंगल दोष को दूर करने के लिए वेदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें:

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन न करें और यदिसंभव को तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध, फलों के रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शामके समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फूल, धूप, दीपक एवंभोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूँ के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 90 ट दिनों तक रोज 29 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठकरें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें:

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हरिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ॥
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ॥
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ॥

क्या है कालसर्प योग?



जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हांलाकि सारे ग्रह केतू और राहु के अंशो के बीच में आ जायें तो भी आशिक कालसर्प योग माना जायेगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव-

- १) किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
- २) मानसिक तनाव
- ३) आत्म विश्वास में कमी
- ४) स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां
- ५) गरीबी और धन की कमी
- ६) ब्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी
- ७) उत्तेजना और बेकार की चिंताएं
- ८) मित्रों और शुभचिंतकों से मनमुटाव
- ९) मित्रों और शुभचिंतकों की तरफ से विश्वासघात
- १०) मित्रों, शुभचिंतकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त

होना

आपकी कुण्डली में आंशिक तौर पर कालसर्प योग मौजूद है। क्योंकि आपकी कुण्डली में कोई ग्रह केतू और राहुके अंशो से बाहर स्थित है। हालांकि बहुत विद्वान केतू और राहु के बीच में सारे ग्रहों के स्थित होने को कालसर्प योग नहीं मानते हैं।

आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में राहु तथा छठे भाव में केतु होने से शेषनाग नामक कालसर्प योग बनता है। ऐसे जातक के कई गुप्त शत्रु रहते हैं। मन में उद्विग्नता बनी रहती है। लड़ाई-झगड़े में हार होती है। आँख का आपरेशन करवाना पड़ता है। बदनामी सहनी पड़ती है, लेकिन अंत में या मृत्योपरान्त ख्याति भी प्राप्त होती है।

कालसर्प योग एक अशुभ योग है। कभी-कभी प्रथम नजर में जातक की कुंडली में कालसर्प योग दिखाई देता है परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उसमें कालसर्प भंग योग होता जो प्रतिकूल प्रभाव नहीं दिखाता परन्तु फिर भी समस्त कालसर्प योग से प्रभावित व्यक्तियों को पूजा पाठ व घर में कालसर्प योग शान्ति यंत्र स्थापित करना चाहिए।

कालसर्प योग शान्ति के उपाय

कालसर्प योग की शान्ति के लिए उपाय निम्न हैं।

- १-ताजी मूली का दान करें।
- २-रसोई में बैठ कर ही भोजन करें।
- ३-भाद्रपद में सोलह श्राद्ध श्रद्धापूर्वक करें।
- ४-एक नारियल समुद्र में प्रवाहित करें।
- ५-नागपंचमी पर नागों के स्वरूप चांदी के नाग की पूजा करें। पितरों का आह्वान करें। पितरो की सद्गति प्राप्त हो ऐसा इस नाग से प्रार्थना करें। फिर नदी या समुद्र में नाग समेत पूजा में प्रयुक्त समस्त सामग्री प्रवाहित कर दें।
- ६-घर के प्रवेश द्वार की चौखट पर चांदी का स्वास्तिक लगायें।
- ७-कालसर्प योग के कारण वैवाहिक जीवन में बाधा आती है तो, पत्नी से दुबारा विवाह करें।
- ८-राहु हमेशा मंत्र से वशीभूत होता है इसलिए उपासना को अधिक महत्व दें।
- ९-रात को सोते समय जौ के दाने सिरहाने पर रख दें। पौ फटते ही उन्हें पंक्षियों को खिला दें।
- १०-वर्ष में एक दो बार आयु से अधिक की संख्या में जिंदा मछलियां नदी में प्रवाहित कर दें।
- ११-भगवान गणेश का नित्य पूजन करें तथा 'ॐ गणपतये नमः' मंत्र का नित्य जाप करें।
- १२-प्रत्येक बुधवार को श्री गणेश जी की पूजा करें तथा बूंदी के लड्डुओं का भोग लगाएं। 'गणेशचतुर्थी' को गणपति पूजन अवश्य करें।
- १३-शनिवार को पीपल को स्पर्श करें तथा मीठा जल अर्पित करें।
- १४-शयन कक्ष में मोर पंख लगायें।
- १५-प्रतिदिन पक्षियों को बाजरा इत्यादि डालें।
- १६-एक नारियल के गोले में छेद करके उसमें काले तिल, जौ, बूरा, देसी घी तथा मेवा आदि डालकर जहां चींटियां हों, वहां पर दबा दें। यह प्रयोग शनिवार को करें

।

१७-एक मुट्ठी हरी मूंग राहु के मंत्र से अभिमंत्रित कर दान दें ।

१८-चांदी की सर्पाकृति की अगूंठी बुधवार को मध्यमा अंगुली में मंत्र से अभिमंत्रित करवाकर धारण करें ।

Now-17/12/2021-17:31:22



वैदिक ज्योतिष उपाय

Contact -

Now-17/12/2021-17:31:22



रत्न का सुझाव

Contact -

Now-17/12/2021-17:31:22



रुद्राक्ष का सुझाव

Contact -

Now-17/12/2021-17:31:22



अंक शास्त्र से उपाय

Contact -